रचनात्मक जीवित बाइबल अध्ययन

तृप्ति की तलाश

यूहन्ना रचित सुसमाचार से अध्ययन

लेखिका
डायना शिक

अनुवादिका
शान्ति रावटे

TRIPTI KI TALASH

Hindi Version of:

QUEST FOR FULFILLMENT

STUDIES FROM THE BOOK OF JOHN

By *Diana Schick*

© Copyright 1995
by Creative Living International of the
United States of America

Hindi Translation: *Shanti Rawate*

Cover Photograph by *Adit Rawate*

PUBLISHED BY :
Peace On Earth to Mankind Trust,
New Delhi, India
First Edition - October 2010
Second Edition - September 2011 [Re-edited]
All rights reserved

COPIES ARE AVAILABLE FROM:

Rev. S. Rawate
Post Box No. 7530
Vasant Kunj
New Delhi - 70
India

NOT FOR SALE
For Private Circulation only

तृप्ति की तलाश

यूहन्ना रचित सुसमाचार से अध्ययन

भाग १: सार्वजनिक सेवकाई

	पाठ	बुनियाद पर बनाना	
1.	अंधकारमय जगत में ज्योति	ज्योति की आवश्यकता	5
2.	आरम्भिक शिष्य	अपनी अद्वितीयता को समझना	13
3.	एक विवाह समारोह तथा मंदिर में	परिवर्तन, जिसकी खोज हम करते हैं	23
4.	नीकुदेमुस तथा नया जन्म	भीतर से बाहर तक स्वतंत्र	30
5.	यीशु सामरिया में	पूर्णत: जाने गए और पूर्णत: प्रिय हुए	39
6.	यरूशलेम की यात्रा	घमण्ड से बचाव करना	47
7.	यीशु भूखे लोगों के लिए प्रबन्ध करता है	शरीर एवं आत्मा के लिए प्रबन्ध	56
8.	जीवन की रोटी यीशु	हृदय की भूख को तृप्त करना	62
9.	झोपड़ियों के पर्व के समय	सिद्ध समय को समझना	70
10.	यीशु अपनी शिक्षा की पुष्टि करता है	दया का महत्त्व	79
11.	और अधिक सार्वजनिक वाद-विवाद	सत्य के पक्ष में खड़े रहना - 1	87
12.	जन्म से अन्धे को चंगा करना	सत्य के पक्ष में खड़े रहना - 2	96
13.	अच्छा चरवाहा यीशु	असुरक्षा पर विजय पाना	105
14.	लाजर मृतकों में से जिलाया गया	अंतिम तृप्ति	114
15.	सार्वजनिक सेवकाई का समापन	सही केन्द्र	123

भाग २: असार्वजनिक सेवकाई, शिष्यों के लिए

16.	अंतिम भोज का आरंभ	उदारतापूर्ण जीवन के विषय में	132
17.	यीशु अपने शिष्यों को शान्ति देता है	शान्ति जो समझ से परे है	142
18.	शिष्यत्व से संबंधित और शिक्षा	जीने के लिए सामर्थ्य	151
19.	यीशु की विदाई	प्रार्थना से तृप्ति	160
20.	यीशु अपनों के लिए प्रार्थना करता है	प्रेम के बन्धन	171
21.	पकड़ा जाना, मुक़द्दमा, और क्रूसीकरण	बुनियाद पर बनाना भाग नहीं है	180
22.	पुनरुत्थान	निश्चित आश्वासन	191
23.	"मेरी भेड़ों को चरा"	निरंतर की तृप्ति	202

प्रमुख टिप्पणियों की सूची

सहायक ग्रंथ सूची

यीशु ने कहा:
मैं
इसलिए आया
कि
वे जीवन पाएं,
और
बहुतायत से पाएं ।।

(यूहन्ना 10:10)

भाग १- सार्वजनिक सेवकाई,

पाठ १ अंधकारमय जगत में ज्योति

प्रस्तावना

यूहन्ना 1:1-18

यूहन्ना रचित सुसमाचार[1] का लेखक प्रेरित यूहन्ना[2] है, जो यीशु मसीह के आरम्भिक बारह शिष्यों में से एक था। इतिहासकार उसके लेखन का समय ईसवी सन् 85 बताते हैं। इसके अनुसार, जब यूहन्ना ने अपने इस सुसमाचार को लिखा तब वह, यीशु मसीह में विश्वास के कुछ 60 वर्षों के अनुभव के साथ, लगभग 85 वर्ष का रहा होगा। यूहन्ना ने व्यक्तिगत रीति से, अपनी आयु के तीसरे दशक में, यीशु के एक निकट शिष्य के रूप में रहते हुए मसीह को अनगिनत आश्चर्यकर्म करते देखा था (यूहन्ना 20:30, 21:25), जैसे कि, पांच हजार को पांच रोटी और दो मछली से भोजन कराना, पानी पर चलना, आंधी को शान्त करना, कोढ़ियों, अपंगों तथा दुष्टात्मा से पीड़ित लोगों को चंगा करना था। उसने यीशु को अंधों को दृष्टि देते और लाजर तथा विधवा के बेटे को मृत्यु में से जिलाते देखा था। यूहन्ना ने स्वर्ग को खुला हुआ और एलिय्याह और मूसा को महिमान्वित मसीह से बाते करते देखा था, और परमेश्वर की आवाज को घोषणा करते सुना था, "यह मेरा प्रिय पुत्र है; उसकी सुनो" (मरकुस 9:2-8)।

यूहन्ना वहां उपस्थित था जब यीशु गतसमनी के बाग में वेदना में व्याकुल हुआ, क्रूस पर चढ़ाया गया, और तब भी जब सब से अविश्वसनीय बात हुई थी अर्थात् यीशु अपने पुनरुत्थान के बाद 40 दिनों तक उसके तथा बहुतों के साथ चलता-फिरता और बातें करता था।

परन्तु यह तो मात्र आरंभ ही था। उसके पश्चात्, यूहन्ना ने पवित्र आत्मा को आश्चर्यजनक रीति से विश्वासियों में वास करने आते हुए और विरोध के होते हुए भी मसीह के गवाह होने की सामर्थ्य देते हुए देखा था (प्रेरितों के काम 2)। जैसे जैसे कलीसिया बढ़ती गई, और मसीह का सुसमाचार फैलाती गई, उसने देखा कि

परमेश्वर आरम्भिक विश्वासियों को आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ्य देता था। यूहन्ना ने, कलीसिया को निर्दयता से सतानेवाले तरसुस निवासी शाऊल (पौलुस) के जीवन को अविश्वसनीय रीति से परिवर्तित होते देखा, जिसे प्रभु ने, सुसमाचार को सम्पूर्ण रोमी साम्राज्य में फैलाने हेतु उपयोग में लाया था। अन्तिम परन्तु महत्त्वपूर्ण बात, यूहन्ना ने सताव तथा अनगिनत विश्वासियों और उसे छोड़ सारे प्रेरितों की शहादत का अनुभव किया था। अब वह आयु में परिपक्व, और पहले से अधिक विश्वास से भरपूर था।

परम्परा के अनुसार, यूहन्ना ने अपना सुसमाचार मसीही मित्रों के आग्रह करने पर लिखा, और कलीसिया के तीन दिनों तक उपवास सहित प्रार्थना करने[2] के बाद ही वह उसके लिए सहमत हुआ था। जो सब कुछ उसने देखा और सुना था उसके बाद, उस वयस्क प्रेरित के पास कहने के लिए क्या था? यूहन्ना ने अपनी पुस्तक का आरंभ एक प्रस्तावना से किया, जिसने सम्पूर्ण पुस्तक की विषय-वस्तु और उसके निश्चित एवं अपेक्षित दृढ़-विश्वास का सारांश प्रस्तुत किया: परमेश्वर मनुष्य बना, और स्वयं को नासरत के यीशु में प्रगट किया। यूहन्ना ने घोषणा की, कि यरदन के तट से लेकर पुनरुत्थान के बाद के दर्शनों तक, यीशु मसीह, परमेश्वर का अनन्तकालिक वचन, देहधारी हुआ, ताकि स्त्री और पुरुष उसमें विश्वास कर सकें और जीवन पाएं।

आइए हम यूहन्ना के प्रथम गंभीर कथनों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करें।

पढ़िए यूहन्ना 1:1-18

1. **क.** अपने सुसमाचार का आरंभ यीशु की वंशावली से न करते हुए, यूहन्ना ने उत्पत्ति 1 में लिखित सृष्टि की रचना के वृत्तांत का संदर्भ दिया। ऐसे आरंभ से, यूहन्ना ने क्या बताया (1:1-3)?

   ख. इस बात को कुलुस्सियों के लेखक ने किस प्रकार दोहराया (कुलुस्सियों 1:16-17)?

2. यूहन्ना ने यीशु का वर्णन करने के लिए कौनसे सकारात्मक शब्द-चित्रण प्रस्तुत किए हैं (1:4, 9)?

3. **क.** इस परिच्छेद में यूहन्ना ने किस दु:खद बात की जानकारी दी (1:10-11)?

   ख. यूहन्ना ने किस अद्‌भुत संभावना की घोषणा की (1:12-13)?

4. इस प्रेरित ने मसीह के विषय में कौनसी व्यक्तिगत गवाही दी (1:14)?

5. यूहन्ना ने यीशु का वर्णन परमेश्वर के देहधारी वचन के रूप में किया (1:1-2, 14)। इस शीर्षक के साथ, उसने मसीह को सारी सृष्टि की रचना का *कारण* एवं सामर्थ्य के साथ-साथ मानवजाति के समक्ष परमेश्वर की अभिव्यक्ति भी बताया। इन विचारों को इब्रानियों के लेखक के द्वारा कैसे दोहराया गया है (इब्रा1:1-3)?

संदर्भः टिप्पणी 3, *वचन,* पृष्ठ 12

6. इस्राएल के समकालीन भविष्यद्वक्ता, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने भी, यीशु मसीह के ईश्वरत्व की घोषणा की थी। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की भूमिका क्या थी (1:6 -8, 15)?

संदर्भः *यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला,* टिप्पणी 4, पृष्ठ 12

7. प्रेरित यूहन्ना जब यीशु का शिष्य बना तब संभवतः 25 वर्ष का था, इस अनुमान से, जब उसने अपना सुसमाचार लिखा तब उसकी आयु 80 से 90 के बीच रही होगी। अपने शिष्यत्व के 60 वर्षों के आधार पर, मसीह को ग्रहण करनेवाले का अनुभव क्या होगा इस विषय में इस प्रेरित ने क्या गवाही दी (1:16-18)?

बुनियाद पर बनाना

ज्योति की आवश्यकता

यूहन्ना ने सुसमाचार का आरंभ, ज्योति की आवश्यकता बताते हुए किया। छोटे बालक, तथा वयस्क भी, स्वभावतः अंधकार से डरते हैं। यह संभावित खतरे का स्थान होता है, जो परिस्थिति नियंत्रण से बाहर होने का गहरा आभास देता है।

हम सब के लिए जीवन में आत्मिक एवं भावनात्मक अंधकार हो सकता है। हम वे लोग हैं जो विश्वव्यापक स्तर पर अपने जीवन में *ज्योति* से लाभ उठाते हैं। हमें न मात्र भौतिक

ज्योति की आवश्यकता होती है कि हमें मार्गदर्शन, समझ और सुरक्षा दे, परन्तु हमें आत्मिक ज्योति की भी आवश्यकता होती है ताकि इन आवश्यकताओं की पूर्ति हो।

बाइबल के अनुसार, "ज्योति" शब्द हमेशा भलाई और सत्य का पर्यायवाची है, जबकि "अंधकार" बुराई और झूठ का प्रतीक है। भौतिक क्षेत्र में ज्योति अंधकार के विपरीत है, परन्तु अंधकार सामर्थ्य में ज्योति के बराबर नहीं है। बाइबल की अद्‌भुत सच्चाई यह है कि आत्मिक ज्योति, या भलाई और सत्य, अंततः अंधकार द्वारा पराजित नहीं की जा सकती है (यूहन्ना 1:5)। इस प्रकार परमेश्वर की ज्योति, जिसकी चर्चा यूहन्ना करता है, न मात्र हमारी समझ, मार्गदर्शन एवं सुरक्षा की आवश्यकताओं को पूर्ण करने की, परन्तु हमें बुराई पर विजयी होने की सामर्थ्य देने तथा हमारे जीवनों को सत्य से परिपूर्ण करने की भी प्रतिज्ञा करती है।

इसमें तृप्ति की कुछ महत्त्वपूर्ण कुंजियाँ हैं। अपने अध्ययन का आरंभ करते हुए, आइए हम देखें कि हमारी ज्योति की आवश्यकता के विषय में बाइबल क्या कहती है।

1. **क.** भौतिक क्षेत्र में ज्योति और अंधकार के बीच क्या विषमताएँ हैं?

   ख. ये विषमताएँ किस प्रकार आत्मिक एवं भावनात्मक अंधकार से संबंधित हैं?

2. जीवन की कौन सी परिस्थितियाँ हमें महसूस कराती हैं कि हम अंधकार में हैं?

3. **क.** जो आत्मिक एवं भावनात्मक ज्योति परमेश्वर देता है उसके विषय में निम्नलिखित पद क्या बताते हैं?
   भजन संहिता 27:1

   यशायाह 42:16

   यशायाह 60:20

   ख. परमेश्वर की ज्योति प्राप्त करने के लिए हमें क्या करना है?
   मत्ती 7:7-8

   नीतिवचन 3:5-6

4. परमेश्वर की ज्योति से रहित जीवन से उत्पन्न होनेवाले अंधकार का वर्णन बाइबल कैसे करती है?
व्यवस्थाविवरण 28:29

नीतिवचन 4:19

5. आत्मिक अंधकार के कौन से कारण इन पदों में बताए गए हैं?
रोमियों 1:21-22

इफिसियों 4:18

6. जैसे कि यूहन्ना अपनी प्रस्तावना में बताता है, जो ज्योति हमें आवश्यक है उसके स्त्रोत के विषय में प्रेरित पौलुस क्या घोषणा करता है?
2 कुरिन्थियों 4:6

7. **क.** भविष्यद्वक्ताओं ने यीशु मसीह को "इम्मानुएल" संबोधित किया है, जिसका अर्थ "परमेश्वर हमारे साथ" है (मत्ती 1:23)। अपने पुत्र के पृथ्वी पर आने के द्वारा परमेश्वर कौन सी आत्मिक ज्योति दे सका था?

ख. निम्नलिखित लेखांश हमें परमेश्वर के विषय में क्या बताते हैं जिससे हमारी यह समझ बढ़ती है कि यीशु मसीह इम्मानुएल, जगत की ज्योति है।
2 शमूएल 22:31

फिलिप्पियों 2:5-8

इब्रानियों 4:14-15

8. जो यीशु में विश्वास करता है उससे यीशु ने क्या प्रतिज्ञा की है?
यूहन्ना 8:12

सारांश

9. **क.** आपने कब या कैसे अपने जीवन में आत्मिक एवं/या भावनात्मक अंधकार का अनुभव किया है?

ख. परमेश्वर के प्रकाश के बिना जीवन क्या होता है इस विषय में आपने क्या जाना, समझा है?

10. **क.** क्या आपके जीवन में ऐसे क्षेत्र विद्यमान हैं जिनमें आप को उस समझ, मार्गदर्शन या सुरक्षा की आवश्यकता है जिसे देने की प्रतिज्ञा परमेश्वर करता है, यदि हम उसकी खोज करते हैं?

ख. एक क्षण ठहरकर अपनी आवश्यकता को, और उसे पूर्ण करने में परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को समझने के लिए समय दीजिए।

11. यूहन्ना घोषणा करता है कि यीशु को ग्रहण करना हमें अंधकार से बाहर ज्योति में लाता है। क्या आपने कभी यीशु मसीह पर विश्वास किया है कि वह आपके लिए ऐसा ही करे? यदि नहीं, और यदि आप ऐसा करना चाहेंगे, तो उसके लिए निम्नलिखित प्रार्थना का सुझाव दिया जाता है:

हे स्वर्गीय पिता, मुझे उस ज्योति की आवश्यकता है जो तेरे पुत्र यीशु मसीह को ग्रहण करने के द्वारा मिलती है। मैं अभी, उसे अपने जीवन में आने का और तेरे सत्य के प्रति अपनी समझ को प्रकाशित करने का निमंत्रण देता/देती हूं। आमीन।।

पाठ १ टिप्पणियाँ

1. *सुसमाचार* ग्रीक शब्द *euaggelion* का शब्दशः अनुवाद है और उसका अर्थ "शुभ-समाचार" होता है। नया नियम में यह शब्द परमेश्वर की उस योजना के प्रकटीकरण के लिए प्रयोग किया गया है, जो मनुष्य के पापों की क्षमा और

उसके चरित्र का परिवर्तन करते हुए स्वयं परमेश्वर से मेल करा लेने की है। सुसमाचार परमेश्वर के उस उद्धार के वरदान का वृत्तांत है जो मसीह के जीवन और कार्य के द्वारा मिलता है, और जिसका प्रचार करने की आज्ञा कलीसिया को दी गई है (मरकुस 16:15; प्रेरितों के काम 20:24; इफिसियों 1:13)। मसीह के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के प्रभाव ने उसके शिष्यों को उसका संदेश जनसाधारण के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए बाध्य किया। *जॉन्ड़रवैन पिक्टोरियल बाइबल डिक्शनरी*, पृष्ठ 318

2. *यूहन्ना की लेखक के रूप में पहचान।* यूहन्ना, जो स्वयं का उल्लेख मात्र "चेलों में से एक, जिससे यीशु प्रेम रखता था" कहकर करता है, (तुलना कीजिए - 13:23; 19:26; 20:2; 21:7), बाइबल के अन्य अनेक लेखकों के समान अपने नाम का उल्लेख इस पुस्तक में नहीं करता। इस तथ्य को स्पष्ट करना कठिन हो गया होता यदि यूहन्ना इसका लेखक न होता; किसी अन्य लेखक ने इस महत्त्वपूर्ण शिष्य का उल्लेख उसके नाम से किया होता। लेखक की यहूदी जीवन की पूरी-पूरी समझ, उस क्षेत्र की भौगोलिक जानकारी, तथा प्रत्यक्षदर्शी वृत्तांत इस बात की पुष्टि करते हैं कि यूहन्ना ही इस का लेखक है। परम्परा तथा प्रारंभिक लेखक, जैसे कि, आयरेनियस और टरटुलियन भी, इस प्रेरित को ही इस पुस्तक का लेखक मानते हैं। यूहन्ना के पिता का नाम जब्दी था (21:2), उसकी माता सलोमी थी जो यीशु की निकट अनुयायी भी थी (तुलना कीजिए- मत्ती 27:56; मरकुस 15:40; 16:1)। कुछ लोग विश्वास करते हैं कि सलोमी यीशु की माता मरियम की बहन थी (देखिए: मरकुस 15:40; यूहन्ना 19:25)। संभवत: यीशु और यूहन्ना के मध्य की घनिष्ठता, मौसेरे भाई होने के कारण, बचपन के वर्षों में ही उत्पन्न हुई थी। यूहन्ना का बड़ा भाई प्रेरित याकूब था, जो बाद में प्रेरितों में पहला शहीद हुआ (प्रेरितों 12:2)। वे व्यवसाय से गलील की झील के मछुआरे थे। मसीह की मृत्यु के बाद, यूहन्ना यरूशलेम की कलीसिया में अगुवा बना (गलातियों 2:9), और तत्पश्चात् इफिसुस के निकट रहते हुए, जहां उसने अपने जीवन के अन्तिम वर्ष बिताए, उसने इस सुसमाचार को लिखा। यूहन्ना ने नया नियम की कुल मिलाकर पांच पुस्तकें लिखीं: तीन पत्रियां (पहिला, दूसरा और तीसरा यूहन्ना), यूहन्ना रचित सुसमाचार और (पतमुस नामक टापू में देश-निकाला की सजा काटते समय) प्रकाशितवाक्य।

परम्परा के अनुसार कहा जाता है कि यूहन्ना ने अपना सुसमाचार मसीही मित्रों के आग्रह पर लिखा, और कलीसिया के तीन दिनों तक उपवास सहित प्रार्थना करने के बाद ही वह उसके लिए सहमत हुआ था। *जॉन्ड़रवैन पिक्टोरियल बाइबल डिक्शनरी,* पृष्ठ 438

3. *वचन* । प्रस्तावना में "वचन" शब्द यीशु को दिया गया एक विशिष्ट नाम है। वह ग्रीक शब्द *logos* (*लोगोस*) का सर्वोत्तम संभावित अनुवाद है, जो "कारण" शब्द के द्वारा सर्वोत्तम रीति से परिभाषित किया गया है। यूनानियों के लिये, *लोगोस* विश्व में विद्यमान व्यवस्था के पीछे के स्रोत एवं सामर्थ्य का प्रतिनिधित्व करता था। यहूदियों के लिए *लोगोस* का संकेत परमेश्वर के उस सामर्थी शब्द की ओर था जिसके द्वारा सृष्टि अस्तित्व में आई।

4. *यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला* इस्राएल में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व था। (पाठ 2 में टीका देखिए)। यूहन्ना देखने में कठोर था, वह यरदन पार के जंगल में रहता था। उसने मन-फिराव और बपतिस्मा का, जो शीघ्र आनेवाले मसीह के लिए तैयारी के रूप में पापों को धोने का प्रतीक था, प्रचार किया। यहूदियों और अन्यजातियों में से भी जिन्होंने यूहन्ना के संदेश को स्वीकार किया, उन्होंने पानी का बपतिस्मा लिया। यूहन्ना की शिक्षा एवं बपतिस्मा ने उन यहूदी धार्मिक अगुवों को क्रोधित किया जो यह समझते थे कि वे, मात्र इसलिए कि वे अब्राहम की संतान और परमेश्वर के चुने हुए लोग थे, स्वयं मसीह से मिलने के लिए तैयार थे। इसके पहले, मात्र अन्यजातियों में से धर्म बदलकर यहूदी विश्वास में आनेवाले लोगों ने ही पानी का बपतिस्मा लिया था। तौभी जनसाधारण की भीड़ यरदन पर उमड़ पड़ी थी कि यूहन्ना का संदेश सुने और उससे बपतिस्मा ले।

   सुसमाचार इस बात पर जोर देते हैं कि यूहन्ना का एकमात्र मिशन, परमेश्वर द्वारा नियुक्त संदेशवाहक होना था, कि मसीह के आगमन की घोषणा करे। जब यीशु ने बपतिस्मा लिया, तब यूहन्ना ने यीशु को पहचाना और मसीह के रूप में उसका परिचय दिया। कुछ समय बाद, इस भविष्यद्वक्ता को हेरोदेस द्वारा बंदीगृह में डाला गया और मार दिया गया।

--0--

पाठ २ आरम्भिक शिष्य

यूहन्ना 1:19-51

जबकि बाइबल का वृत्तांत इस तथ्य को व्यक्त नहीं करता तौभी यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला इस्राएल में एक अत्यंत प्रभावशाली व्यक्तित्व था, और उसने अपने प्रचार के द्वारा सारे पलिस्तीन में अत्यधिक उत्सुकता को उत्तेजित किया था। यहूदी इतिहासकार जोसेफस ने यीशु से अधिक यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के विषय में लिखा है।

यूहन्ना का इतना अधिक प्रभावशाली होने का कारण यह था कि उसके भविष्यद्वक्ता होने में व्यापक रूप से विश्वास किया जाता था। इस्राएल के इतिहास में अनेक *भविष्यद्वक्ता* हुए थे जिनके द्वारा लोगों ने साक्षात् परमेश्वर के वचनों को सुना था। यहूदी लोग अपने भविष्यद्वक्ताओं पर बहुत घमण्ड करते थे, परन्तु मलाकी के बाद के चार सौ वर्षों में इस्राएल में कोई भविष्यद्वक्ता नहीं हुआ था। परमेश्वर मौन बना रहा। तब यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला आया, जो दिखने में कठोर तथा टिड्डियां और वन मधु खाकर जंगल में रहनेवाला था। उसने बिना समझौता किए, शीघ्र ही आनेवाले प्रतिज्ञात मसीह के लिए तैयार होने हेतु, पाप से मन फिराने का प्रचार किया।

यहूदियों ने एक ऐसे मसीह[1] की प्रतीक्षा की थी, जो उन्हें रोमी अत्याचार से छुटकारा देनेवाला, और उन्हें *एकमात्र* विश्वशक्ति बनानेवाला होगा। परन्तु यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने घोषणा की कि मसीह शीघ्र ही हर एक व्यक्ति के हृदय को जांचने के लिए आएगा और यह भी कि मात्र अब्राहम के वंश से होना किसी को परमेश्वर के सामने धर्मी बनाने के लिए पर्याप्त नहीं था। यूहन्ना ने प्रचार किया कि मसीह से मिलने की तैयारी करने के लिए यहूदियों और अन्यजातियों दोनों को ही अपने पापों से मन फिराना और बपतिस्मा लेना चाहिए। बहुत अधिक संख्या में लोग यरदन नदी पर यूहन्ना से संदेश सुनने और उससे बपतिस्मा लेने एकत्रित हुए।

तथापि, उसकी मन-फिराव की शिक्षा एवं बपतिस्मा के कारण बहुतेरे यहूदी अगुवों ने उस भविष्यद्वक्ता का इनकार किया। वे इस बात से नाराज़ थे कि यूहन्ना परमेश्वर के लोगों को अन्यजातियों के साथ ही बपतिस्मा दे रहा था (इसके पहले, यहूदियों ने अन्यजातियों में से धर्म बदलकर यहूदी विश्वास में आनेवाले लोगों को ही बपतिस्मा दिया था।)। यहूदी यह भी विश्वास करते थे कि मात्र अब्राहम के शारीरिक वंशज होना किसी को परमेश्वर के सामने धर्मी बनाता था। धार्मिक अगुवे इस बात से

अपमानित हुए थे कि मसीह के आगमन के लिए तैयार होने हेतु यूहन्ना उन्हें भी पापों से मन फिराने और बपतिस्मा लेने का निर्देश दे रहा था। परन्तु यूहन्ना की प्रसिद्धि ने, और जनसाधारण के इस मत ने कि वह एक भविष्यद्वक्ता था, उसके आलोचकों को चुप रहने के लिए बाध्य कर दिया था। इसके बदले में, उन्होंने उसकी सेवकाई को अज्ञात रूप से क्षति पहुँचाने हेतु छलपूर्ण योजनाओं का षड्यन्त्र रचना शुरु कर दिया।

अत:, जब यूहन्ना लोगों को यरदन में बपतिस्मा देने में व्यस्त था, यरूशलेम के यहूदी अगुवों ने एक प्रतिनिधिमंडल को भेजा कि उसकी सेवकाई के अधिकार के विषय में खुली रीति से प्रश्न करें (यूहन्ना 1:19-28)। उन्होंने उससे पूछा कि क्या वह पुराने नियम का भविष्यद्वक्ता एलिय्याह था जिसने कभी मृत्यु को नही देखा था (मलाकी 4:5), या वह भविष्यद्वक्ता जिसकी भविष्यवाणी मूसा ने व्यवस्थाविवरण 18:15 में की थी? यदि ये नहीं, तो क्या वह मसीह होने का दावा करेगा? वास्तव में उनका प्रश्न था: "तुझे मन-फिराव का प्रचार करने और यहूदियों को बपतिस्मा देने का अधिकार कहां से मिला है?"

यूहन्ना ने, इस बात का इनकार करते हुए कि वह पुराना नियम के उन भविष्यद्वक्ताओं में से नहीं था जिनका आना अभी बाकी था, अपने विरोधियों का सामना बुद्धिमानी से किया। इसके बदले में उसने यशायाह भविष्यद्वक्ता के शब्दों में घोषणा की कि उसे परमेश्वर ने भेजा था ताकि "प्रभु का मार्ग सीधा" करने की तैयारी करे (यशायाह 40:3)। धार्मिक अगुवे अपना ध्यान जितना अधिक यूहन्ना पर केंद्रित करने का प्रयास करते, वह निरंतर उनका ध्यान आनेवाले मसीह की ओर केंद्रित करता था।

यह आमना-सामना होने के एक दिन बाद ही, यीशु यरदन में यूहन्ना से बपतिस्मा लेने के लिए आया। जबकि यूहन्ना, यीशु का मौसेरा भाई होने के नाते संभवत: उसे पहले से ही जानता था, समय के इस क्षण में उसने यीशु को मसीह के रूप में पहचाना (देखिए- लूका 1:13-17, 30-31, 36)। परमेश्वर ने यूहन्ना पर पहले ही प्रगट कर दिया था कि वह मसीह को कैसे पहचानेगा। कहा गया था कि जब मसीह आएगा, तब यूहन्ना पवित्र आत्मा को आकाश से उतरते और उस पर ठहरते देखेगा। अत: जब यूहन्ना ने यीशु को बपतिस्मा दिया तब उसने पवित्र आत्मा को कबूतर के रूप में आकाश से उतरते और यीशु पर ठहरते स्पष्ट देखा। यूहन्ना ने तुरन्त घोषणा की कि महत्त्व एवं सेवकाई के संदर्भ में यीशु उससे बढ़कर था, और उसने अपने चेलों को उसके पीछे जाने के लिए प्रोत्साहित किया। बपतिस्मा देनेवाले ने निर्भयता से यीशु का परिचय यह कहकर दिया कि वह "परमेश्वर का मेमना[2] है जो जगत का पाप उठा ले जाता है" (1:29), "वही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देनेवाला है" (1:33)[3], और "यही परमेश्वर का पुत्र है" (1:34)।

अत:, यीशु ने अपनी सार्वजनिक सेवकाई को, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की सम्पूर्ण सेवकाई की पृष्ठभूमि में, तथा उसके *प्रभावशाली* समर्थन के साथ आरंभ किया। वहां बैतनिय्याह-यरदन-पार के क्षेत्र में, जहां यूहन्ना बपतिस्मा दिया करता था, यीशु ने अपने प्रथम शिष्यों को एकत्रित करना आरंभ किया। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने, जिसने इन सब को बपतिस्मा दिया था, यूहन्ना और अन्द्रियास को यीशु के पास भेजा। अन्द्रियास ने अपने भाई शमौन को लाया जिसका नाम यीशु ने पतरस रखा। यीशु ने फिलिप्पुस को बुलाया जिसने बाद में नतनएल को लाया। नतनएल तब तक शंकित था, जब तक यीशु ने उस जानकारी को प्रगट नहीं किया जो नतनएल के चरित्र एवं जीवन के विषय में मात्र परमेश्वर ही जान सकता था। नतनएल आश्चर्यचकित था, परन्तु यीशु ने उन सब से प्रतिज्ञा की कि "मनुष्य के पुत्र"[4] के साथ रहते समय वे परमेश्वर के और भी अधिक आश्चर्यजनक प्रकाशनों को देखेंगे।

पढ़िए यूहन्ना 1:19-28

1. जब बैतनिय्याह-यरदन-पार के क्षेत्र में यहूदी अगुवे यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से प्रश्न करने पहुंचे, तब उसने स्वयं के विषय में क्या दावा किया (1:19-23)?

   संदर्भ: *मसीह*, टिप्पणी 1, पृष्ठ 21

2. जब फरीसियों के द्वारा पुन: प्रश्न किया गया, तब उसने अपना ध्यान किसकी ओर किया (1:26-27)?

पढ़िए यूहन्ना 1:29-34

3. **क.** यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला यीशु का सर्वप्रथम शिष्य था। यीशु को बपतिस्मा देने के बाद (देखिए: मत्ती 3:13-17) यूहन्ना ने लोगों को यीशु का क्या परिचय दिया (1:29-31)?

   संदर्भ: टिप्पणी 2, *परमेश्वर का मेमना*, पृष्ठ 21

ख. परमेश्वर ने यूहन्ना पर कैसे प्रगट किया कि यीशु ही मसीह है (1:32-33; मत्ती 3:13-17 भी देखिए)?

संदर्भ: टिप्पणी 3, *पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देना*, पृष्ठ 21

ग. जब यूहन्ना ने यीशु का परिचय देने का काम पूरा किया, तब उसकी घोषणा क्या थी (1:34)?

पढ़िए यूहन्ना 1:35-42

4. **क.** अन्द्रियास को यीशु से भेंट के दौरान किस बात का विश्वास हो गया (1:35-41)?

ख. अन्द्रियास के नये विश्वास एवं उत्तेजना ने उसे क्या करने हेतु प्रोत्साहित किया (1:42)?

5. यीशु ने शमौन का स्वागत कैसे किया (1:42)?

टिप्पणी: *केफा* (अरेमिक) और *पतरस* (ग्रीक) दोनों का अर्थ 'चट्टान' है। "सुसमाचारों में, पतरस निश्चय ही एक चट्टान था, वह आवेशपूर्ण एवं अस्थिर था। प्रेरितों के काम में, वह प्रारंभिक कलीसिया का एक खंभा था। यीशु ने उसका नाम, वह जो था उसके लिए नहीं परन्तु जो वह परमेश्वर के अनुग्रह से बननेवाला था उसके लिए दिया था।" द *एनआइव्ही स्टडी बाइबल*, पृष्ठ 1595

पढ़िए यूहन्ना 1:43-51

6. फिलिप्पुस का बुलाया जाना कैसे भिन्न था (1:43)?

7. **क.** जब फिलिप्पुस ने नतनएल को यीशु के पास लाया तब यीशु ने नतनएल

के प्रश्नों को किस प्रकार निरस्त किया (1:44-49)?

टिप्पणी: वचन 47 में, यीशु, जो नतनएल के हृदय को देख सका था, यह नहीं कहता कि वह सिद्ध था, परन्तु यह कि वह अपने विश्वास में ईमानदार और सच्चा था। नतनएल स्पष्ट रूप से जानता था कि यीशु भौतिक रूप से उस सीमा में नहीं था कि उसे अंजीर के पेड़ के तले देखता (1:48)। मसीह के वक्तव्य ने उसमें परमेश्वर की सर्वज्ञानिता तथा सर्वव्यापिता को प्रमाणित किया, और नतनएल की अगुवाई की कि वह निडरता से यीशु को परमेश्वर का पुत्र घोषित कर सके। (1:49)।

ख. यीशु ने क्या प्रतिज्ञा की (1:50-51)?

संदर्भ: टिप्पणी 5, *स्वर्ग को खुला हुआ,* और टिप्पणी 4, *मनुष्य का पुत्र,* पृष्ठ 22

बुनियाद पर बनाना
अपनी अद्वितीयता को समझना

जबकि शिष्यों का जीवन निश्चय ही आसान नहीं था, इसमें संदेह नहीं है कि वे अपने विश्वास के कारण तृप्त एवं अर्थपूर्ण थे। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला, प्रेरित यूहन्ना, अन्द्रियास, फिलिप्पुस, नतनएल और पतरस में से हर एक जन यीशु के लिए एक विशिष्ट व्यक्ति था। उसके पास प्रत्येक के लिए विशेष उद्देश्य थे, और वह उन में से प्रत्येक को एक अद्वितीय व्यक्ति मानकर उनसे व्यवहार करता था।

एक भागते हुए संसार में, हम सहज ही स्वयं को भीड़ में खोया हुआ पाते हैं, जैसे कि अनगिनत लोगों में हम एक संख्या मात्र हैं। मीडिया (अखबार एवं दूरदर्शन) हमारे सामने ऐसे लोगों का प्रदर्शन करता है जो असामान्य रूप से प्रतिभाशाली, धनी, सुंदर, बुद्धिमान या कुछ "हटकर" हैं। इसका पूर्वनिर्धारित परिणाम यही होता है कि हम स्वयं को साधारण और महत्त्वहीन महसूस करते हैं।

परन्तु बाइबल बताती है, और यीशु ने अपने प्रत्येक शिष्य के साथ के व्यवहार में

प्रदर्शित किया, कि हम परमेश्वर के लिए अद्वितीय रीति से महत्त्वपूर्ण हैं। उसने हमारी रचना की है, और हमारे विकसित-होने-योग्य गुणों को वह हम से अधिक जानता है। वह जैसे पतरस के वैसे ही हमारे व्यक्तिगत गुणों को जानता है, और यह भी कि वह उन गुणों को क्या बना सकता है। वह हमारी अयोग्यताओं पर ध्यान नहीं देता, बल्कि उन्हें आपके और मेरे जीवन के लिए विशेष योजना के सिद्ध समीकरण के साधन बनाता है . . . यदि हम उसे अपने जीवनों में काम करने देंगे।

जबकि हम अपने *तृप्ति की तलाश* के अध्ययन को आगे बढ़ाते हैं, आइए हम मूल्य-अर्थात् यीशु के लिए हमारी अद्वितीयता-के गहरे तथा स्थायी अनुभव को निश्चित करने के लिए बाइबल-आधारित बुनियाद को देखें।

1. हमारे समाज में वह क्या है जो निम्न-आत्मसम्मान को बढ़ावा देता है? वे कौनसे झूठे मूल्य हैं जिनके द्वारा लोग स्वयं का महत्त्व निर्धारित करते हैं?

2. निम्न-आत्मसम्मान का प्रभाव क्या हो सकता है:
   - परमेश्वर के साथ के हमारे संबंध पर?

   - अन्य लोगों के साथ के हमारे संबंध पर?

   - हमारे प्रतिदिन के कामों पर?

3. यीशु ने अपने शिष्यों में से प्रत्येक के प्रति - जिनकी सृष्टि उसने विशेष उद्देश्यों के लिए की थी - हर एक को विशिष्ट व्यक्ति जानते हुए संवेदनशीलता प्रगट की थी। बाइबल बताती है कि हमें यीशु मसीह ने उत्पन्न किया है और वह हमें व्यक्तिगत रीति से जानता है (यूहन्ना 1:1-3; कुलुस्सियों 1:16)। निम्नलिखित पद क्या बताते हैं:

   क. प्रभु के लिए आपकी अद्वितीयता और मूल्य क्या है?
   भजन संहिता 139:13-18

   यूहन्ना 1:1-3; कुलुस्सियों 1:16

   लूका 12:6-7

ख. हमारे लिए परमेश्वर की योजनाएं क्या हैं?
यिर्मयाह 29:11

4. जगत का सृष्टिकर्त्ता हम से प्रेम करता है यह जानना हमारे आत्मसम्मान को मूलभूत रीति से बना सकता है। परमेश्वर के प्रेम के विषय में निम्नलिखित वचन क्या कहते हैं?
यिर्मयाह 31:3

रोमियों 8:38-39

5. अपने जीवन से संबंधित परमेश्वर के दृष्टिकोण को देखना, हमारी सफलताओं के केन्द्र बिन्दु को बदल सकता है। लाभकारी महात्त्वाकांक्षाओं के संबंध में निम्नलिखित वचन क्या निष्कर्ष निकालते हैं?

1 शमूएल 16:7

नीतिवचन 31:30

टिप्पणी: *(उपरोक्त वचन में) भय* का अर्थ *आदरयुक्त भरोसा* है।
मीका 6:8

6. हम असफलता के भय के कारण या असमर्थ होने के भाव के कारण शक्तिहीन हो सकते हैं, और यह हमें अपनी क्षमता का पूरा उपयोग करने से या नयी बातों का प्रयास करने से रोकता है। यदि हम अपना भरोसा परमेश्वर में रखते हैं तो वह हम से क्या प्रतिज्ञा करता है?
फिलिप्पियो 4:13

2 कुरिन्थियों 12:9

7. आरम्भिक शिष्यों ने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के द्वारा दिए गए मन-फिराव तथा

पापों की क्षमा के संदेश को ग्रहण किया था। इस बात ने उन्हें प्रभु के पक्ष में प्रत्युत्तर देने तथा उसकी महान योजनाओं का अनुसरण करने के लिए स्वतंत्र कर दिया था।

क. यदि हम आत्मसम्मान की स्वस्थ समझ पाना चाहते हैं तो हमें दोष-भावना से स्वतंत्र होना होगा। प्रभु हमें पाप के साथ क्या करने के लिए निरंतर निमत्रंण देता है?
1 यूहन्ना 1:9

ख. किस आधार पर हम परमेश्वर द्वारा क्षमा किए जाते हैं?
मत्ती 26:28 (इब्रानियों 9:22)

इफिसियों 1:7

संदर्भ: टिप्पणी 2, *परमेश्वर का मेमना,* पृष्ठ 21

8. यह तो, यीशु के प्रति प्रत्येक शिष्य के द्वारा दिया गया व्यक्तिगत प्रत्युत्तर ही था जिसने यीशु को अनुमति दी कि सहायता करने के उस काम को आरंभ करे जिससे प्रत्येक जन अपनी क्षमता को समझे सके। वे यीशु को कौन-कौनसा प्रत्युत्तर दे सकते थे?

सारांश

9. क. यीशु के लिए आप कैसे अद्वितीय है इसके विषय में आपने इस पाठ में क्या सीखा?

ख. इस पाठ को पढ़ने के बाद, आप अपने जीवन के उन क्षेत्रों को, जिनमें आप आत्मसम्मान के लिए संघर्ष करते रहे थे, कैसे देखते हैं?

10. क्या आपके जीवन में कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें आप दोष-भावना को पाल रहे हैं? संभवत: आप चाहेंगे कि एक कागज़ पर उन पापों की सूची तैयार करें जिन्हें

आप मान लेना और पीछे छोड़ देना चाहते हैं। उन्हें लिख लेने के बाद उस कागज़ पर 1 यूहन्ना 1:9 लिखिए और तब मसीह के क्रूस के द्वारा परमेश्वर की क्षमा प्राप्त करने के प्रतीक के रूप में उसे फाड़ दीजिए। इस अभ्यास का परिणाम अत्यधिक शुद्ध करनेवाला हो सकता है।

11. यीशु के प्रति, तथा आपके जीवन का मार्गदर्शन और नियंत्रण करने की उसकी इच्छा के प्रति, आप क्या व्यक्तिगत प्रत्युत्तर देने का चुनाव करते हैं?

12 एक क्षण रुक कर, परमेश्वर से इन बातों के संबंध में बातचीत कीजिए। जानिए कि वह आपसे प्रेम करता है, वह चाहता है कि आप स्वयं से प्रेम करें; और जानिए कि आपकी दुर्बलताओं के होते हुए भी, उसके पास आपके जीवन के लिए विशेष योजनाएँ हैं।

पाठ २ टिप्पणियाँ

1. *मसीह* (1:20)। रिव्रस्त (ग्रीक) या मसायाह (हिब्रू) का अर्थ "अभिषिक्त" होता है। नया नियम में लेखकों ने हजारों बार यीशु को यह नाम दिया है। यहूदी लोगों ने पुराना नियम की उस भविष्यवाणी पर विश्वास किया था, जो परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त एक ऐसे राजा एवं उद्धारकर्त्ता की ओर इशारा करती थी जो उन्हें उनके शत्रुओं से छुटकारा देगा। इस मसीह को *दाऊद की संतान* कहा गया था, क्योंकि वह दाऊद के वंश से आनेवाला था (1 इतिहास 17:11-15)। उसे *मनुष्य का पुत्र* कहा गया था (दानिय्येल 7:13-14), और उसे *दुःख-सहन-करनेवाला सेवक* होना था (यशायाह 53)। यह एक ऐसी सच्चाई थी जिसे बहुत से यहूदियों ने अनदेखी करना पसंद किया था।

2. *परमेश्वर का मेमना* (1:29, 36) इसका संकेत बलिदान, विशेष करके जगत के पापों का प्रायश्चित्त करनेवाले बलिदान की ओर है जिसकी भविष्यवाणी यशायाह 53:3-8 में की गई थी, और जिसका अधिक स्पष्टीकरण लैवव्यवस्था 17:11, इब्रानियों 9:11-22, तथा इब्रानियों 10:8-14 में किया गया है। मनुष्य आरंभ से ही पाप के दण्ड मृत्यु के अधीन रहा है (देखिए: उत्पत्ति 3)। यीशु, उस दण्ड को स्वयं पर लेने के लिए आया ताकि मनुष्यों को, यदि वे विश्वास करते हैं तो, परमेश्वर द्वारा मुफ्त क्षमा प्राप्त हो सके। परमेश्वर का मेमना आया था, कि पापी मनुष्य के लिए अपना निष्पाप जीवन बलिदान कर दे।

3. *पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देना* (1:33)। यूहन्ना का बपतिस्मा, मनफिराव के लिए अस्थायी आरम्भिक तैयारी के हेतु किया गया पानी का बपतिस्मा था, और

वह क्षमा एवं पापों से शुद्ध किए जाने का प्रतीक बना (लूका 3:3)। "इसके विपरीत, यीशु पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देनेवाला था। वह सारे विश्वासियों पर पवित्र आत्मा भेजनेवाला था, उन्हें जीने के लिए और उद्धार के संदेश की शिक्षा देने के लिए सक्षम बनानेवाला था। पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना यीशु के पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद हुआ (20:22; देखिए: प्रेरितों 2)।" *लाइफ एप्लिकेशन बाइबल एनआइव्ही,* पृष्ठ 1872 । देखिए: पृष्ठ 37 पर दी गई टिप्पणी 2, *पवित्र आत्मा*।

4. *मनुष्य का पुत्र* (1:51)। यह वह नाम था जो यीशु ने स्वयं के लिए सब से अधिक प्रयोग किया। जब यहूदियों ने "मसीह" शब्द सुना, उन्होंने तुरन्त पुराना नियम की उस भविष्यवाणी के विषय में सोचा जो एक सांसारिक विजयी राजा के बारे में थी, जो इस्राएल को *एकमात्र* विश्व-शक्ति बनानेवाला था। (देखिए: टिप्पणी 5, *मसीह-संबंधित पवित्रशास्त्र की भविष्यवाणी,* पृष्ठ 54)

   यीशु, यह जानते हुए कि उसकी पृथ्वी पर की उस यात्रा के दौरान अवश्य था कि वह जगत के पापों के लिए दु:ख सहे और अपना प्राण दे, खुले रीति से मसीह के रूप में पहचाने जाने और मसीह कहलाने से बचता रहा, ताकि लोग उसे पकड़कर सांसारिक राजा न बना दे (तुलना कीजिए: यूहन्ना 6:15)। इसके स्थान पर, यीशु ने स्वयं को *मनुष्य का पुत्र* नाम से संबोधित किया, जो *दानिय्येल 7:13* की मसीह-संबंधित भविष्यवाणी में प्रयोग किया गया है। वहां, भविष्यद्वक्ता मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर द्वारा अधिकार, महिमा, अनंत प्रभुता और अविनाशी राज्य दिए जाने का दर्शन प्रगट करता है। जब यीशु ने इस शब्द का प्रयोग अपने नाम के लिए किया, उसने स्वयं की ओर मसीह और परमेश्वर होने का संकेत इस प्रकार किया कि अपने श्रोताओं को नियंत्रित करे और उन्हें शिक्षा दे सके।

5. *स्वर्ग को खुला हुआ . . . और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को . . . उतरते और ऊपर जाते* (1:51)। "यह उत्पत्ति 28:12 में लिखे गए याकूब के स्वप्न का हवाला है। एकमात्र विशिष्ट परमेश्वर-मनुष्य होने के कारण, यीशु स्वर्ग और पृथ्वी के बीच की सीढ़ी होनेवाला था। यीशु यह *नहीं* कह रहा है कि यह उसके रूपांतर के समान एक शारीरिक अनुभव होगा, (कि वे अपनी आंखों से सीढ़ी को देखेंगे), (तुलना कीजिए: मरकुस 9:2-8), परन्तु यह कि उन्हें यीशु के वास्तविक स्वभाव एवं उसके आने के उद्देश्य के विषय में आत्मिक अन्तर्दृष्टि प्राप्त होगी।" *लाइफ एप्लिकेशन बाइबल एनआइव्ही,* पृष्ठ 1872

--0--

पाठ ३ एक विवाह समारोह तथा मंदिर में

यूहन्ना 2

बैतनिय्याह से गलील में आने के कुछ दिन पश्चात्, यीशु तथा उसके शिष्य काना में किसी विवाह समारोह में गए, जहाँ उसकी माता भी निमंत्रित थी। बाइबल के दिनों में, विवाह एक सप्ताह भर का लम्बा समारोह मनाया जाता था जिसमें गांव का हर एक जन उपस्थित होता था। तथापि, इस विशिष्ट घटना में, दुल्हे को बहुत ही लज्जित करनेवाली परिस्थिति उत्पन्न हो गई। समारोह समाप्त होने के पहले ही, दाखरस समाप्त हो गया। यीशु की माता इस समस्या को लेकर उसके पास आई।

यीशु के द्वारा मरियम को दिया गया उत्तर समझने में कठिन है: "हे महिला, मुझे तुझ से क्या काम? अभी मेरा समय नहीं आया" (2:4)। कदाचित् वह समझने में चुक गई थी कि अब उसके पुत्र ने अपने मसीह होने की सेवकाई आरंभ कर दी थी, और इसके आगे उनके संबंध भिन्न होनेवाले थे। कदाचित् वह उससे कह रहा था कि उसकी सामर्थ्य का उपयोग लोगों को परमेश्वर के अनुग्रह की ओर खींचने के उद्देश्य से किया जाना था। तथापि, उसके वाक्य के दूसरे भाग, "अभी मेरा समय नहीं आया" का इशारा नि:संदेह ही उसकी महिमा के उस प्रकाशन की ओर था जो उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा होनेवाली थी (तुलना कीजिए: यूहन्ना 12:27, 13:1, 17:1)।

फिर भी मरियम ने सेवकों के पास जाकर उन से कहा कि यीशु जो कुछ उनसे कहे उसे वे करें। उन्होंने उसके निर्देशों का सावधानी से पालन किया, और यीशु ने 540 से 810 लीटर पानी को उत्तम दाखरस बना दिया। इस प्रथम अविश्वसनीय आश्चर्यकर्म ने उसके शिष्यों के विश्वास को दृढ़ किया कि यीशु वास्तव में मसीह था।

कफरनहूम में, जिसे बाद में यीशु ने अपनी गलील की सेवकाई का केंद्र बनाया, कुछ दिन रहने के बाद यीशु और उसका परिवार और उसके शिष्य यरूशलेम में फसह का पर्व[1] मनाने गए। यह यहूदियों के वार्षिक पर्वों में से सब से बड़ा पर्व था; और व्यापारी मन्दिर में लेन-देन करने के द्वारा परिस्थिति का फायदा उठाते थे। कुछ व्यापारी विदेशी सिक्कों की अदला-बदली करते, तो कुछ शुद्धीकरण की धार्मिक विधियों के लिए पशु बेचते थे; दोनों का ही उद्देश्य बहुत ऊंचा लाभ पाना होता था। जब यीशु यरूशलेम में पहुंचा, वह सीधे मन्दिर में गया, और उसने वहां के लालची व्यापार को बंद करना आरंभ

कर दिया। उसने रस्सियों का कोड़ा बनाया, और मन्दिर में घूमकर सर्राफों के पीढ़े उलट दिए, और व्यापारियों को बाहर निकाल दिया। उसने आदेश दिया कि वे अपने लालची व्यापार के द्वारा "मेरे पिता के घर को" अपवित्र करना बन्द करें।

यह कोई मामूली घटना नहीं थी। जैसे कि अपेक्षा की जा सकती थी, यहूदियों ने प्रश्न किया कि यीशु के पास उन कामों को करने का क्या अधिकार था। उसके उत्तर को समझने के लिए, हमें पहले यह समझना होगा कि मन्दिर यहूदी धर्म का केंद्र था, उनके मध्य परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतीक था। समय के साथ-साथ, मन्दिर की बहुत-सी प्रथाएं भ्रष्ट हो गई थीं, और बहुतों के लिए अब मन्दिर परमेश्वर की उपस्थिति का स्मरण नहीं रह गया था। अत: यीशु ने उनके इस चुनौती का उत्तर देने के लिए, कि मन्दिर को साफ करने के अपने अधिकार को प्रमाणित करे, *स्वयं* ही मन्दिर होने का इशारा किया (2:19, 21)। उनके मध्य वह स्वयं ही परमेश्वर की सच्ची जीवित उपस्थिति था, ऐसी उपस्थिति जो कुछ लोग देख नहीं सकते थे, क्योंकि उनमें परमेश्वर के प्रति निष्ठावान लालसा का स्थान लालच एवं रीति-रिवाजों ने ले लिया था।

यीशु ने अपनी आनेवाली मृत्यु, ("इस मन्दिर को ढा दो"), तथा पुनरुत्थान, ("और मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा"), की ओर इशारा किया था। इस बात को शिष्य बाद में समझनेवाले थे कि यीशु अपने उस बलिदान के विषय में कह रहा था जो मन्दिर में होनेवाले बलिदानों की आवश्यकता को समाप्त कर देनेवाला था। परन्तु उस समय, हर एक जन यही सोच रहा था कि वह शब्दश: उस भव्य मन्दिर की इमारत के विषय में ही कह रहा था; और वे स्तब्ध थे।

तौभी, यीशु के द्वारा उनके मध्य किए गए चंगाई तथा दुष्टात्माओं से छुटकारा देने के आश्चर्यकर्मों[2] के कारण, आगे के दिनों में बहुतों ने उस में विश्वास करना आरंभ किया। यीशु उनके मनों को एक खुली पुस्तक के समान पढ़ सकता था, और देख सकता था कि उन लोगों में सच में कितनी निष्ठा और समझ थी। बहुतों का विश्वास डगमगानेवाला था क्योंकि वह उसने उनके लिए किए कामों पर आधारित था। यीशु अपने व्यक्तित्व और उद्देश्य की समझ मात्र उन्हीं को देनेवाला था जिन्हें वह जानता था कि वे नि:संदेह विश्वासयोग्य तथा निष्ठावान थे।

पढ़िए यूहन्ना 2:1-11

1. विवाह में क्या समस्या उत्पन्न हो गई थी और उसके विषय में मरियम ने क्या किया (2:1-5)?

संदर्भः टीका का पृष्ठ 23 पर दूसरा परिच्छेद, *यीशु के द्वारा मरियम को प्रत्युत्तर*

2. **क.** यीशु ने समस्या का समाधान कैसे किया (2:6-10)?

   ख. इस आश्चर्यकर्म का परिणाम क्या हुआ (2:11)?

3. यीशु ने अपनी सेवकाई के बिल्कुल आरंभ में ही अपनी मृत्यु के "समय" की ओर इशारा किया था (2:4)। उसके आश्चर्यकर्मों के कारण प्रतिक्रियाओं का सिलसिला कुछ ऐसी घटनाओं को उत्पन्न करनेवाला था जो उसे उसकी मृत्यु की ओर ले जानेवाली थीं। यीशु अपने उद्धार के मिशन के समय के विषय में क्या जानता था जो इन पदों से स्पष्ट होता है (7:6, 8:20, 12:23, 27, 17:1)?

पढ़िए यूहन्ना 2:12-25

4. **क.** वह कौनसी परिस्थिति थी जो प्रभु के कठोर शब्द और व्यवहार का कारण बनी (2:13-16)?

   संदर्भः टिप्पणी 2ख, *यह लूट-खसोट,* पृष्ठ 189

   ख. बाद में, यीशु के शिष्यों ने उसके इस व्यवहार का कारण क्या बताया (2:17)?

   टिप्पणीः दिया गया वक्तव्य भजन संहिता 69:9 में दी गई पुराना नियम की मसीह-संबंधित भविष्यवाणी है।

5. **क.** यहूदियों ने जब यीशु के अधिकार के प्रमाण की मांग की तब यीशु ने क्या उत्तर दिया (2:18-20)?

   संदर्भः टीका का पृष्ठ 24 पर तीसरा परिच्छेद, *इस मन्दिर* (2:19)

   ख. प्रभु के इस कथन के विषय में बाद में शिष्यों ने क्या समझा (2:21-22)?

6. **क.** बहुतों ने यीशु में विश्वास करना क्यों आरंभ किया (2:23)?

संदर्भः टिप्पणी 1, *यीशु के आश्चर्यकर्म,* पृष्ठ 76

ख. यीशु इन विश्वास करनेवालों के विषय में क्या जानता था (2:24-25)?

संदर्भः टीका का पृष्ठ 24 पर अंतिम परिच्छेद

बुनियाद पर बनाना
परिवर्तन, जिसकी खोज हम करते हैं

बहुतेरे लोग ऐसे समयों का अनुभव करते हैं जब उन्हें कुछ बड़े परिवर्तनों की आवश्यकता महसूस होती है। कुछ समस्याओं पर हमला करते हैं - उनकी परिस्थितियों में परिवर्तन लाने का प्रयास करने के द्वारा, या फिर अपने वातावरण में सुधार करते हैं। कुछ स्वयं में परिवर्तन लाने के बदले अपने आस-पास के लोगों को बदलने का प्रयास करते हैं - जो कि *सर्वदा* ही एक निराश करनेवाला प्रयत्न होता है; जबकि अन्य आत्म-सुधार की गंभीर योजनाओं का आरंभ करते हैं। वे कुछ विशिष्ट संकल्प करते हैं, परन्तु शीघ्र ही थक जाते हैं, और असफलता के कारण व्याकुल हो जाते हैं। व्यावसायिक निपुणता से दिया गया परामर्श बहुतेरे विषयों पर प्रकाश डाल सकता है, परन्तु साथ-ही-साथ मानवीय जटिलताओं के विषय में नयी-नयी बातें दिखाते हुए उलझन भी पैदा कर सकता है।

परिवर्तन के प्रति वचनबद्ध होते हुए हम प्रायः ऊंची अपेक्षाओं तथा निश्चय के साथ आरंभ करते हैं, परन्तु अंत में तब निराशा ही हाथ लगती है जब, हमारे बड़े प्रयासों के बावजूद, समस्याएं बनी ही रहती हैं।

परन्तु हमारी दशा परमेश्वर की दृष्टि में बिलकुल भी आशारहित नहीं है। बाइबल बताती है कि प्रभु न मात्र हमारे विकसित होने योग्य गुणों को देखता है, जैसे कि पाठ 2 में चर्चा की गई है, परन्तु वह तैयार है कि धीरे-धीरे हमें परिवर्तन की प्रक्रिया में से ले जाएं।

एक सुंदर शब्द-चित्रण, जो हमें परिवर्तित करने की मसीह की सामर्थ्य का उदाहरण देता है, काना के विवाह का वृत्तांत है जहां यीशु ने पानी को दाखरस बना दिया था। पवित्रशास्त्र की प्रतिज्ञा है कि मसीह किसी के भी जीवन को भीतर से बाहर तक

पूरा परिवर्तित कर सकता है। नया नियम का शुभ समाचार यही है कि मसीह में विश्वास तथा उसकी शक्ति एवं अगुवाई के प्रति निरंतर समर्पण करते रहने के द्वारा, हम एक ऐसे परिपूर्ण व्यक्तित्व में परिवर्तित किए जाते हैं जैसे बनने के लिए उसने हमारी सृष्टि की है। तत्काल नहीं, परन्तु लगातार, तथा वृद्धि के उन अंशों में, जितना हमारे लिए संभव है, प्रभु हम में वह परिवर्तन लाता है जो हम चाहते हैं। आइए हम देखें कि पवित्रशास्त्र इन बाइबल-आधारित सच्चाइयों के विषय में क्या कहता है।

1. **क.** वे कौन सी व्यक्तिगत कठिनाइयां होती हैं जिसके कारण मनुष्य परिवर्तन के लिए तरसता है?

   ख. परिवर्तन की यह लालसा लोगों को किस ओर ले जाती है?

   ग. अपने आवश्यक परिवर्तन को पाने के हमारे अपने प्रयासों के परिणाम क्या होते हैं?

2. मसीह जिस परिवर्तन की प्रतिज्ञा करता है उसका वर्णन कैसे किया गया है? परमेश्वर क्या प्रतिज्ञा करता है?
   2 कुरिन्थियों 5:17

   यशायाह 43:18-19

3. बाइबल बताती है कि परिवर्तन तब आता है जब मसीह *अपना जीवन हम में और हमारे द्वारा* जीता है। उसका आत्मा प्रतिज्ञा करता है कि (परिस्थितियों के प्रति) भिन्न प्रतिक्रिया दिखाने के लिए वह हमारी अगुवाई करेगा तथा हमें सामर्थ्य देगा। निम्नलिखित पद इसके विषय में क्या कहते हैं?
   यहेजकेल 36:26-27

   इफिसियों 3:16-17क

   कुलुस्सियों 1:27ख

4. यीशु के "पानी को दाखरस" में बदलने के कार्य की तुलना उसे हमारे जीवन में हमारे नकारात्मक अनुभव को सकारात्मक एवं स्वस्थ अनुभव में बदलने देने की अनुमति देने से की जा सकती है। जब हम पल-प्रति-पल मसीह को समर्पित होने का चुनाव करते हैं, वह निम्नलिखित बातों के स्थान पर हमें क्या देता है:

   - दिशा की कमी? भजन संहिता 32:8

   - असुरक्षा? यशायाह 33:6

   - भय? यशायाह 41:10

   - आनंद की कमी? भजन संहिता 16:11

   - बेचैनी? मत्ती 11:28-30

   - उद्देश्य की कमी? मत्ती 5:14, 16; भजन संहिता 138:8

   - आत्म-केंद्रित स्वभाव? फिलिप्पियों 2:3-4

   - चिंता/फिकर ? फिलिप्पियों 4:6-7

   - नकारात्मक चित्तवृत्ति/आत्म-संयम की कमी? गलातियों 5:22-23

सारांश

5. **क.** हम मसीह के द्वारा परिवर्तित किए जाएं इसके लिए आवश्यक है कि पहले वह हमारे जीवन में वास करे। प्रकाशितवाक्य 3:20 में आपके लिए उसका निमंत्रण तथा प्रतिज्ञा क्या है?

   ख. क्या यही आपके हृदय की इच्छा है?

6. **क.** मसीह के द्वारा निरंतर परिवर्तित किए जाने के लिए अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसके प्रति समर्पित होना आवश्यक है। क्या आपके जीवन के कोई

विशिष्ट क्षेत्र हैं जिन्हें आप इसी क्षण मसीह को समर्पित करना चाहेंगे ताकि उसके परिवर्तन को प्राप्त कर सकें?

ख. पुनः प्रश्न 4 का उल्लेख करते हुए देखिए कि जब आप उसे अपनी आवश्यकता प्रस्तुत करते हैं तब प्रभु आपसे क्या प्रतिज्ञा करता है?

पाठ ३ टिप्पणियाँ

1. *फसह का पर्व, या अखमीरी रोटी का पर्व,* यहूदी धर्म का प्रथम एवं सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पवित्र पर्व था। यह एक सप्ताह का होता था, जिसके पहले दिन फसह का पर्व, तथा सप्ताह के शेष दिनों में अखमीरी रोटी का पर्व मनाया जाता था। यह उत्सव यहूदियों को मिस्र के दासत्व से मिले छुटकारे के तथा इस्राएल की परमेश्वर के द्वारा छुड़ाए गए राष्ट्र के रूप में स्थापना करने के स्मरणार्थ मनाया जाता था (निर्गमन 12:1-13)।

2. **संदर्भः** टिप्पणी 1, *यीशु के आश्चर्यकर्म,* पृष्ठ 76

--0--

पाठ ४

नीकुदेमुस तथा नया जन्म

यूहन्ना 3

यीशु के द्वारा लालची व्यापारियों को मन्दिर से बाहर निकाल देने के कुछ ही समय बाद, नीकुदेमुस नामक एक प्रमुख धार्मिक अगुवा रात्रि के समय यीशु के पास प्रश्न पूछने आया। नीकुदेमुस एक फरीसी[1] था, और सन्हेद्रिन कहलाई जानेवाली 70 सदस्यों की यहूदी महासभा का सदस्य था। बाद में यह व्यक्ति यीशु के समर्थन में खड़े रहनेवाले कुछ धार्मिक अगुवों में से एक, और यीशु के गाड़े जाने में सहायक भी, होनेवाला था (7:50-52; 19:39-40)।

उनकी पहली भेंट में, नीकुदेमुस ने बताया कि वह यीशु के चरित्र एवं आश्चर्यकर्मों के कारण उसकी ओर आकर्षित हुआ था। वह जानता था कि यीशु परमेश्वर की ओर से आया था (3:2), परन्तु वह अपनी धार्मिक समझ का यीशु के व्यक्तित्व से समझौता नहीं कर सका था। अपने स्पष्टवादी होने के कारण, अपनी उलझन का समाधान करने हेतु, वह यीशु के पास आया था।

इसके परिणाम-स्वरूप हुए वार्तालाप में, यीशु ने नीकुदेमुस को उसके जीवन की दो आवश्यकताओं के विषय में बताया। उसकी पहली आवश्यकता पवित्र आत्मा[2] द्वारा दिया जानेवाला आत्मिक जन्म थी। इस आवश्यकता की पूर्ति दूसरी आवश्यकता पर निर्भर थी और वह दूसरी आवश्यकता परमेश्वर के राज्य में प्रवेश दिलानेवाले उस मार्ग पर विश्वास करना थी जो उसके पुत्र में विश्वास करने का था। (नीकुदेमुस विश्वास करता था कि अब्राहम के वंश का होने के कारण उसे परमेश्वर के सामने धार्मिक ठहरने का आश्वासन मिला हुआ था।) यीशु ने, इस सच्चे और खोजी मन के धार्मिक अगुवे नीकुदेमुस से बात करते समय, उसे आश्वासन दिया कि वह स्वर्ग से आया था, और उसकी स्वर्गीय अनंतकालिक सत्य के प्रति जो गवाही थी वह पूर्णत: निश्चित थी। यीशु ने प्रतिज्ञा की कि मनुष्य का पुत्र[3] ऊंचे पर चढ़ाया जाएगा, (यह उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने की ओर संकेत था), और मात्र वे ही जो उस में विश्वास करेंगे, अनंत जीवन पाएंगे।

बहुत-से व्याख्याकार मानते हैं कि यीशु के नीकुदेमुस से कहे शब्द 3:15 के बाद समाप्त हो जाते हैं, और लेखक अपने (सावधानीपूर्वक किए गए) विचार जोड़ता है। ये शब्द, चाहे यीशु के द्वारा कहे गए हों या फिर यूहन्ना के द्वारा, वे परमेश्वर के शब्द

हैं, और परमेश्वर के अविश्वसनीय प्रेम के बारे में बताते हैं। पिता के असीमित प्रेम ने उसे बाध्य किया था कि वह अपने पास देने के लिए जो सर्वोत्तम था उसे दे दे -- अपना एकलौता पुत्र! और ऐसा उसने जगत पर दण्ड की आज्ञा देने के लिए नहीं, परन्तु उसे अनंत उद्धार और जीवन देने के लिए और अपनी ओर आकर्षित करने के लिए किया। यूहन्ना घोषणा करता है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को इसलिए भेजा कि जो कोई उसकी गवाही पर विश्वास करे वह दोषमुक्त किया जाए, दण्ड न पाए।

संकट की स्थिति यह है कि जबकि परमेश्वर की ज्योति जगत में उसके पुत्र के द्वारा मुक्त रूप से प्रकाशित होती है, बहुतेरे जो परमेश्वर को प्रसन्न करने में रुचि नहीं रखते, वे उस ज्योति से दूर भागना पसंद करेंगे। वे इनकार, भ्रम तथा अधर्म के कामों के अंधकार में छिप जाएंगे। परन्तु वे सब जो सत्य से प्रेम करते हैं,[4] परमेश्वर के प्रेम का प्रत्युत्तर देंगे और उसके पुत्र का स्वागत करेंगे।

इसके बाद, यीशु अपनी सेवकाई के लिए यहूदिया प्रांत में गया, जहां प्रगट रूप से उसके शिष्य उसके अधिकार के अधीन बपतिस्मा देते थे (3:22, 4:2)।[5] जब यूहन्ना के कुछ शिष्यों ने यह सुना तो वे परेशान हो गए। वे इस बात से भी चिंतित थे कि अधिक-से-अधिक लोग यूहन्ना की ओर आने के बजाय यीशु के पास एकत्रित हो रहे थे। जब वे इस विषय में पूछने के लिए यूहन्ना के पास गए, उसका उत्तर अनुग्रहपूर्ण तथा नम्र था। उसने स्पष्ट किया कि उसकी सेवकाई के समान ही यीशु की सेवकाई परमेश्वर की ओर से दी गई थी। और उसने इस बात को दोहराया कि *उसकी* परमेश्वर से मिली सेवकाई मसीह का संदेशवाहक होने की थी। दुल्हा और उसके मित्र का उदाहरण देते हुए, यूहन्ना ने यह दिखाया कि किस प्रकार मित्र दूल्हे की सहायता के लिए होता है, और जब विवाह समारोह में सब कुछ ठीक होता है तो हर्षित होता है। यूहन्ना इस बात से सन्तुष्ट था कि उसने इस्राएल में विश्वासयोग्य लोगों के समक्ष यीशु का परिचय करा दिया था, और देख लिया था कि वे यीशु के पीछे हो लिए थे। "अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूं," ये इस सुसमाचार में लिखे गए बपतिस्मा देनेवाले के अंतिम शब्द थे।

अब लेखक, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की गवाही पर और विचार प्रगट करता है। वह भविष्यद्वक्ता जैसे अभिषिक्त किया गया था, और यीशु का अग्रदूत था। वह "पृथ्वी का" था, अत: सीमित था। दूसरी ओर, यीशु स्वर्ग से आया था, और उन बातों को बताने के योग्य था जो उसने वस्तुत: स्वर्ग में देखी और सुनी थीं। वह परमेश्वर की ओर से भेजा गया था, परमेश्वर की बातें कहता था, और उसके पास परमेश्वर के आत्मा की असीमित सामर्थ्य थी। प्रेरित पुन: एक बार अपने दृढ़ विश्वास को घोषित करता है: अनंत जीवन, पिता के द्वारा ऊपर से भेजे गए पुत्र में विश्वास करने पर निर्भर होता है।

पढ़िए यूहन्ना 3:1-15

1. नीकुदेमुस कौन था, और यीशु के विषय में उसकी समझ क्या थी (3:1-2)?

   संदर्भः टिप्पणी 1, *फरीसी,* पृष्ठ 36, तथा टिप्पणी 1, *यीशु के आश्चर्यकर्म*, पृष्ठ 76

2. यीशु ने इस धार्मिक अगुवे को परमेश्वर के राज्य के बारे में क्या बताया (3:3-5)?

3. यीशु ने आत्मिक जन्म में पवित्र आत्मा के काम के विषय में क्या प्रगट किया (3:6-8)?

   संदर्भः टिप्पणी 2, *पवित्र आत्मा*, पृष्ठ 37

4. नीकुदेमुस को, इस्राएल का एक धार्मिक शिक्षक होने के नाते, परमेश्वर की आत्मिक जीवन देनेवाली सामर्थ्य को समझना चाहिए था (तुलना कीजिएः यहेजकेल 36:26-27)। यीशु ने नीकुदेमुस की अज्ञानता का कारण क्या बताया (3:11-12)?

5. यीशु ने अपने विषय में कौनसी तीन विशेष बातें नीकुदेमुस को बताईं (3:13-15)?

   संदर्भः टिप्पणी 6, *ऊंचे पर चढ़ाया गया साँप*, पृष्ठ 38 तथा टिप्पणी 4, *मनुष्य का पुत्र,* पृष्ठ 22

पढ़िए यूहन्ना 3:16-21

6. परमेश्वर का अपने पुत्र को भेजने में क्या उद्देश्य था (3:16-18)?

7. 3:19-20 में किस मूलभूत समस्या का वर्णन किया गया है?

8. यूहन्ना 3:21 के अनुसार, नीकुदेमुस के द्वारा यीशु को दिया गया प्रत्युत्तर उसके विषय में क्या प्रगट करेगा?

संदर्भ: टिप्पणी 4, *वे सब जो सत्य से प्रेम करते हैं*, पृष्ठ 37

पढ़िए यूहन्ना 3:22-36

9. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने अपने शिष्यों की चिंता का सामान्य प्रत्युत्तर क्या दिया (3:27-30)?

10. अधिकांश धर्मशास्त्री मानते हैं कि 3:31-36 के वाक्य यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के न होकर लेखक के अपने हैं। यहां व्यक्त की गई धारणाओं का सारांश आप कैसे देंगे?

टिप्पणी: "जब हम परमेश्वर के क्रोध की बात करते हैं (3:36), हम निश्चय ही परमेश्वर के गुण का वर्णन करने के लिए मानवीय शब्दों का उपयोग करते हैं। यह समझना कठिन है कि मनुष्य बिना बदले की भावना के, यहां तक कि द्वेषभाव न रखते हुए, कैसे क्रोधित हो सकता है, और क्रोध का उपयोग कर सकता है। परमेश्वर के साथ ऐसा नहीं है। क्रोध प्रेम का विपरीत पक्ष है। यह प्रेमी परमेश्वर की उस घृणा का वर्णन करने का ढंग है जो वह पाप, बुराई, अनाज्ञाकारिता से, और उन सारी बातों से करता है जो उन लोगों का जीवन बिगाड़ देती हैं जिनसे वह प्रेम करता है। . . . परमेश्वर का क्रोध हमें सिखाता है कि परमेश्वर संसार में पाप और अन्याय और बुराई का पक्ष नहीं लेता और उन्हें अनदेखा नहीं करता।" गॉर्डन ब्रिज़र, द *मॅन आऊटसाईड,* पृष्ठ 40

बुनियाद पर बनाना, भीतर से बाहर तक स्वतंत्र

नीकुदेमुस ने न केवल यीशु की शिक्षा और आश्चर्यकर्मों को देखा था, परन्तु उसने प्रत्यक्ष मसीह की सच्चाई को देखा था। जब यीशु धनी और गरीब दोनों की समान रूप से सहायता करता था, तो उसमें लोगों के प्रति सुस्पष्ट सहनशील और

सहानुभूतिशील प्रेम था जो उसे प्रेरणा देता था। इसके अतिरिक्त, मालूम होता था कि यीशु पृथ्वी पर के *तथा* स्वर्ग में के आत्मिक क्षेत्र को तुरन्त देख लेता था। और यीशु ने परमेश्वर को एक प्रेमी पिता कहा, जिसके साथ उसका व्यक्तिगत रिश्ता था, और जिसके साथ उसका मेल था।

नीकुदेमुस ने इतने वर्षों में बहुतेरे धार्मिक अगुवों को देखा था, परन्तु यीशु एक आडंबरशून्य, सामर्थी और अद्वितीय था। यह धर्मपरायण फरीसी, यीशु से सलाह चाहने से अपने आप को रोक नहीं पाया और खिंचा चला आया, और यीशु ने उसकी आवश्यकता के क्षण उसे तृप्त किया।

यीशु ने नीकुदेमुस को समझाया कि आत्मिक पूर्णता, पृथ्वी पर के धार्मिक संस्कार–विधि और कामों से कभी नहीं आएगी। बल्कि, पवित्र आत्मा, भीतर से बाहर तक आत्मिक *नया जीवन* उत्पन्न करते हुए, मनुष्य को परिवर्तित करता है। नीकुदेमुस को यीशु में मात्र विश्वास *करना* था – उसमें अपना *भरोसा* रखना था – और पवित्र आत्मा उसे आत्मिक जन्म, परमेश्वर के राज्य और अनंत जीवन में प्रवेश दिलाता।

यीशु ने जो शुभ समाचार नीकुदेमुस को दिया था वह हम सब के लिए है: हमें परमेश्वर को प्रसन्न करने के प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं है। यदि हम मसीह में भरोसा रखते हैं और उसके वचन पर विश्वास करते हैं तो परमेश्वर हमारे जीवन में मसीह की पूर्णता उत्पन्न कर सकता है। जबकि हमारा स्वभाव है कि "इसे स्वयं ही कर लो," परन्तु परमेश्वर इस काम की असंभावना को जानता है। हमें उसके शक्ति की – सामर्थ्य और बुद्धि और उसके आत्मा के परिवर्तन की – भीतर से बाहर तक आवश्यकता है।

आइए हम यीशु ने नीकुदेमुस को दिए अद्‌भुत समाचार को और ध्यानपूर्वक देखें।

1. अधिकांश लोग जब परमेश्वर को प्रसन्न करने के संभावित तरीकों पर विचार करते हैं तो क्या सोचते हैं?

2. जब लोग इन तरीकों से परमेश्वर को प्रसन्न करने का निश्चय करते हैं तो परिणाम क्या होता है?

3. यीशु ने नीकुदेमुस से कहा कि पवित्र आत्मा आत्मिक जीवन देता है, जो मसीह में साधारण विश्वास या *भरोसे* से आरंभ होता है। "विश्वास करना"[7] (ग्रीक

शब्द *pioteuo*) का अर्थ "की प्रतीति करना और इस कारण उसमें दृढ़ विश्वास करना, भरोसा रखना . . . मात्र सत्य मानना नहीं परन्तु उस पर निर्भर रहना" है।

क. इस परिभाषा के प्रकाश में, यूहन्ना 3:14-18 की उस शिक्षा का सारांश आप कैसे देंगे, जो यीशु के साथ के उस संबंध के विषय में बताती है जो आत्मिक परिवर्तन की ओर ले जाता है।

ख. मसीह में किया गया विश्वास हमे मसीही जीवन जीने के लिए कैसे सक्षम बनाता है यह स्पष्ट करने के लिए यीशु ने यूहन्ना 15 में डाली की दाखलता में बने रहने की समरूपता का उपयोग किया। यीशु से दूर रहकर मसीही जीवन जीने का प्रयास करने के विषय में यीशु क्या कहता है (यूहन्ना 15:5)?

4. यीशु हमारे जीवन में होनेवाले पवित्र आत्मा के परिवर्तनकारी काम का वर्णन कैसे करता है?
यूहन्ना 14:16-17

यूहन्ना 14:26

5. जब पवित्र आत्मा हम में निवास करता है, और हम उसे नियंत्रण करने देते हैं, तब हम में कौनसे गुण प्रगट होते हैं?
गलातियों 5:22-23

6. जब हम परमेश्वर पर भरोसा करने तथा निर्भर रहने का प्रयास करते हैं तब पवित्र आत्मा हमें क्या सहायता देता है?
रोमियों 8:26

7. हम में से प्रत्येक जन समय के किसी क्षण, एक स्वेच्छा से किए गए निर्णय

के साथ, मसीह में विश्वास करना आरंभ करता है। हमारा यह निर्णय पवित्र आत्मा को स्वतंत्रता देता है, कि हमें आत्मिक जन्म दे, तथा मसीही जीवन जीने के लिए भीतर से सामर्थ्य प्रदान करे।

आरम्भिक विश्वास के बाद, प्रतिदिन की आवश्यकता के लिए मसीह में भरोसा रखना यह एक ऐसा चुनाव है जो पवित्र आत्मा को विश्वासी में परिवर्तन का काम जारी रखने की अनुमति देता है। इस चुनाव का वर्णन निम्नलिखित पदों में कैसे किया गया हैं?
नीतिवचन 3:5-6

गलातियों 5:25

सारांश

8. नीकुदेमुस ने, एक फरीसी होने के कारण, परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए (धार्मिक नियम कायदों का पालन करते हुए) अपने प्रयासों में भरोसा किया था। यीशु, नीकुदेमुस को स्वतंत्र और सरल विश्वास के द्वारा परिवर्तित करना चाहता था। परमेश्वर को हमारी अपनी सामर्थ्य में प्रसन्न करने के विषय में इफिसियों 2:8-9 क्या प्रगट करता है?

9. पवित्र आत्मा आपको एक ऐसे व्यक्ति में परिवर्तित करता रहे जैसे होने के लिए परमेश्वर ने आपको बनाया है इसके लिए आपको क्या करना आवश्यक है?

पाठ ४ टिप्पणियाँ

1. *फरीसी* । *फरीसी* नाम का अर्थ "अलग किए हुए" होता है। यीशु के समय के फरीसी, कानून-पंडित (कानून की पाबन्दी करनेवाले) और पृथक्तावादी समूह के थे जो कड़ाई से, परन्तु प्राय: पाखण्डी रूप से, मूसा की व्यवस्था तथा "गुरुजनों की मौखिक परम्परा" का पालन करता था। पलस्तीन में वे लगभग 6000, कुल जनसंख्या का 1 प्रतिशत, थे। फरीसियों का लोगों के द्वारा "अनाधिकृत धार्मिक अगुवे" मानकर आदर किया जाता था, जबकि परमेश्वर

द्वारा कहीं भी ऐसा ठहराया नहीं गया था। वे आराधनालय में शिक्षक थे, लोगों की दृष्टि में धार्मिक उदाहरण और पुराना नियम की व्यवस्था तथा उसके उचित पालन के स्व-नियुक्त संरक्षक थे। व्यवस्था की उनके द्वारा की गई "व्याख्या," जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी परम्परा के रूप में चली आ रही थी, उनके द्वारा पवित्रशास्त्र की बराबरी में अधिकार-पूर्ण मानी जाती थी।

2. *पवित्र आत्मा* । परमेश्वर ने स्वयं को बाइबल में त्रिएक परमेश्वर के रूप में घोषित किया है; तीन ईश्वरीय व्यक्ति जिनमें परमेश्वर के गुण समान रूप में हैं। पवित्र आत्मा, जो त्रिएक परमेश्वर का तीसरा व्यक्ति जाना जाता है, उस हर एक मनुष्य में वास करता है जो मसीह को व्यक्तिगत रीति से ग्रहण करता है (यूहन्ना 1:12; 14:16-17)। पवित्रशास्त्र पवित्र आत्मा को पुरुषवाचक सर्वनाम से, एक पृथक व्यक्तित्व के रूप में प्रगट करता है। यूहन्ना 3 में, यीशु नीकुदेमुस को बताता है कि पवित्र आत्मा त्रिएकता का वह सदस्य है जो विश्वासी में नये जीवन या आत्मिक जन्म का कार्य करता है। जबकि पवित्र आत्मा को देखा नहीं जा सकता, हम उसके काम के प्रमाण को देख सकते हैं (3:8)।

   पवित्रशास्त्र हमें और अधिक बताता है, कि जब हम परमेश्वर से मांगते हैं (लूका 11:13) कि हमें पवित्र आत्मा से "भर दे" (इफिसियों 5:18ख), तब वह हमें ईश्वरीय ढंग से निर्देश देते हुए और मसीही जीवन जीने के लिए सामर्थ्य प्रदान करते हुए उत्तर देता है (इफिसियों 3:16-20; यहेजकेल 36:26-27)। बाइबल कभी-कभी, जैसेकि कुलुस्सियों 1:27ख में, इसका वर्णन "मसीह तुम में" कह कर करती है।

3. **संदर्भ:** टिप्पणी 4, *मनुष्य का पुत्र,* पृष्ठ 22

4. *वे सब जो सत्य से प्रेम करते हैं,* वे ज्योति के निकट आते हैं (3:21)। "यहां उन लोगों का कोई सुस्पष्ट उल्लेख नहीं किया गया है जिन्हें मसीह में विश्वास करने का सुअवसर कभी न मिला हो, वे जिन पर ज्योति अपनी पूर्णता में कभी न प्रकाशित हुई हो। परन्तु यूहन्ना के शब्द संभवत: उनके भी न्याय के सिद्धान्त को प्रकट करते हैं। जिस प्रकार अनंत वचन मसीह में देहधारी होने के पहले मनुष्यों के पास आया, उसी प्रकार परमेश्वर की ज्योति के साथ भी हुआ। यदि मनुष्यों का न्याय उनके ज्योति को दिए गए प्रत्युत्तर के अनुसार किया जाना है, तो वह उसी ज्योति को दिए गए प्रत्युत्तर के अनुसार होगा जो उनके लिए उपलब्ध थी। सब सत्य ज्योति, कुछ अंश में उसी एक से निकली चमक है जो जगत की ज्योति है। जो उनके लिए उपलब्ध उस आंशिक ज्योति को ग्रहण करते हैं, वे उस सिद्ध ज्योति को भी आनंद से ग्रहण करेंगे जब वह उन पर प्रकाशित होती

है। जो ज्योति का इनकार करते हैं, वह चाहे जिस रूप में उन पर प्रकाशित होती हो, स्वयं पर दण्ड घोषित करते हैं।" एफ. एफ. ब्रुस, पृष्ठ 92

5. *यीशु के शिष्यों का बपतिस्मा देना* (3:22, 4:2)। सुसमाचारों में मात्र ये ही पद हैं जो मानते हैं कि यीशु की पृथ्वी पर की सेवकाई में बपतिस्मा देना भी सम्मिलित था। यीशु नहीं, परन्तु उसके शिष्य उसके अधिकार के अधीन बपतिस्मा देते थे। स्पष्टत: यह पानी का बपतिस्मा यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के बपतिस्मा के समान था, और पापों से पश्चात्ताप तथा उनसे शुद्ध होने का प्रतीक था। वह यीशु के द्वारा दिए जानेवाले पवित्र आत्मा के बपतिस्मा का आरंभ नहीं था (यूहन्ना 1:33), जो सर्वप्रथम पेन्तेकुस्त के दिन आनेवाला था (प्रेरितों के काम 2)।

6. *ऊंचे पर चढ़ाया गया साँप*। 3:14 में, यीशु ने स्पष्ट किया कि निर्गमन 21:8-9 की घटना किस प्रकार यीशु के द्वारा मिलनेवाले उद्धार की पूर्वसूचना थी। इस्राएलियों ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया और उनका न्याय साँप की महामारी के द्वारा हुआ। सब साँप के डसने से मरनेवाले थे, सिवाय उनके जिन्होंने ऊंचे पर चढ़ाए गए पीतल के साँप की ओर देखने की परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया और परमेश्वर की चंगा करने की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया। उसी प्रकार, यीशु कह रहा था, वह ऊंचे पर (क्रूस पर) चढ़ाया जाएगा, और वे सब जो उसमें विश्वास करेंगे वे अपने पापों के दण्ड से बचाए जाएंगे।

7 *वाईन्स एक्स्पोजिटरी डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एण्ड न्यू टेस्टामेन्ट वर्ड्स,* पृष्ठ 116

--0--

पाठ ५

यीशु सामरिया में

यूहन्ना 4

फरीसी समझ गए थे कि यीशु की प्रसिद्धि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से भी अधिक हो रही थी। इस कारण यीशु ने यहूदिया छोड़कर गलील में लौटेने का निश्चय किया। उस स्थान को छोड़कर जाने से वह उस प्रतिस्पर्धा को टालनेवाला था जो फरीसी उसमें और बपतिस्मा दनेवाले में उत्पन्न करते दिखाई दे रहे थे। और वह यहूदिया के धार्मिक अगुवों के बढ़ते विरोध को भी कम कर देनेवाला था।

गलील में लौटने का सीधा रास्ता सामरिया से होकर जाता था, जहां दोपहर के समय यीशु और उसके शिष्य सूखार नामक नगर में रुक गए। जब शिष्य भोजन मोल लेने के लिए गए तब यीशु ने याकूब के कुएँ के पास आराम किया। तब यीशु ने शिष्टाचार की उपेक्षा उस समय की जब उसने सामरी स्त्री से पीने के लिए पानी मांगा। कोई भी कट्टर यहूदी पुरुष सामरियों[1] के प्याले से पानी नहीं पीएगा या इस प्रकार की परिस्थिति में स्त्री से वार्तालाप आरंभ नहीं करेगा।

इस बात की चिंता किए बिना, यीशु उस स्त्री से लम्बा वार्तालाप करने में बढ़ता गया। उसने उसे उस जीवन के जल के वरदान के विषय में बताया जो वह उस हर एक जन को देनेवाला था जो उससे मांगता। यह जल प्यास को सर्वदा के लिए बुझाएगा, और उस सोते के समान होगा जो अनंत जीवन के लिए उमड़ता रहेगा। उस स्त्री का स्वाभाविक उत्तर था, "हे प्रभु, वह जल मुझे दे।"

परन्तु यीशु ने उससे कहा कि वह पहले जाकर अपने पति को बुला लाए। उसने उत्तर दिया कि उसके पास पति नहीं था। और प्रभु उस बात से सहमत हुआ, उसे यह बताते हुए कि वह पांच पति कर चुकी थी, और उस समय एक ऐसे पुरुष के साथ रहती थी जो उसका पति नहीं था।

यीशु को एक भविष्यद्वक्ता समझते हुए, सामरी स्त्री ने तुरन्त विषय को बदल दिया। उसने यहूदियों और सामरियों के मध्य सुलगनेवाले आत्मिक मुद्दे को अर्थात् आराधना कहां करनी चाहिए के विषय को उठाया। यीशु ने उसे बताया कि परमेश्वर के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात यह नहीं है कि कोई आराधना कहां करता है, परन्तु यह है कि वह आराधना किसकी और कैसे करता है। यीशु ने उसे बताया कि पिता "आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से

आराधना करें" (उस समय, किसी के भी लिए परमेश्वर को "पिता" कहना एक नयी कल्पना थी)। तब यीशु ने उसे बताया कि सामरियों के पास यहूदियों[2] के द्वारा सुरक्षित रखा गया परमेश्वर का स्पष्ट ज्ञान नहीं था, और यह भी कि उद्धार लेकर आनेवाला मसीह एक यहूदी होगा।

उस स्त्री ने पूरी निडरता से कहा, "जब वह (मसीह) आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा।" इस पर यीशु ने कहा, "मैं जो तुझ से बोल रहा हूं, वही हूं।"

कल्पना कीजिए कि इस वाक्य ने किस सामर्थ्य से उस स्त्री को प्रभावित किया होगा, विशेषकर उसे जिसके विषय में "वह सब कुछ जो उसने किया था" जानता था। उसने अपना घड़ा वहीं छोड़ा, और दौड़कर नगर में गई, कि लोगों को उस मनुष्य के विषय में बताए जिसने मसीह होने का दावा किया था।

शिष्य लौट आए थे, और यीशु उन्हें उस तृप्ति के विषय में बताने लगा जो परमेश्वर द्वारा सौंपे गए कार्य को करने मात्र से मिलती है। उसने परमेश्वर की 'फसल के खेतों' में बोने और काटने की धारणा को स्पष्ट किया। उसने कहा "खेतों पर दृष्टि डालो, कि वे कटनी के लिए पक चुके हैं।"

इसी बीच, वह स्त्री अनेक सामरियों के साथ लौटी, जो उसकी गवाही के कारण यीशु को देखने आए थे। यह स्पष्ट था कि उन लोगों को यीशु का साथ, उसके यहूदी होने पर भी, सुखद लग रहा था, और उन्होंने उसे सूखार में कुछ दिन और रहने का निमंत्रण दिया। बहुतों ने विश्वास किया, और यीशु के साथ रहने के बाद उनकी दृढ़ धारणा यह थी: "यही सचमुच में जगत का उद्धारकर्त्ता है" (4:42)।

गलील को लौटने पर यीशु ने वहां अपनी सार्वजनिक सेवकाई का दूसरा वर्ष आरंभ किया। वहां उसका उत्साह के साथ स्वागत किया गया, क्योंकि उन्हों ने उन आश्चर्यकर्मों को देखा था जो उसने यरूशलेम में किए थे। परन्तु वह जानता था कि, "भविष्यद्वक्ता अपने देश में आदर नहीं पाता।"

काना में पहुंचने पर, राजा का एक कर्मचारी - हेरोदेस की सेवा करनेवाला एक अन्यजातीय मनुष्य - कफरनहूम से आकर यीशु से विनती करने लगा कि उसके उस पुत्र को चंगा करे जो घर में गंभीर रूप से बीमार था। यीशु ने उस मनुष्य के हृदय में सच्चा विश्वास देखा, और उसके पुत्र को उसके घर गए बिना ही चंगा कर दिया। यीशु ने कहा, "जा, तेरा पुत्र जीवित है," और उस कर्मचारी ने यीशु के शब्दों पर विश्वास किया, और घर लौटने निकला। जब वह मार्ग में ही था, उसके दासों ने उससे मिलकर कहा कि एक दिन पहले, दोपहर एक बजे, उसके पुत्र का बुखार उतर गया था। यह वही घड़ी थी जब यीशु ने उससे कहा था कि उसका पुत्र जीवित है। इस

के परिणाम स्वरूप, उस कर्मचारी ने और उसके सारे घराने ने विश्वास किया।

पढ़िए यूहन्ना 4:1-15

1. **क.** यीशु ने कुएँ पर सामरी स्त्री से भेंट की इस परिस्थिति की कल्पना कीजिए और उसका वर्णन कीजिए (4:3-6)।

   टिप्पणी: *छठा घंटा* दोपहर का समय होता है।

   ख. यीशु ने उससे बात की इसका सामरी स्त्री को क्यों इतना आश्चर्य हुआ (7-9)?

   संदर्भ: टिप्पणी 1, *सामरी,* पृष्ठ 45

2. यीशु ने अपने विषय में उस स्त्री की उत्सुकता को कैसे बढ़ाया (4:10-12)?

3. यीशु ने क्या दे सकने का दावा किया (4:13-14)?

पढ़िए यूहन्ना 4:16-26

4. यीशु ने यह प्रगट करते हुए कि वह उसके व्यक्तिगत जीवन को जानता था, क्या प्राप्त किया (4:16-18)?

5. **क.** यीशु ने उस स्त्री को आराधना के विषय में क्या सिखाया (4:23-24)?

   संदर्भ: टिप्पणी 2, *तुम जिसे जानते नहीं उसका भजन करते हो,* पृष्ठ 46

   ख. यीशु ने परमेश्वर को एक सिद्ध स्वर्गीय *पिता* बताया। यीशु के आगमन के पहले परमेश्वर के लिए इस शब्द का प्रयोग नहीं किया जाता था। यीशु ने परमेश्वर तथा परमेश्वर से संबंध के विषय में किस कल्पना का परिचय दिया?

6. जब उस स्त्री ने आनेवाले मसीह की बात आरंभ कर दी, तब यीशु ने उसे क्या बताया (4:26)?

टिप्पणी: यह पहला लिखित संकेत है जब यीशु ने मसीह होने के विषय में सीधे-सीधे कह दिया। वह सामान्यत: स्वय को "*मनुष्य का पुत्र*" कहा करता था। (देखिए टिप्पणी 4, *मनुष्य का पुत्र*, पृष्ठ 22)

पढ़िए यूहन्ना 4:27-42

7. यीशु को किस प्रोत्साहन ने सामर्थ्य दी थी, जिसका अनुभव उसके शिष्य भी करें ऐसी उसकी इच्छा थी? (4:34-35)?

8. उस कुएँ पर की स्त्री की गवाही का परिणाम क्या हुआ (4:39-42)?

पढ़िए यूहन्ना 4:43-54

9. **क.** राजा के कर्मचारी ने यीशु के द्वारा कहे गए शब्दों में अपना विश्वास कैसे प्रगट किया (4:46ख-47,50)?

   ख. राजा के कर्मचारी के विश्वास का परिणाम क्या हुआ (4:50-53)?

   टिप्पणी: पढ़िए 4:54; इस समय के पहले भी यीशु ने अनेक आश्चर्यकर्म किए थे (2:23; 3:2)। यूहन्ना इसे काना में किया गया दूसरा आश्चर्यकर्म कहता है।

बुनियाद पर बनाना

पूर्णत: जाने गए और पूर्णत: प्रिय हुए

उस कुएँ पर वह स्त्री आश्चर्शचकित थी जब एक यहूदी ने उससे - एक सामरी स्त्री से - बात करने के लिए स्वयं को वास्तव में नम्र किया था। उसे और भी कितना

आश्चर्य हुआ होगा जब उसे पता चला होगा कि वह उसके लज्जाजनक भूतकाल तथा वर्तमान की असफलताओं के विषय में सब कुछ जानता था। तौभी यीशु ने उसके साथ आदरपूर्वक बात की, और उससे ऐसे व्यवहार किया कि उसका भी मूल्य है, यहां तक कि उसने उस पर प्रगट कर दिया कि वही प्रतिज्ञात मसीह था।

हम सब में एक इच्छा होती है कि कोई हमें पूर्णत: जाने, और हम से पूर्ण प्रेम करे। हम सब चोट खाए हुए और त्रुटिपूर्ण लोग हैं। जबकि हमारे आस-पास का समाज हमें प्रोत्साहित करता है कि हम अपनी त्रुटियों को छिपाएं ताकि लोग हमें स्वीकार करें, यीशु हमें वैसे ही अपनाता है जैसे हम हैं, और वैसे देखता है जैसे हम बन सकते हैं। आइए हम इस **एक** के विषय में और अधिक जानें, जो हमें हम से अधिक जानता है और तौभी हम से पूर्णत: प्रेम करता है।

1. **क.** जब हमारी त्रुटियां उजागर होती हैं, तब हमें क्या लगता है?

   ख. जो उन्हें देखते हैं उनसे हम क्या अपेक्षा करते हैं?

   ग. जब हमारी कमियों के कारण हमारी आलोचना की जाती है, या हमें अस्वीकार किया जाता है, तब क्या होता है?

2. तब क्या होता है, जब हमारी त्रुटियां उजागर होती हैं, परन्तु उन्हें देखनेवाला फिर भी हम से प्रेम ही करता है?

3. 1 कुरिन्थियों 13:4-8क किस प्रकार उस प्रेम का वर्णन करता है जो रचनात्मक होता है, और जो मसीह ने उस कुएँ पर की स्त्री के प्रति दिखाया था?

4. **क.** यीशु ने परमेश्वर के इस प्रेम के विषय में, जो वह असफलताओं और त्रुटियों के रहते हुए भी करता है, एक दृष्टांत बताया था। परमेश्वर के हृदय के विषय में लूका 15:11-24 क्या प्रगट करता है?

   ख. यह दृष्टांत, उस प्रेम को पाने के विषय में हमें क्या बताता है?

5. परमेश्वर की आपसे संबंधित जानकारी के विषय में निम्नलिखित वचन क्या कहते हैं?
भजन संहिता 139:1-4, 13-14, 16

इब्रानियों 4:13

6. बाइबल में मसीह को दिए गए नामों में से एक नाम 'छुड़ानेवाला' है। यह शब्द उस व्यक्ति का वर्णन करता है जो एक बन्दी को छुड़ौती की रकम भरकर मुक्त करता है, या वह जो एक गुलाम को इसलिए खरीदता है कि उसे स्वतंत्र कर दे[3]। निम्नलिखित वचनों में यीशु को हमारा छुड़ानेवाला कैसे बताया गया है?
कुलुस्सियों 1:13-14

तीतुस 2:14

7. **क.** इसी को दूसरे शब्दों में कहिए: मसीह के द्वारा दिया जानेवाला छुटकारा "टूटी बातों को जोड़ता है" - जैसेकि: हमारा परमेश्वर से टूटा संबंध, हमारे जीवन के टूटे हिस्से, कठिन परिस्थितियां जिनका हमें सामना करना होता है। वह टूटे हुओं को छुड़ाने के लिए आया है, जैसे कि, कुएँ पर की वह स्त्री। एक प्रेमपूर्ण छुड़ानेवाले के रूप में, यीशु ने इस स्त्री के लिए क्या चित्रण किया, जब उसने उस जीवन के जल के विषय में बताया जो उसके भीतर "उमड़ता" रहेगा?

ख. छुड़ानेवाले प्रेम के अंतर्गत, मसीह क्या चाहता है कि हम आज क्या अनुभव करें?
यूहन्ना 8:32

यूहन्ना 10:10ख

रोमियों 8:28

रोमियों 15:13

इफिसियों 3:19

8. सामरियों के समान, तथा यूहन्ना 4:46-53 में उल्लेखित उस अन्यजातीय कर्मचारी के समान, हम किस प्रकार उस छुड़ानेवाले प्रेम का अनुभव कर सकते हैं जो मसीह देता है, जबकि वह हमें हमारी असफलताओं के लिए पूर्णत: जानता है?
यूहन्ना 4:10ख, 13-14

यशायाह 55:1, 6-7

सारांश

9. मसीह आपके जीवन और परिस्थितियों के संबंध में जो जानकारी तथा समझ रखता है, उसके विषय में आपने इस पाठ में क्या देखा है?

10. मसीह ने कुएँ पर उस स्त्री के साथ जो व्यवहार किया उसके द्वारा आपने उसके प्रेम तथा स्वीकृति के विषय में क्या देखा?

11. आप अपने जीवन में यीशु के द्वारा कौनसा छुटकारा पाना चाहेंगे?

पाठ ५ टिप्पणियाँ

1. *सामरी* । यहूदी लोग सामरियों के प्रति अत्यधिक अरुचि रखे हुए थे। ये लोग उन बस्तियों में बसनेवाले लोगों के वंशज थे जिन्हें अश्शूर के राजाओं ने पलस्तीन देश में इस्राएल के उत्तरी राज्य के ईसा पूर्व 721 में हुए पतन के बाद बसाया था। उनके मिश्रित रक्त (यहूदियों के साथ किए गए विवाह के फलस्वरूप) तथा उस धर्म के कारण जिसमें मूर्तिपूजक तथा इब्री विश्वास की मिलावट थी, यहूदी लोग, सामरियों को अन्यजातियों से भी बदतर समझते थे। यह भावना दोनों

ओर से थी: सामरी, यहूदियों से मिलनेवाले तिरस्कार तथा उनकी भूमि पर किए गए अतिक्रमण के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करते रहते थे। (गलील प्रांत एक समय सामरिया का भाग था।) इस कारण, सामरी प्राय: उनके क्षेत्र से गुजरनेवाले यहूदियों को टिकने का स्थान देने से इनकार करते थे, और यहूदी प्राय: यरदन की पूर्व दिशा से यात्रा करते थे ताकि सामरिया से होकर जाना टालें।

2. *तुम जिसे नहीं जानते उसका भजन करते हो* (4:22)। पवित्रशास्त्र को यहूदियों ने अधिक पूर्णता से सुरक्षित रखा था। सामरियों के बाइबल में मात्र पंचग्रंथ, या पुराना नियम की प्रथम पांच पुस्तकें ही थीं। जबकि वे परमेश्वर की ही आराधना करते थे, तौभी इस एक सच्चाई ने कि उन्होंने भविष्यद्वक्ताओं द्वारा किए गए अधिकतर प्रकाशन को स्वीकार नहीं किया था, उनके परमेश्वर-संबंधी ज्ञान को सीमित कर दिया था।

3. *वाईन्स एक्स्पोजिटरी डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एण्ड न्यू टेस्टामेन्ट वर्ड्स,* पृष्ठ 263

--0--

पाठ ६

यरूशलेम की यात्रा

यूहन्ना 5

यीशु, गलील में कुछ समय तक सेवकाई करने बाद, यहूदियों के एक वार्षिक पर्व में भाग लेने के लिए, यरूशलेम को गया। यरूशलेम में बेतहसदा नामक एक कुण्ड था, जहां अन्धे, लंगड़े और सूखे अंगवाले आश्चर्यजनक चंगाई की आशा में पड़े रहते थे। उस कुण्ड के पास यीशु ने एक मनुष्य को देखा, जो अड़तीस वर्ष से लंगड़ा था। प्रभु के, "उठ, अपनी खाट उठाकर चल फिर" इन शब्दों के द्वारा वह मनुष्य उठने और चलने के योग्य हो गया। जैसे ही भीड़ लगने लगी, यीशु वहां से निकल गया, और वह मनुष्य यह भी न जान सका कि उसे किसने चंगा किया था।

उस चंगे हुए व्यक्ति के साथ आनंद मनाने के बजाय यहूदियों[1] ने इस बात का विरोध किया कि उसने सब्त के दिन अपनी खाट उठाई। ("गुरुजनों की परम्परा"[2] के अनुसार किसी को भी सब्त के दिन कोई भी बोझ उठाने की मनाही थी।) उस मनुष्य ने उन्हें बताया कि जिसने उसे चंगा किया था उसीने उसे वैसा करने की आज्ञा दी थी।

कुछ समय बाद, यीशु ने मन्दिर में उस मनुष्य को पहचानकर उसे प्रोत्साहित किया कि जबकि वह शारीरिक रीति से चंगा हो गया था, वह अपने पापों से फिरे और आत्मिक रीति से चंगा हो जाए। कुछ लोग यह मानते हैं कि "फिर से पाप मत करना, ऐसा न हो कि इससे कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े," ये शब्द दर्शाते हैं कि यीशु जानता था कि उस मनुष्य का लंगड़ापन उसके किसी गलत काम का परिणाम था। चाहे जो हो, यीशु की स्पष्ट चिंता उस मनुष्य के आत्मा के विषय में थी।

इसके बाद, उस मनुष्य ने अधिकारियों से कह दिया कि उसे चंगा करनेवाला व्यक्ति यीशु था। यह जानते हुए कि यीशु इस बात से अवगत था कि उसने उनके सब्त के नियमों को तोड़ा था, उन यहूदी अगुवों ने यीशु के विरुद्ध द्वेषपूर्ण अभियान आरंभ कर दिया। उनके हमलें अगले डेढ़ वर्ष तब तक चलते रहे जब तक उसे क्रूस पर न चढ़ा दिया गया।

परन्तु यीशु ने इस संघर्ष का लाभ, अपने विरोधियों को, वह कौन था इस विषय में शिक्षा देने के लिए उठाया; और उसने जो कुछ बताया उसमें से किसी भी बात ने उन्हें प्रसन्न नहीं किया। उसने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया था, जो मात्र अपने पिता की उन इच्छाओं के अनुरूप ही काम करता था जिन्हें पिता उसे प्रत्यक्ष बताता

था। यीशु ने दावा किया कि पिता-पुत्र के इस रिश्ते में उसे वह सामर्थ्य और अधिकार दिया गया था कि वह जीवन दे, मनुष्य के पापों का न्याय करे और उसका वैसा ही आदर किया जाए जैसे उसके भेजनेवाले पिता का होता है। यीशु ने घोषित किया कि जो कोई पुत्र के द्वारा कहे गए पिता के शब्दों पर विश्वास करेंगे उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं होगी और वे अनंत जीवन पाएंगे। उसने उन्हें बताया कि भविष्य में लोग मृत्यु में से जीवन[3] में जी उठेंगे क्योंकि वह पिता का काम कर रहा था।

इन शब्दों ने, यहूदी अगुवों के यीशु को मारने के संकल्प को और अधिक बढ़ा दिया। तथापि, यीशु अपने दावों का समर्थन करनेवाले प्रमाण देकर उनके सत्य का इनकार करने के प्रयासों को तोड़ता रहा। एक प्रभावकारी भविष्यद्वक्ता यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने गवाही दी थी कि यीशु ही मसीह और परमेश्वर का पुत्र था। जो चंगाई के आश्चर्यकर्म यीशु करता था वे परमेश्वर के साथ के बिना नहीं किए जा सकते थे, और वे परमेश्वर की ओर से प्रमाण थे कि उसके पुत्र के दावे सही थे। यीशु के विषय में, उसके बपतिस्मा के समय तथा सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में, पिता ने स्वयं गवाही[4] दी थी, और पवित्रशास्त्र स्वयं ऐसी विशिष्ठ जानकारी देते थे जिससे उसे मसीह[5] के रूप में पहचाना जानेवाला था।

तब यीशु ने, यहूदी अगुवों के मनों को पहचानते हुए, उनके उस घमण्ड का सामना किया जो उन्हें परमेश्वर तथा उसके सत्य के प्रति अंधा कर रहा था। उसने उन्हें बताया, "मैं तुम्हें जानता हूं कि तुम में परमेश्वर का प्रेम नहीं। तुम जो एक दूसरे से आदर चाहते हो और वह आदर जो अद्वैत परमेश्वर की ओर से है, नहीं चाहते, किस प्रकार विश्वास कर सकते हो?" इसके अतिरिक्त, यीशु ने यह भी कहा कि मूसा ने भी, जो महान व्यवस्था देनेवाला था और जिससे यहूदी अगुवे अपने आप को बड़े घमण्ड के साथ जोड़ते थे, मसीह के विषय में भविष्यवाणी[6] लिखी थी जो अंत में उन्हें दोषी ठहराएगी।

पढ़िए यूहन्ना 5:1-18

1. यीशु ने जिस अपंग को चंगा किया उसकी दशा कैसी थी? किस बात ने यीशु को उसकी मदद करने की प्रेरणा दी होगी (5:5-7)?

2. जैसे ही उस चंगे हुए मनुष्य के पास भीड़ लगने लगी, यीशु वहां से हट गया। यहूदियों का ध्यान किस बात पर केंद्रित था (5:10)?

संदर्भः पृष्ठ 53 पर टिप्पणी 1, *यहूदी*, तथा टिप्पणी 2, *"गुरुजनों की परम्परा"*

3. यहूदी अगुवों ने क्या करना आरंभ किया और क्यों (5:16-18)

पढ़िए यूहन्ना 5:19-30

4. यीशु ने, पिता के साथ के अपने संबंध का वर्णन कैसे किया (5:19-20)?

5. यीशु ने क्या दावा किया कि पिता ने उसे क्या करने की सामर्थ्य और अधिकार दिया था (5:21-22, 27)?

संदर्भः टिप्पणी 3, *मृत्यु से जीवन में,* पृष्ठ 53

6. यीशु ने किस आदर का दावा किया (5:23)?

7. यीशु ने, उसमें विश्वास करनेवाले को क्या देने का दावा किया (5:24-26)?

टिप्पणीः वचन 25 मात्र भविष्य में होनेवाले पुनरुत्थान की ओर ही संकेत नहीं करता जिसमें विश्वासियों को अविनाशी शरीर प्राप्त होंगे (1 कुरिन्थियों 15:42-54), परन्तु इस सच्चाई की ओर भी कि यीशु अभी इसी समय जीवन देता है। आत्मिक रूप से मरे हुए लोग, जो उसका शब्द सुनते हैं, उससे जीवन प्राप्त करते हैं। द *एनआइव्ही स्टडी बाइबल,* पृष्ठ 1604

संदर्भः टिप्पणी 6, *विश्वासी के लिए मृत्यु,* पृष्ठ 122

पढ़िए यूहन्ना 5:31-47

8. यहूदी अगुवों का सामना करते समय यीशु ने स्वयं परमेश्वर के बराबर (5:18), जीवन का स्रोत (5:26), और अनंत जीवन देने योग्य (5:26), और पापों का न्याय करनेवाला होने का (5:27) स्पष्ट दावा किया था।

यीशु ने ईश्वरत्व के प्रति अपने दावों का आधार मात्र अपनी ही गवाही को नहीं माना था। उसने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की गवाही की ओर (5:23) और उन आश्चर्यकर्मों की ओर भी संकेत किया था जिन्हें पिता उसके द्वारा करवाता था (जैसे कि अपंग मनुष्य को चंगा करना) (5:36)। पिता के शब्द[4] (5:37), मसीह के विषय में पवित्रशास्त्र की भविष्यवाणी[5] (5:39) तथा मूसा की भविष्यवाणी[6] (5:46) ने भी यीशु के दावों को सत्य प्रमाणित किया था।

इन प्रमाणों के होते हुए भी, यहूदी अगुवे विश्वास करनेवाले नहीं थे। यीशु ने क्यों कहा कि उनके पास उसे पहचानने का मन नहीं था?

यूहन्ना 5:37-38

यूहन्ना 5:39-40

यूहन्ना 5:41-44

बुनियाद पर बनाना

घमण्ड से बचाव करना

उन दिनों में यहूदी अगुवे लोगों पर अत्यधिक प्रभुता रखते थे। इसमें शंका नहीं कि कुछ-एक अगुवे विश्वासयोग्य थे, परन्तु अधिकांश अपनी धार्मिकता का दिखावा करते, और अपने आत्मिक अगुवेपन के पद का उपयोग प्रभुता, प्रतिष्ठा एवं घमण्ड की लत को तृप्त करने के लिए करते थे।

यीशु की बढ़ती प्रसिद्धि से धार्मिक अगुवों के लिए उनके लोगों पर के नियंत्रण को खतरा पैदा हो गया था। यीशु मात्र परमेश्वर के समर्थन की चिंता करता था। वह साधारण जीवन जीता था और न उसकी कुछ सम्पत्ति थी और वह जितना गरीब एवं साधारण लोगों में उतना ही धनी लोगो के मध्य भी सहजता से उठता-बैठता था। उसके द्वारा किए गए आश्चर्यकर्मों ने तथा उसकी अधिकारपूर्ण, न्यायसंगत शिक्षा ने लोगों को उसकी ओर आकर्षित किया था। वे उससे प्रेम करते थे। परन्तु धार्मिक अगुवे यीशु के विरुद्ध अधिकाधिक क्रोधित ही होते गए, क्योंकि उसने उनके पाखण्ड को उजागर किया था, और परमेश्वर का पुत्र होने के कारण, आत्मिक रीति से उनसे बढ़कर होने का दावा किया था।

यदि यहूदी अगुवे लालच एवं सामाजिक प्रतिष्ठा के वश में न होते, तो उन्होंने उस मसीह को पहचान लिया होता जिसे परमेश्वर ने उनके पास भेजा था। यदि उनका परमेश्वर के

प्रति प्रेम घमण्ड और अभिमान से नष्ट न हुआ होता, तो उन्होंने परमेश्वर की वाणी को सुना होता जब यीशु उनके सम्मुख खड़ा होता था। यदि वे मनुष्यों की प्रशंसा, जिसने उन्हें अधिकार और नियंत्रण दिलाया था, के बजाय परमेश्वर के समर्थन में रुचि रखे होते, तो वे अपने उद्धारकर्त्ता को पहचानकर उसे स्वीकार कर चुके होते।

यहां हमारे लिए एक बड़ी चेतावनी है। हम भी आसानी से एक विशिष्ठ छवि या प्रतिष्ठा से नियंत्रित हो सकते हैं, जो हमें औरों से बेहतर होने का या औरों पर नियंत्रण रखे रहने का एहसास दिलाती है। हमारे चारों ओर की दुनिया, या हमारे परिवार की विरासत भले ही ऐसी प्रथाओं का साथ देती होगी, परन्तु परमेश्वर का इससे कोई संबंध नहीं है। वह जानता है कि घमण्ड उस सच्चे तृप्तिकर अनुभव को पूर्णत: व्यर्थ कर देता है, जो परमेश्वर को, तथा औरों को, जानने एवं प्रेम करने से मिलता है।

किसी के भी प्रति अभिमान एवं स्वयं को उससे श्रेष्ठ समझने की भावना एक खतरे का संकेत है कि हम अपने कदम रोक लें, और, परमेश्वर की सहायता से, अपने चुनाव बदल दें। आइए हम इन महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों के विषय में पवित्रशास्त्र से कुछ देखें।

1. आप दिखावा या अभिमान की परिभाषा कैसे करेंगे?

2. **क.** आप अपने चारों ओर के समाज में कहां-कहां अमीरी की अकड़ एवं अभिमान को देखते हैं?

   ख. अमीरी की अकड़ को कैसे छल-कपट के साथ उपयोग में लाया जाता है? घमण्ड एवं अभिमान किसी व्यक्ति के विषय में क्या प्रगट करते हैं?

   ग. घमण्ड एवं अभिमान कैसे परिवार, कार्य-क्षेत्र या समाज में रिश्तों को प्रभावित करते हैं?

3. बाइबल हमें अभिमान और घमण्ड के किन परिणामों के विषय में चेतावनी देती है?

   नीतिवचन 11:2

   नीतिवचन 16:18

   याकूब 4:6ख

4. **क.** धार्मिक अगुवों ने यह प्रकट कर दिया था कि घमण्ड एक विश्वासी कहलानेवाले व्यक्ति में पाखण्ड को उत्पन्न करता है। यीशु ने पाखण्ड को कैसे स्पष्ट किया?
मत्ती 23:28

ख. निम्नलिखित वचनों में दिए गए कौनसे सिद्धान्त पाखण्ड को पहचानने और उससे बचने में हमारी सहायता कर सकते हैं?
भजन संहिता 36:2

मत्ती 6:24

याकूब 1:22, 25

रोमियों 12:2

5. **क.** यीशु, जो एक पूर्ण परमेश्वर तथा पूर्ण मनुष्य था, अभिमान से कैसे दूर रहा?
मत्ती 20:28

यूहन्ना 5:30, 41

टिप्पणी: "मैं भीड़ के समर्थन में रुचि नहीं रखता" (5:41)। अंग्रेजी बाइबल का द *मेसेज* अनुवाद

ख. बाइबल हमें अपने दूसरों के साथ के रिश्तों में अभिमान और स्वार्थ से दूर रहने के क्या निर्देश देती है?
लैव्यव्यवस्था 19:15

फिलिप्पियों 2:4-8

कुलुस्सियों 3:12,14

सारांश

6. **क.** क्या आपके जीवन में कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें कभी-कभी आप अभिमान या औरों से श्रेष्ठ होने की भावना से संघर्ष करते हैं, या कभी नियंत्रण पाने के लिए पैसे या पद का उपयोग करने की परीक्षा में पड़ते हैं?

   ख. परमेश्वर चाहता है कि आप उसने आपको दिए वरदानों और प्रतिभाओं को महत्त्व दें, परन्तु परमेश्वर के अनुसार कौनसा संतुलन आपको सही तृप्ति की ओर ले जाएगा?

7. मसीह यीशु के द्वारा परमेश्वर के साथ तृप्तिकारक संबंध को अनुभव करने में आपका अभिमान एवं दिखावा कैसे रुकावट बन सकते हैं?

8. घमण्ड के विषय में कौनसी बहुत-ही स्पष्ट चेतावनी आपको इस पाठ से मिलती है?

पाठ ६ टिप्पणियाँ

1. *यहूदी* (5:10) - यह शब्द यूहन्ना ने अपने सुसमाचार में 70 बार प्रयोग किया है। सामान्यत: इसका अर्थ नगर के अगुवे होता है और अधिक बार उन यहूदी अगुवों की ओर संकेत करता है जो यीशु का विरोध करते थे।

2. *"गुरुजनों की परम्परा"* ने ऐसे 39 प्रकार के कामों को अलग किया था जो सब्त के दिन नहीं किए जाने थे; उनमें से 39वां काम 'किसी बोझ को रहने के एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर ले जाना' था। इस मापदण्ड के अनुसार उस मनुष्य ने अपनी खाट उठाकर चलने के कारण सब्त के दिन का नियम तोड़ा था। आरंभ में यीशु का धार्मिक अगुवों के साथ गंभीर सामना हुआ था क्योंकि उसने सब्त के दिन की व्यवस्था के पारम्परिक अर्थ का उल्लंघन किया था (मूसा की व्यवस्था का नहीं परन्तु उसके उस अर्थ का जो उन्होंने ठहराया था)। जब यीशु ने स्वयं प्रभु होने का, अर्थात् सब्त के दिन के ऊपर परम प्रभुता रखने का, दावा किया था, तब उसे अपने विरोधियों से भयंकर शत्रुता का सामना करना पड़ा था (मरकुस 2:28)। देखिए: टिप्पणी 2 को भी, *वह सब्त के दिन का पालन नहीं करता,* पृष्ठ 104

3. *मृत्यु में से जीवन में* - "यीशु की जीवनदायक सामर्थ किसी को भी कब्र से

बाहर (11:43), हर एक को उनकी कब्रों से (5:28-29), या किसी को भी आत्मिक मृत्यु से अनंत जीवन में (5:24) बुला सकती है।" *वाल्वूर्ड एण्ड झक्, द बाइबल नॉलेज कमेन्टरी,* पृष्ठ 291

4. *पिता की गवाही* (5:37) - पिता ने अपने पुत्र के विषय में उसके बपतिस्मा के समय ऐसी गवाही दी थी जो सुनी और देखी जा सकती थी (देखिए: मत्ती 3:17; मरकुस 1:10; यूहन्ना 1:32-33), परन्तु परमेश्वर का देहधारी वचन होने के नाते (यूहन्ना 1:1-2, 14) यीशु भी स्वयं को उन बातों का प्रतिरूप कहता था जो परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र में भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उसके विषय में कही थीं।

5. *यीशु में पूरी हुई मसीह-संबंधित भविष्यवाणी* - पुराना नियम की मसीह-संबंधित भविष्यवाणियों ने एक राजा एवं दु:ख-सहनेवाले मसीह का वर्णन किया था। यहूदियों ने राजकीय मसीह पर ध्यान केंद्रित करना पसंद किया था जो इस्राएल को *एकमात्र* विश्वव्यापी अधिकार के रूप में स्थापित करेगा (तुलना कीजिए: भजन 2:6-8; यशायाह 9:6-7; 42:1-4; दानिय्येल 2:44; 7:13-14)। यीशु ने कहा था कि उसके देहधारण के दु:ख उठाने के बाद वह दूसरी बार पुन: आएगा (तुलना कीजिए: मत्ती 26:64; लूका 21:27; प्रेरितों के काम 1:11; इब्रानियों 9:28), और मसीह-संबंधित राजकीय भविष्यवाणियों को पूर्णत: पूरी करेगा। यीशु के पृथ्वी पर के प्रथम आगमन में पूरी हुईं प्रमुख मसीह-संबंधित भविष्यद्वाणियां निम्नलिखित हैं -

पवित्रशास्त्र की मसीह-संबंधित प्रमुख भविष्यवाणियां, जो यीशु में पूरी हुईं

भविष्यवाणी का वर्णन	भविष्यवाणी	पूर्णता
"स्त्री का वंश"	उत्पत्ति 3:15	गलातियों 4:4
इब्राहीम का वंशज	उत्पत्ति 18:18	प्रेरितों 3:25
इसहाक का वंशज	उत्पत्ति 17:19	मत्ती 1:2
याकूब का वंशज	गिनती 24:17	लूका 3:34
यहूदा के वंश से	उत्पत्ति 49:10	लूका 3:33
दाऊद का वंशज	यशायाह 9:7	मत्ती 1:1
जन्म का स्थान	मीका 5:2	मत्ती 2:1
कुंवारी से जन्म	यशायाह 7:14	मत्ती 1:18
गलील में सेवकाई	यशायाह 9:1-2, 6	मत्ती 4:12-16

एक भविष्यद्वक्ता के रूप में	व्यवस्थाविवरण 18:15	यूहन्ना 4:14
यहूदियों द्वारा उसका अस्वीकार	यशायाह 53:3	यूहन्ना 1:11
उसके कुछ विशेष गुण	यशायाह 11:2	लूका 2:52
उसका विजय-प्रवेश	जकर्याह 9:9	यूह 12:13-14
चांदी के 30 सिक्कों के लिए उसका विश्वासघात	जकर्याह 11:12	मत्ती 26:15
कुम्हार के खेत के लिए वह पैसा लौटाना	जकर्याह 11:13	मत्ती 27:6-7
दोष लगाए जाने पर शांत रहना	यशा. 53:7	मत्ती 26:62-63
मुंह पर थूका और थप्पड मारा जाना	यशायाह 50:6	मरकुस 14:65
औरों के लिए दु:ख सहना	यशायाह 53:4-5	मत्ती 8:16-17
पापियों के संग क्रूस पर चढ़ाया जाना	यशायाह 53:12	मत्ती 27:38
हाथों और पैरों का छेदा जाना	भजन संहिता 22:16	यूहन्ना 19:29
ठट्ठा और अपमान सहना	भ. सं. 22.:6-8	मत्ती 27:39-40
उसकी पसली में बेधा जाना	जकर्याह 12:10	यूहन्ना 19:34
सिपाहियों का उसके कपड़े बांट लेना	भजन संहिता 22:18	मरकुस 15:24
धनी के साथ दफनाया जाना	यशा. 53:9	मत्ती 27:57-60
पुन: जी उठना	भजन संहिता 16:10	मत्ती 28:9
स्वर्गारोहण	भजन संहिता 68:18-20	लूका 24:50-51

टिप्पणी: कभी-कभी गैर-यहूदियों के लिए इन भविष्यवाणियों को समझना कठिन होता है परन्तु यहूदियों के लिए वे स्पष्ट थीं।

6. *जिस भविष्यवाणी को मूसा ने लिखा था* उसे यहूदियों ने समझा था कि वह मसीह के संबंध में होगी। इन में उपरोक्त सूची में दिए गए उत्पत्ति, गिनती तथा व्यवस्थाविवरण के हवाले सम्मिलित हैं (जो यहां *तिरछे टाइप* में छपवाए गए हैं)। उसके लेखन में निर्गमन 12:21 तथा लैव्यव्यवस्था 16:5 भी सम्मिलित था जो उन बलिदानों की ओर संकेत करता है जो परमेश्वर के मेमने की परछाई-स्वरूप थे (तुलना कीजिए: टिप्पणी 2, *परमेश्वर का मेमना*, पृष्ठ 21), तथा गिनती 21:9 भी, जिसका उल्लेख यूहन्ना 3:14 में किया गया है (तुलना कीजिए: टिप्पणी 6, *ऊंचे पर चढ़ाया गया सांप*, पृष्ठ 38)।

--0--

पाठ ७ यीशु भूखे लोगों के लिए प्रबन्ध करता है

यूहन्ना 6:1-34

यीशु की दूसरे वर्ष की सेवकाई के अंतिम दिनों में, वह और उसके शिष्य गलील की झील के पार उत्तर-पूर्व में पहाड़ों पर एकांत में गए। परन्तु उनका आराम अधिक समय तक नहीं रहा, क्योंकि यीशु के बीमारों को चंगा करने के आश्चर्यकर्मों को इतने अधिक लोग जानते थे कि वे उसके और उसके शिष्यों के पीछे हजारों की संख्या में चले आए थे। भोजन के समय, यीशु ने बारहों से पूछा कि वे उन लोगों को भोजन कैसे खिलाएंगे। इसमें कोई शंका नहीं कि ऐसी भारी जिम्मेवारी की कल्पना मात्र से ही घबरा गए शिष्यों के पास यीशु के लिए कोई उत्तर नहीं था।

तब एक छोटे लड़के ने उस आवश्यकता को पूरा करने हेतु पांच रोटी और दो छोटी मछलियाँ दे दीं। यीशु ने निर्देश दिए कि सब को घास पर बैठाया जाए, (5000 पुरुषों के साथ-साथ स्त्रियाँ और बच्चे भी थे, देखिए: मत्ती 14:21), तब उसने परमेश्वर को उस भोजनवस्तु के लिए धन्यवाद दिया, और रोटी और मछलियों को बढ़ाता गया कि भीड़ में से *प्रत्येक को* भोजन मिले! सब खाकर तृप्त हो जाने के बाद बची हुई रोटियों से बारह टोकरियाँ भरी थीं।

लोग उत्तेजित थे, और उन्होंने यीशु को अपना राजा बनाने का निर्णय लिया। यह जानकर कि लोगों का ध्यान उस समय भी यीशु उन्हें भौतिक एवं शारीरिक रीति से क्या दे सकता था इसी पर था, और न कि आत्मिक लाभ पर, वह निकलकर पहाड़ पर चला गया कि अकेला रहे।

उसी संध्या, शिष्य, यीशु के बिना ही, नाव में सवार होकर गलील की झील से पार कफरनहूम जाने के लिए निकल पड़े। आँधी चली, और झील में बहुत लहरे उठने लगीं। परन्तु शिष्य तब और भी अधिक डर गए जब उन्होंने यीशु को, जिसे उन्होंने भूत समझ लिया था, लहरों पर चलकर उनकी ओर आते देखा! (देखिए: मरकुस 6:49)। यीशु ने उनकी ओर आते हुए कहा, "मैं हूँ! डरो मत।" यीशु नाव में चढ़ गया, और वे तुरन्त अपने गंतव्य स्थान पर पहुँच गए।

इस बीच, भीड़ यीशु को खोजती रही, और अंत में उन्होंने उसे कफरनहूम में पाया। वे यीशु से और आश्चर्यकर्मों का लाभ उठाना चाहते थे। परन्तु यीशु ने उनका ध्यान दान से हटाकर देनेवाले की ओर मोड़ने का प्रयास किया। उसके आश्चर्यकर्मों का

उद्देश्य उनकी अगुवाई इस ओर करना था कि वे परमेश्वर के पुत्र एवं जीवन की रोटी में विश्वास करें। उसकी प्रतिज्ञा थी कि उससे जोड़ा गया संबंध जीवन को अनंतकाल तक संभालेगा।

पढ़िए यूहन्ना 6:1-15

1. यीशु के पीछे चलनेवाले लोगों का मन किन बातों में लगा था (6:2, 14-15)?

   टिप्पणी: *भविष्यद्वक्ता* (6:14) वह था जिसकी भविष्यवाणी मूसा ने व्यवस्थाविवरण 18:15 में की थी।

2. **क.** आपके विचार से यीशु ने अपने शिष्यों से क्यों पूछा था कि वे भीड़ को भोजन कहां से देंगे (6:5-9)?

   ख. उन हजारों लोगों को भोजन खिलाने के लिए शिष्यों को क्या करना होता (6:10-13)?

3. यीशु ने लोगों को क्या प्रत्युत्तर दिया (6:15)?

पढ़िए यूहन्ना 6:16-21

4. शिष्यों ने, कुछ-ही घंटों के भीतर, यीशु के हजारों को भोजन खिलाने के और तत्पश्चात् आंधी के समय गलील की झील पर चलने के आश्चर्यकर्मों को देखा था। आपके विचार से इन घटनाओं ने शिष्यों को यीशु के विषय में क्या सिखाया?

   संदर्भ: टिप्पणी 4, *मनुष्य का पुत्र*, पृष्ठ 22

पढ़िए यूहन्ना 6:22-34

5. **क.** भीड़ का यीशु को खोजने का उद्देश्य क्या था इसके विषय में यीशु ने क्या अंदाज लगाया था, और वह उनसे क्या अपेक्षा रखता था (6:26-27)?

ख. यीशु ने किन दो प्रकार की रोटियों की तुलना की (6:27, 30-33)?

ग. यीशु ने लोगों के उद्देश्य के विषय में जो कहा था उसे लोगों के प्रत्युत्तर ने कैसे सही ठहराया था (6:30, 34)?

बुनियाद पर बनाना
शरीर एवं आत्मा के लिए प्रबन्ध

हम सब ऐसी परिस्थितियों का सामना करते हैं जब काम बहुत-ही भारी या फिर आवश्यकता बहुत-ही बड़ी दिखाई देती है। ऐसे समयों के लिए, यीशु द्वारा हजारों भूखों को भोजन खिलाने और तत्पश्चात् आंधी से भरी झील पर भयभीत शिष्यों के पास पानी पर चलकर पहुँचने की घटनाओं में अद्‌भुत तात्पर्य छिपे हैं। एक स्पष्ट तात्पर्य यह है कि हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परमेश्वर असंभव कामों को भी कर सकता है। जब हमारी मानवीय क्षमता या स्रोत कम पड़ते हैं, तब भी वह समस्या परमेश्वर के लिए कठिन नहीं होती है।

परन्तु एक और महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है जो इन घटनाओं से सीखना है। वह यह कि परमेश्वर हमारी आत्मा की भीतरी आवश्यकता को प्राथमिकता देता है। यह बात यीशु की उस चिंता में दिखाई देती है कि वह चाहता है कि लोग उसे जानने और उसके साथ चलने पर ध्यान केंद्रित करें, और उसे मात्र बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति करनेवाला और सांसारिक समस्याओं को कम करनेवाला ही न समझे। हमारी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने से परे जो महान तृप्ति यीशु देता है वह परमेश्वर के साथ की वह घनिष्ठता है, जो आत्मा के भोजन हेतु स्रोत और हृदय की भावनात्मक आवश्यकताओं के लिए भण्डार है।

अपने *तृप्ति की तलाश* के अध्ययन को जारी रखते हुए, आइए हम इस बात को ध्यान

से देखें कि परमेश्वर हमारी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है इस विषय में पवित्रशास्त्र क्या कहता है।

1. भीड़ के पास कोई साधन नहीं था कि अपने लिए भोजन की व्यवस्था करें। झील पर उस तूफानी रात शिष्य खतरे में थे। हम अपने प्रतिदिन के जीवन में किन घबरा देनेवाले अनुभवों का सामना करते हैं?

2. **क.** शिष्यों ने भूखी भीड़ को खिलाने की समस्या का हल क्या निकाला था जो उन आम तरीकों को दर्शाता है जिन्हें एक मानव अपनी व्याकुल कर देनेवाली भारी परिस्थितियों में काम में लाता है?

   ख. हम प्राय: परमेश्वर के पास जाने के पहले किन बातों की ओर सहायता के लिए दौड़ते हैं?

3. **क.** यीशु की पांच हजार को भोजन खिलाने की घटना असंभव दिखाई देनेवाली परिस्थितियों के विषय में क्या स्पष्टीकरण देती है?

   ख. हम असंभव दिखाई देनेवाली परिस्थितियों में किस बात के प्रति आश्वस्त रह सकते हैं?
   लूका 1:37

   फिलिप्पियों 4:19

4. **क.** वह छोटा लड़का और उसका अल्प दान परमेश्वर के प्रबन्ध के विषय में क्या प्रमाणित करते हैं?

ख. 2 कुरिन्थियों 12:9-10 क्या सलाह देता है?

5. पांच हजार को भोजन खिलाना यह दर्शाता है कि परमेश्वर हमारी प्रतिदिन की आवश्यकताओं की चिंता करता है। उन्हें पूरी करने की प्रभु की क्षमता और इच्छा का वर्णन निम्नलिखित वचनों में कैसे मिलता है -

- *हमारी व्यावहारिक आवश्यकताओं की पूर्ति?*
  भजन संहिता 23:1, 5

  मत्ती 6:31-33

- *हमारी रक्षा संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति?*
  भजन संहिता 91:14-15

  यशायाह 46:4

6. हमें अपनी आवश्यकता के लिए क्या करने का निमंत्रण परमेश्वर देता है?
भजन संहिता 62:8

फिलिप्पियों 4:6-7

7. यीशु जानता था, कि जब तक लोग उसके पास मात्र सांसारिक वस्तुओं की खोज में आएंगे, उनकी सबसे गहन, गम्भीर आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होगी। बाइबल के अनुसार हमारी गहन, गम्भीर आवश्यकताओं की तृप्ति कैसे होगी?
मत्ती 5:6

इफिसियों 3:16-19

1 तीमुथियुस 6:17-19

8. यीशु क्या जानता था, कि जो व्यक्ति यीशु को तथा उसके द्वारा लाए गए सत्य को जानने की इच्छा रखेगा वह क्या पाएगा?
भजन संहिता 37:4

भजन संहिता 112:8क

मत्ती 11:28-29

यूहन्ना 8:32 (भजन संहिता 119:32)

सारांश

9. क्या अभी इस समय आपके जीवन में कुछ ऐसी परिस्थितियां हैं जहां आप को ईमानदारी से यह कहना पड़ रहा है, "यह असंभव है," या "मैं इसे नहीं कर सकता"? पांच हजार को भोजन खिलाने की इस घटना में आपके लिए क्या आशा है?

10. क्या आज आपके जीवन में कोई खतरे से या भय से भरी परिस्थितियां हैं? यीशु की तूफानी झील पर शिष्यों के पास आने की घटना आपसे क्या कहती है?

11. यदि आप यीशु को प्रथम स्थान देने का चुनाव करते हैं तो इन सहायताओं के अलावा वह आपको और कौनसे बड़े उपहार देना चाहता है?

12. यदि इन बातों को आपने कभी जाना होगा, तो यहां आपको क्या याद दिलाया जा रहा है?

--0--

पाठ ८

जीवन की रोटी यीशु

यूहन्ना 6:35-71

बेतहसदा की तराई में यीशु ने हजारों को आश्चर्यजनक रीति से भोजन खिलाया था, और उनमें से अनेक उसे अपना राजा बनाना चाहते थे। यद्यपि यीशु ने उन से बच निकलने का प्रयास किया था, अंततः उन्होंने उसे वापस कफरनहूम में पा लिया।

यह जानकर कि वे उसे राजा मात्र इस कारण से बनाना चाहते थे क्योंकि उसमें उन्हें भोजन और चंगाई देने की क्षमता थी, यीशु ने उन्हें यह समझाया कि जो भोजन वह उन्हें देना चाहता था वह और भी अधिक मूल्यवान था। परमेश्वर ने जंगल में इस्राएलियों के लिए आकाश से जो नाश होनेवाला मन्ना दिया था (व्यवस्थाविवरण 16:4) उसके विपरीत अब जो जीवन देनेवाली रोटी परमेश्वर ने स्वर्ग से भेजी थी वह मृत्यु पर भी सामर्थ्य दे सकती थी। यीशु ने दावा किया कि यह रोटी वह स्वयं था, और उसने घोषणा की कि जो उसे अपने हृदय में राजा बनाते हैं वे उस भोजन को प्राप्त करेंगे जो अविनाशी जीवन को बनाए रखेगा। वह जो उससे जुड़ जाएगा, या प्रतीकात्मक रूप से कहे तो जो "उसके मांस को खाएगा और उसके रक्त को पीएगा,"[1] वह अनंतकाल तक जीवित रहेगा।

जबकि यीशु की बात सुननेवाले यहूदी यह जानते थे कि यीशु उन्हें नरभक्षक होने की सलाह नहीं दे रहा था, वह शब्द-चित्रण उनके लिए, उनकी व्यवस्था के कारण, पूर्णतः घृणास्पद था (देखिए: लैव्यव्यवस्था 17:10-11)। इस कारण, यीशु के अनके शिष्यों ने उसके पीछे चलना छोड़ दिया। तब वह अपने बारह शिष्यों की ओर मुड़कर पूछने लगा, कि क्या वे भी उसे छोड़ देना चाहेंगे? पतरस, जो उनका प्रवक्ता था, ने उत्तर दिया, "हे प्रभु, हम किसके पास जाएं? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं।" इसके प्रत्युत्तर में यीशु ने उनसे कहा कि बारह में से एक उसे पकड़वाएगा।

पढ़िए यूहन्ना 6:35-51

1. यीशु को जीवन की रोटी के रूप में स्वीकार करनेवाले से यीशु ने क्या प्रतिज्ञा की (6:35)?

2. **क.** यीशु के अनुसार हम विश्वास के द्वारा उसकी ओर कैसे खींचे जाते हैं (6:37, 44)?

संदर्भः टिप्पणी 2, *जो कुछ पिता मुझे देता है*, पृष्ठ 68

ख. यीशु के द्वारा की गई उन प्रतिज्ञाओं की सूची बनाइए जो उसने उन लोगों से संबंधित कीं जिन्हें पिता उसकी ओर खींचता है (6:37-40)।

संदर्भः टिप्पणी 3, *उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊंगा,* पृष्ठ 68

3. **क.** यीशु के "मैं स्वर्ग से उतरा हूँ" यह दावा करने से गलील के यहूदियों को क्या समस्या थी (6:42)?

ख. जो कोई "पिता का शब्द सुनता है" और विश्वास करता है उसके विषय में यीशु ने क्या दावा किया है (6:45, 47)?

4. जो रोटी यीशु देता है उसे उसने कैसे उस मन्ना से भिन्न बताया जो परमेश्वर ने स्वर्ग से इस्राएलियों के लिए दिया था (6:48-51)?

मन्ना

जीवन की रोटी

पढ़िए यूहन्ना 6:52-59

5. यीशु की घोषणा के अनुसार अनंत जीवन पाने के लिए किसी को क्या करना आवश्यक है (6:56-58)?

संदर्भः टिप्पणी 1, *मेरा मांस खाता है*, पृष्ठ 67

पढ़िए यूहन्ना 6:60-71

6. यीशु ने अपने शिष्यों को प्रोत्साहित किया कि वे उसकी शिक्षा को जीवन देनेवाले आत्मा के ओर से दी गई शिक्षा के रूप में ग्रहण करें, और अपनी मानवीय प्रतिक्रियाओं के द्वारा नियंत्रित न हों। तब क्या हुआ (6:66)?

7. **क.** जब यीशु ने बारहों को पूछा कि क्या वे भी जाना चाहते हैं, तो पतरस का उत्तर क्या था (6:67-69)?

ख. यीशु ने, पतरस के कथन में किस एक *छोटी-सी* त्रुटि को प्रगट किया (6:70-71)?

संदर्भ: टिप्पणी 4, *तुम में से एक व्यक्ति शैतान है,* और टिप्पणी 5, *शैतान, दुष्टात्माएं,* पृष्ठ 68

ग. यीशु के इस ज्ञान ने उसके चरित्र के विषय में क्या प्रगट किया?

बुनियाद पर बनाना

हृदय की भूख को तृप्त करना

पास्कल, फ्रेंच के भौतिकशास्त्री एवं तत्त्वज्ञानी, ने कहा था, "प्रत्येक मनुष्य के हृदय में परमेश्वर-आकार का एक खाली स्थान है, जिसे मात्र परमेश्वर अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा भर सकता है।" वे मनुष्य के हृदय की उस भूख का वर्णन कर रहे थे जिसे जीवन की रोटी से भर देना आवश्यक है।

लोग इस भूख को विभिन्न वस्तुओं से मिटाना चाहते हैं: रिश्ते, सफलताएं, नई उपलब्धियां, यात्रा, यहां तक कि अत्यधिक काम या खेल। इस एक भ्रम में जीते हुए कि अन्दर की भूख अंतत: उस *एक वस्तु* से, जो अभी हमने नहीं पायी है, तृप्त होगी, हम *उसे* पाने की होड़ में लगे रहते हैं। यदि हम उसे पाने में सफल हो जाते हैं, तौभी हम पाते हैं कि उससे *वह* खाली स्थान नहीं भरता। रिश्तों में परिश्रम लगता है; मित्र,

जीवन-साथी और संतान प्राय: हमें निराश करते हैं। भौतिक वस्तुओं को रखरखाव की आवश्यकता होती है और वे समय के साथ टूट-फूट जाती हैं। नये अनुभव यादें बन कर रह जाते हैं। खाली स्थान को भरने की तलाश भयंकर रीति से भ्रम टूटने, यहां तक की निराशा, की ओर ही ले जाती है। भूख वैसे ही रह जाती है, साथ ही जुड़ जाती है ऐसा कुछ पाने की लालसा जो *स्थायी रूप से* तृप्ति दे सके।

जब यीशु ने घोषणा की कि वह जीवन की रोटी है, तब वह एक अद्‌भुत समाचार दे रहा था। वह दावा कर रहा था, कि व्यक्तिगत रीति से उसे जानना भूखे हृदय को तृप्त कर सकता है। स्वयं को जीवन की रोटी कहने के द्वारा, यीशु ने एक ऐसे शब्द-चित्रण का निर्माण किया जो हमारे और उसके मध्य के *प्रतिदिन* के प्रेमपूर्ण एवं अनंत संबंध के द्वारा होनेवाले आपसी अदान-प्रदान की आवश्यकता का वर्णन करता है। वह हमारे लिए स्वयं को प्रतिदिन के "मन्ना" के रूप में देता है, ताकि उस आवश्यकता को पूरा कर सके जिसे परमेश्वर ने हम में निर्माण किया है। यह आवश्यकता अपने सृष्टिकर्त्ता से संबंध जोड़ लेने की, और उस संबंध में बने रहने की है।

हिप्पो के संत अगस्टिन ने शताब्दियों पहले लिखा, "हे परमेश्वर, तूने हमें अपने लिए बनाया है, और हमारे हृदय तब तक बेचैन रहते हैं, जब तक वे तुझ में अपना चैन नहीं पा लेते।" आइए हम देखें कि हृदय की भूख मिटाने के लिए यीशु कैसे चैन और अनंत तृप्ति देता है।

1. हमारे हृदय किस के लिए तरसते हैं? मानव हृदय में बसी भूख का वर्णन आप कैसे करेंगे?

2. **क.** लोग अपनी इस भूख को किन तरीकों से मिटाने का प्रयास करते हैं?

   ख. इन तरीकों से इस भूख को मिटाने के प्रयास का परिणाम क्या होता है? अंतत: हम क्या पाते हैं?

3. प्रसिद्ध इतिहासकार एवं तत्त्वज्ञानी एच. जी. वेल्स् ने उम्र के 61 वर्ष में कहा, "मेरे मन में शांति नहीं है। सम्पूर्ण जीवन अपनी ज्ञानसीमा के अंत में है।" साहित्यिक प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति थ्योरो ने कहा, "अधिकांश मनुष्य गुमसुम निराशा का जीवन जीते हैं।" लोग अपने खालीपन एवं भ्रम के टूटने के अनुभव से बचने का प्रयास कैसे करते हैं?

4. **क.** अपने भीतर की लालसा को तृप्त करने की तलाश के प्रति हम क्या करें इसके लिए यीशु ने क्या निर्देश दिए हैं?
यूहन्ना 6:27

ख. उसने यूहन्ना 6:35 में क्या प्रतिज्ञा की है?

5. यीशु मसीह के साथ का संबंध ऐसा क्या दे सकता है जिससे गहरी मानवीय आवश्यकताओं की तृप्ति होती है?
यूहन्ना 14:27; 16:33

यूहन्ना 15:11

यूहन्ना 15:9

रोमियों 8:35, 38-39

6. **क.** यीशु ने स्वयं की तुलना उस मन्ना से की जिसे परमेश्वर ने स्वर्ग से तब दिया था जब इस्राएली जंगल में भटक रहे थे। मन्ना को कब एकत्रित किया जाए इसके विषय में परमेश्वर ने इस्राएलियों को क्या निर्देश दिए थे?
निर्गमन 16:4

ख. मसीह यीशु के जीवन को हम में पोषित करने के संबंध में यह क्या सूचित करता है?

ग. इस बात को प्रभु की प्रार्थना कैसे प्रगट करती है?
मत्ती 6:11

7. प्रभु के द्वारा पालन-पोषण किए जाने में क्या सम्मिलित है?
भजन संहिता 105:1-5

मत्ती 11:28-30

8. यदि हम अपने भीतर की भूख को जीवन की रोटी से तृप्त करने का यत्न करते हैं, तो हमारे लिए क्या प्रतिज्ञाएं दी गई हैं?
मत्ती 5:6

भजन संहिता 34:8

भजन संहिता 16:11

सारांश

9. **क.** क्या आप, या कोई जिसे आप जानते हैं, मसीह के साथ के संबंध की प्रतिदिन की आवश्यकता को किन्हीं अन्य बातों से पूरा करने का प्रयास करते रहे हैं?

ख. उसके परिणाम क्या रहे हैं?

10. यदि आप प्रभु को जीवन की रोटी के रूप में स्वीकार करते हैं, तो उसकी प्रतिज्ञा क्या है?

पाठ ८ टिप्पणियाँ

1. *मेरा मांस खाता है* (6:56) "यीशु हमें रोटी के समान खाने के लिए अपना मांस कैसे दे सकता है? जीवित रोटी को खाने का अर्थ मसीह को अपने जीवन में स्वीकार करना, और उसके साथ जुड़ जाना है। हम मसीह के साथ दो तरह से जुड़ते हैं: (1) उसकी मृत्यु (उसके देह के बलिदान) एवं उसके पुनरुत्थान में विश्वास करने के द्वारा, और (2) जैसा वह चाहता है वैसा जीवन जीने के लिए स्वयं को समर्पित करने, अगुवाई के लिए उसकी शिक्षाओं पर निर्भर होने, और सामर्थ्य के लिए पवित्र आत्मा में भरोसा रखने के द्वारा।" *एनआइव्ही लाइफ एप्लिकेशन बाइबल,* पृष्ठ 1888

इस तर्कयुक्ति में दो बातें स्पष्ट हैं:

(1) यीशु की मृत्यु, जो वह स्वेच्छापूर्वक और पापों के प्रायश्चित्त के रूप में सहनेवाला था (यशायाह 52:13-53:12), और

(2) वह एकत्व और एकता जो यीशु को ग्रहण करनेवाले व्यक्ति की आत्मा का पोषण करती है।

2. *जो कुछ पिता मुझे देता है* (6:37)। "उद्धार में प्राथमिक कार्य परमेश्वर का है (देखिए: वचन 44; 10:29; 17:6; 18:9), मनुष्य का नहीं (वचन 28); और मसीह की दया विश्वसनीय है (देखिए: वचन 31-40; 10:28; 17:9,12,15,19; 18:9)।" द *एनआइव्ही स्टडी बाइबल,* पृष्ठ 1607

3. *उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊंगा* (6:39)। यीशु ने दावा किया कि परमेश्वर के साथ सदाकाल तक जीवित रहने का आरंभ यीशु मसीह को उद्धारकर्त्ता ग्रहण करने से होता है। उस समय हमारा नया जीवन आरंभ होता है (2 कुरिन्थियों 5:17)। और यद्यपि अभी भी हमारी शारीरिक मृत्यु होगी ही, परन्तु पवित्रशास्त्र कहता है कि हम मसीह के दुसरे आगमन के समय अनंत जीवन के लिए जिलाए जाएंगे (1 कुरिन्थियों 15; 1 थिस्सलुनिकियों 4:13-17)।

4. *तुम में से एक व्यक्ति शैतान है* (6:70)। यीशु आरंभ ही से जानता था कि यहूदा, शैतान के प्रभाव में होकर, उसे पकड़वाएगा और उसका विरोध करेगा (13:2, 18-30)।

5. *शैतान, दुष्टात्माएं* । दूसरे सुसमाचारों में अनेक घटनाएं पढ़ने मिलती हैं जिनमें यीशु ने लोगों को दुष्टात्माओं से छुड़ाया। जबकि बहुतों के लिए शैतान और दुष्टात्मा कहे जानेवाले दुष्ट शत्रुओं की सम्पूर्ण कल्पना अविश्वसनीय है, बाइबल इनके विषय में क्या कहती है यह समझना महत्त्वपूर्ण है।

   बाइबल शैतान का वर्णन एक स्वर्गदूत के रूप में करती है, जिसने स्वर्ग में परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह का नेतृत्व किया था। उसके परिणाम-स्वरूप, परमेश्वर ने उसे उसके साथी विद्रोही दूतों के साथ स्वर्ग से निकाल दिया (2 पतरस 2:4; प्रकाशितवाक्य 12:7-9)। ये दूत शैतान के नेतृत्व में दृष्टात्मा के नाम से जाने गए, और अपनी योजनाओं तथा मनुष्यों पर हमले करने में अत्यंत संघटित हैं (इफिसियों 6:12)। शैतान और उसकी ताकतें काम करती हैं कि लोगों से शैतान की आराधना करवाए (लूका 4:7), और मनुष्यों को परमेश्वर की ओर फिरने से रोकें (लूका 4:8)। शैतान के पराजय की प्रतिज्ञा उत्पत्ति 3:15 में की गई थी और उसे मसीह के क्रूस में पूरा किया गया (कुलुस्सियों 2:15)। वह अभी भी एक ताक़त है, और मसीह के पृथ्वी का न्याय करने के

लिए वापस आने तक वैसे ही गिना जाना है (मत्ती 16:27)। याकूब 4:7 विश्वासियों को निर्देश देता है कि अपने जीवन में निरंतर परमेश्वर की अगुवाई चाहते हुए, शैतान का (या दुष्टात्माओं की सेना का) सामना करें।

--0--

पाठ ९ झोपड़ियों के पर्व के समय

यूहन्ना 7

यीशु, यहूदा प्रांत के बजाय, जहां धार्मिक अगुवे उसे मार डालना चाहते थे, गलील में ही प्रचार और आश्चर्यकर्म करता रहा। शरद ऋतु में, जब झोपड़ियों का पर्व निकट था, यीशु के भाइयों ने उसे यरूशलेम जाने का और अपने आश्चर्यकर्मों[1] को सब के सामने प्रगट करने का आग्रह किया। हालांकि उसके भाई बाद में विश्वासी बने (तुलना कीजिए: प्रेरितों के काम 1:14), उस समय यीशु ने उनकी राजकीय मसीह[2] की अपेक्षा के संबंध में उन्हें बिलकुल निराश कर दिया, और उन्हों ने उसमें विश्वास नहीं किया। यीशु ने उन्हें स्पष्ट समझाया कि वह समय उसके लिए परमेश्वर का समय नहीं था कि वह वहां जाए और अपनी सामर्थ्य प्रगट करे। ऐसा करना उसकी मृत्यु को जल्दी लाना होता।

परन्तु जब उसके परिवार के लोग चले गए, यीशु भीड़ से छिपते हुए गुप्त में यरूशलेम के उत्सव में गया, क्योंकि हर कोई उसे देखना चाहता था। झोपड़ियों के पर्व के आधे दिन बीतने पर, उसने मन्दिर में उपदेश देना आरंभ किया। यहूदी अगुवे उसके ज्ञान से आश्चर्यचकित थे; फिर भी उन्हों ने उसके उपदेश देने के अधिकार पर प्रश्न उठाया। यीशु ने पहले के समान ही उत्तर दिया। उसने घोषणा की कि उसके वचन पूर्णत: सत्य थे, और उसकी शिक्षा उस परमेश्वर का संदेश था जिसके पास से वह आया था।

यीशु ने, यह जानते हुए कि किसी-किसी के मन में उसके प्रति शत्रुता है, उनके हत्या के इरादे के लिए उन्हें फटकार लगाई। अधिकांश भीड़ यीशु को मारे जाने की योजना के विषय में नहीं जानती थी, इसलिए कुछ लोगों ने उसके इस फटकार लगाने पर उसे दुष्टात्मा-ग्रस्त कहा। लोग मसीह की पहचान को लेकर असमंजस में थे। तथापि, उन्हें डराया गया था कि उस विषय पर खुलेआम बात न करें, क्योंकि धार्मिक अगुवों ने धमकी दी थी कि जो यीशु में विश्वास करेंगे उन्हें आराधनालय से निकाल दिया जाएगा।

इसलिए कि अभी यीशु के मरने का समय नहीं आया था, उसे मारनेवालों में से कोई भी उस पर हाथ नहीं डाल पाया। तब यीशु ने शिक्षा देना आरंभ किया कि वह शीघ्र ही ऐसी जगह जानेवाला था जहां वे उसके पीछे नहीं जा सकेंगे। धार्मिक अगुवों के

साथ-साथ लोग भी जो कि पहले ही यीशु 'कौन है' को लेकर उलझन में पड़े थे, अब उसके भविष्य को लेकर और अधिक अधीर हो गए।

पर्व के अंतिम दिन, यीशु ने खड़े होकर ऊंची आवाज में उसके पीछे चलने का निमंत्रण दिया, और कहा, "यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पीए।" उसने प्रतिज्ञा की, "जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्रशास्त्र में आया है, उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेगी" (7:37-38)।

मन्दिर के सिपाही, जिन्हें यीशु को पकड़ने का निर्देश दिया गया था, महायाजकों और फरीसियों के पास खाली हाथ लौटे। उन्होंने कारण स्पष्ट करते हुए कहा कि उन्होंने कभी किसी को उस मनुष्य के समान बातें करते नहीं सुना था। धार्मिक अगुवे सिपाहियों पर क्रोधित हुए, और उस भीड़ को श्रापित ठहराने लगे जो यीशु के पीछे जाना बंद नहीं कर रही थी।

तब नीकुदेमुस ने, जो स्वयं एक फरीसी था, जिसने पहले यीशु से बात की थी (3:1-15), अगुवों को फटकारा कि वे यीशु का न्याय करने में अपने ही न्याय के नियमों का उल्लंघन कर रहे थे। परन्तु अब घमण्ड से अंधे अगुवे यीशु को मारने की धुन से ग्रस्त हो गए थे। वे उचित तर्क-वितर्क करने की दशा से बाहर हो गए थे।

पढ़िए यूहन्ना 7:1-13

1. **क.** यीशु के भाइयों को किस बात ने उलझन में डाला? उन्होंने अपने अविश्वास में क्या सुझाव दिया (7:1-5)?

   संदर्भ: टिप्पणी 5, *मसीह-संबंधित पवित्रशास्त्र की भविष्यवाणी,* पृष्ठ 54

   ख. यीशु ने उस दबाव का उत्तर कैसे दिया (7:6-10)?

2. यीशु के यरूशलेम पहुंचने के पहले ही वहां क्या हो रहा था (7:11-13)?

पढ़िए यूहन्ना 7:14-24

3. यहूदी अगुवों को किस बात ने अचम्भित किया था (7:14-15)?

4. **क.** यीशु की उपदेश देने की विद्या से अचम्भित यहूदियों को यीशु ने क्या बताया (7:16)?

ख. यीशु के उपदेश को कोई कैसे पहचान जाएगा इसके विषय में उसने क्या कहा (7:17)?

ग. यीशु ने आदर के किस सिद्धान्त को बताया (7:18)? उसने कौनसी सूक्ष्मदर्शी तुलना की?

5. **क.** यीशु ने यहूदी अगुवों के विषय में कौनसी बात खुल्लम-खुल्ला कह दी (7:19)?

ख. यीशु ने फरीसियों को क्या करने का आग्रह किया (7:21-24)?

टिप्पणी: वचन 21 में, यीशु संभवत: लंगड़े मनुष्य को सब्त के दिन चंगा किए जाने का उल्लेख कर रहा था (5:1-9)। उसने अनेक आश्चर्यकर्म किए थे, परन्तु उनमें से अधिकांश गलील में हुए थे। (तुलना कीजिए: टिप्पणी 1, *यीशु के आश्चर्यकर्म,* पृष्ठ 76)

पढ़िए यूहन्ना 7:25-32

6. **क.** यहूदी अधिकारियों की हताशा को किस बात ने और बढ़ा दिया था (7:25-26, 30-31)?

ख. धार्मिक अगुवों ने क्या करने का निश्चय कर लिया (7:32)?

7. यीशु ने लोगों से ऐसा क्या कह दिया जिसने उसकी पहचान को लेकर चल रही उलझन को और बढ़ा दिया (7:33-36)?

8. यीशु ने पर्व के अंतिम दिन क्या खुला निमंत्रण दिया (7:37-39)?

संदर्भ: टिप्पणी 3, *पवित्र आत्मा से बपतिस्मा,* पृष्ठ 21, और टिप्पणी 2, *पवित्र आत्मा,* पृष्ठ 37

पढ़िए यूहन्ना 7:40-52

9. **क.** यीशु की उपस्थिति और उपदेश को मिला आम प्रत्युत्तर क्या था (7:40-43)?

ख. उलझन और विरोध के मध्य क्या प्रबल होता गया (7:44-46)?

10. यहूदी अगुवों के द्वारा लोगों को, सिपाहियों को और नीकुदेमुस, जो उन्हीं का अपना एक था, को दिए गए प्रत्युत्तर का वर्णन कीजिए (7:47-52)?

टिप्पणी: *गलील से कोई भविष्यद्वक्ता प्रगट नहीं होने का* (7:52)। मसीह का जन्म बैतलहम में (मीका 5:2) और दाऊद के वंश से (यशायाह 9:7) होना था; और ये दोनों बातें यीशु के विषय में सच थी। ये धार्मिक अगुवे, जो सामान्यत: अत्यंत सतर्क रहते थे, इस समय सत्य को खोजने के बजाय उसे ढांप रहे थे। यशायाह 9:1-3, 6 भी देखिए।

बुनियाद पर बनाना

सिद्ध समय को समझना

सम्पूर्ण यूहन्ना रचित सुसमाचार में, और विशेष रीति से यूहन्ना 7 में, परमेश्वर के *समय* के लिए अनेक हवाले दिए गए हैं। यीशु ने यरूशलेम में जाने और वहां कुछ करने के संदर्भ में परमेश्वर के *समय* को लेकर संवेदनशीलता दिखाई थी। यहूदी अगुवे बार-बार यीशु पर हाथ डालने में असफल होते रहे, क्योंकि वह उसकी मृत्यु का *समय* नहीं था। फिर भी, यीशु ने उन्हें बताया कि वह *समय* शीघ्र आ रहा था जब वे उसे और अधिक न देख सकेंगे, न सुन सकेंगे और न छू सकेंगे। वह शीघ्र ही अपने पिता के पास वापस जानेवाला था। और उसने उस *समय* की भी बात की जब पवित्र आत्मा प्रत्येक विश्वासी में वास करने आनेवाला था।[3] व्यापक अर्थ में, वह *समय*

मसीह के राज्य करने का नहीं था, परन्तु तब उसके लिए वह जगत के पाप के लिए अपना प्राण देने का समय था। वह *समय* परमेश्वर की सामर्थ्य को प्रगट करने का नहीं था, परन्तु परमेश्वर के बलिदानात्मक प्रेम और नम्रता को प्रदर्शित करने का समय था। वह इस्राएल को महिमा देने का समय नहीं था, परन्तु इस्राएल में से विश्वासयोग्य लोगों को उनके उद्धारकर्त्ता की ओर खींचने का समय था।

जबकि यीशु निरंतर परमेश्वर के सिद्ध समय के प्रति समर्पित रहा, उसने परमेश्वर की योजना के प्रति समर्पित होने में कठिनाई को भी अनुभव किया। हालांकि उसने कभी भी परीक्षा में हार नहीं मानी, परन्तु उसने उस इच्छा को अनुभव किया जो हम में जन्मजात है कि हम अपनी परिस्थितियों पर नियंत्रण रखनेवाले हों। हम चाहते हैं कि जो *हम* चाहते हैं वह हमें तब ही मिले जब *हम* उसे चाहते हैं, और बहुत-ही हताश हो सकते हैं जब हम जीवन को उस प्रकार चलता हुआ नहीं देखते।

यीशु इस मानवीय संघर्ष को अपने अनुभव से जानता है, परन्तु इसलिए कि वह जानता था कि परमेश्वर की योजना और समय सिद्ध होते हैं, उसने अपने पृथ्वी पर के कार्य के कठिन मार्ग पर चलते समय शांति और आनंद को भी पाया (इब्रानियों 12:2)। उसने भयंकर आलोचना और मृत्यु के समक्ष भी दृढ़ रहने की प्रेरणा पाई थी। उसने अपनी सेवकाई में अपने ग्रहण करनेवालों को आनंद देने में आनंद पाया (15:11) और अपने शिष्यों के लिए गहरा प्रेम अनुभव किया (15:9)।

यदि हम परमेश्वर के समय में भरोसा नहीं बढ़ाएंगे, तो चिंता और घबराहट हमें वर्तमान पल की उस अच्छाई से वंचित रखेगी जो फिर कभी नहीं आएगी। उस भीड़ के समान जिसने परमेश्वर के पुत्र की वास्तविक उपस्थिति में रहने के विशेष अवसर के महत्त्व को नहीं समझा था, हम भी वह आशीष और पूर्णता पाने से चुक जाएंगे जो परमेश्वर हम में कठिनाइयों के द्वारा उत्पन्न करना चाहता है। परन्तु यदि हम अपने व्यक्तिगत जीवन के लिए उसकी योजना और उसके समय की खोज में रहेंगे, तो बाइबल हम से शांति और तृप्ति की प्रतिज्ञा करती है।

यीशु परमेश्वर के समय के साथ सिद्धता एवं निर्भिकता-पूर्वक चला-फिरा, और हम भी वैसा ही कर सकते हैं। आइए हम देखें कि हमारी *तृप्ति की तलाश* के लिए परमेश्वर के समय को समझना और स्वीकार कर लेना कैसे आवश्यक है।

1. परमेश्वर के समय के विषय में निम्नलिखित वचनों में क्या कहा गया है?
   सभोपदेशक 3:1

   सभोपदेशक 8:5ख-6

2. परमेश्वर के समय को खोजते समय हमें परमेश्वर के मार्गों के विषय में क्या समझना अवश्य है?
भजन संहिता 18:30, 32

भजन संहिता 25:10

यशायाह 55:8-9

यिर्मयाह 29:11

रोमियों 8:28

रोमियों 8:32

3. यीशु अपने पिता के समय को कैसे जानता था?
लूका 5:16; 6:12

4. परमेश्वर के सिद्ध समय का अनुभव करने और उसमें शांति पाने के लिए हमें क्या करना आवश्यक है? निम्नलिखित वचन क्या सुझाव देते हैं?
भजन संहिता 46:10क

भजन संहिता 130:5 (भजन संहिता 27:14)

5. परमेश्वर के समय को पहचानने के लिए बुद्धि की आवश्यकता होती है। हमें बुद्धि कहाँ से मिलेगी?
कुलुस्सियों 2:2ग-3

नीतिवचन 2:6 (याकूब 1:5)

6. यशायाह 9:6 में मसीह को अद्‌भुत युक्ति करनेवाला कहा गया है। जब आप परमेश्वर के सिद्ध मार्ग एवं समय को पहचानने हेतु उसकी बुद्धि को मांगते हैं, तो वह आपसे क्या प्रतिज्ञा करता है?
भजन संहिता 23:1-3

यशायाह 45:2-3

सारांश

7. **क.** क्या आपके जीवन में कोई ऐसा क्षेत्र है जिसे आप परमेश्वर के समय के प्रति समर्पित करना चाहते हैं?

ख. बाइबल के अनुसार, इस क्षेत्र में परमेश्वर की योजना एवं समय के प्रति समर्पित होने का परिणाम क्या होगा?

8. **क.** आपकी परिस्थिति में परमेश्वर के समय का अनुभव करने हेतु आपकी भूमिका क्या होती है?

ख. भजन संहिता 31:14-15क में दिया गया कौनसा निर्णय आपको शांति देगा?

पाठ ९ टिप्पणियाँ

1. *यीशु के आश्चर्यकर्म*। यूहन्ना ने स्पष्ट कहा है कि यीशु ने अनेक आश्चर्यकर्म किए थे जो उसके सुसमाचार में लिखे नहीं गए हैं (20:30; 21:25)। उसने यीशु के मात्र आठ आश्चर्यकर्म चुने हैं कि उसके ईश्वरत्व को प्रगट करे, और उसके परमेश्वर के पास से जीवन देने के लिए भेजे जाने के दावे को सत्य प्रमाणित करे। सुसमाचारों में लिखे गए यीशु के आश्चर्यकर्मों की सूची नीचे दी गई है। (*सब्त के दिन की गई चंगाई।)

पानी का दाखरस बनाना, यूहन्ना 2:9

राजा के कर्मचारी के बेटे को चंगा करना, यूहन्ना 4:46

मछलियों का पकड़ा जाना, लूका 5:6

***आराधनालय में दुष्टात्मा से पीड़ित को छुटकारा देना,** मरकुस 1:26; लूका 4:35

***पतरस की सास को चंगा करना,** मत्ती 8:14; मरकुस 1:31; लूका 4:38

कोढ़ी को शुद्ध करना, मत्ती 8:3; मरकुस 1:41; लूका 5:13

लकवे के रोगी को चंगा करना, मत्ती 9:2; मरकुस 2:3; लूका 5:18

***अपंग को चंगा करना,** यूहन्ना 5:5

***सूखे हाथ को चंगा करना,** मत्ती 12:10; मरकुस 3:1; लूका 6:6

सूबेदार के दास को चंगा करना, मत्ती 8:5; लूका 7:2

विधवा के बेटे को मृत्यु से जिलाना, लूका 7:11

दुष्टात्मा से ग्रसित को चंगा करना, मत्ती 12:22; लूका 11:14

आंधी को शांत करना, मत्ती 8:26, मरकुस 4:39; लूका 8:24

गदरेनियों के देश में दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति को छुटकारा देना, मत्ती 8:28; मरकुस 5:1; लूका 8:26

याईर की बेटी को जिलाना, मत्ती 9:18; मरकुस 5:42; लूका 8:41

स्त्री को लहू बहने की बीमारी से चंगाई देना, मत्ती 9:20; मरकुस 5:25; लूका 8:43

अंधों को दृष्टि देना, मत्ती 9:27

दुष्टात्मा से पीड़ित गूंगे को चंगा करना, मत्ती 9:32

पांच हजार को भोजन खिलाना, मत्ती 14:15; मरकुस 6:41; लूका 9:12; यूहन्ना 6:5

झील पर चलना, मत्ती 14:25; मरकुस 6:49; यूहन्ना 6:19

कनानी स्त्री की बेटी को चंगा करना, मत्ती 15:22; मरकुस 7:25

चार हजार को भोजन खिलाना, मत्ती 15:32, मरकुस 8:8

गूंगे बहरे को चंगा करना, मत्ती 7:33

अंधे को आँखे देना, मरकुस 8:23;

मलखुस का कान ठीक करना, लूका 22:51

मिरगी से पीड़ित बालक को चंगा करना, मत्ती 17:14, मरकुस 9:26, लूका 9:37

कर के लिए सिक्का दिलवाना, मत्ती 17:24

दस कोढ़ियों को शुद्ध करना, लूका 17:12

*** अंधे को आँखे देना,** यूहन्ना 9:1

लाजरस को जिलाना, यूहन्ना 11

*** दुर्बलता की आत्मा से ग्रसित महिला को चंगा करना,** लूका 13:11

*** मिरगी से बीमार को चंगा करना,** लूका 14:2

अंजीर के पेड़ को श्राप दिया तो वह तुरन्त सूख गया, मत्ती 21:19

अंधों को दृष्टि देना, मत्ती 20:30; मरकुस 10:46

दूसरी बार बहुत मछलियाँ पकड़ी गयीं, यूहन्ना 21:6

उसका अपना पुनरुत्थान, लूका 24:6; यूहन्ना 10:18

अपने पुनरुत्थान के बाद दिए गए उसके दर्शन, मत्ती 28:9, 17; मरकुस 16:9; लूका 24:15, 36, 50; यूहन्ना 20:19, 26; 21:1; प्रेरि. 9:5; 1 कुरि. 15:5-8

2. **संदर्भ:** टिप्पणी 5, *मसीह-संबंधित पवित्रशास्त्र की भविष्यवाणी,* पृष्ठ 54
3. **संदर्भ:** टिप्पणी 3, *पवित्र आत्मा से बपतिस्मा,* पृष्ठ 21

--0--

पाठ १०

यीशु अपनी शिक्षा की पुष्टि करता है

यूहन्ना 8:1-30

पर्व समाप्त होने के बाद, लोग अपने-अपने घर चले गए, परन्तु यीशु ने वह रात जैतून के पहाड़ पर बिताई। सुबह वह मंदिर में आया, कि उसे सुनने के लिए एकत्रित हुए लोगों को शिक्षा दे। यीशु के विरुद्ध कुछ दोष पाने के प्रयत्न में शास्त्री और फरीसी एक स्त्री को, जो व्यभिचार करते समय पकड़ी गई थी, लेकर उसके पास आए, और उसके मामले में उसे दण्ड देने की मांग करने लगे। मूसा की व्यवस्था में कहा गया था कि ऐसे व्यक्ति को अवश्य ही मृत्यु दण्ड दिया जाए (लैव्यव्यवस्था 20:10), परन्तु रोमी नियम ने मृत्युदण्ड के सारे अधिकार अपने हाथों में रखे थे। यदि यीशु उसे क्षमा करता, तो उस पर लोगों को व्यभिचार करने और मूसा की व्यवस्था को तोड़ने का प्रोत्साहन देनेवाला होने का दोष लगाया जाता। यदि वह उसे दण्ड देता, तो वह रोमी अधिकार को चुनौती देनेवाला ठहरता।

यीशु ने उत्तर दिया, "तुम में जो निष्पाप हो, वही पहले उसको पत्थर मारे।" उसके उत्तर ने न तो उस स्त्री को निर्दोष ठहराया और न ही मूसा की व्यवस्था को नकारा, परन्तु यहूदी अगुवों के कठोर, दोष लगानेवाले तरीकों की ओर ध्यान आकर्षित किया। उसके कथन के प्रत्युत्तर में, अगुवे, बड़ों से लेकर छोटों तक, एक-एक करके वहां से चले गए। वह स्त्री अकेली यीशु के पास रह गई। यीशु ने उस से कहा, "मैं भी तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न करना" (8:11)। उन धार्मिक अगुवों ने उस स्त्री के मामले को लेकर यीशु की परीक्षा करने का प्रयत्न किया था, परन्तु उसने उस परीक्षा का उपयोग उस स्त्री को मुक्त करने और उसे सतानेवालों की आँखें खोलने का प्रयास करने के लिए किया।

यीशु ने, मन्दिर में उपदेश देना जारी रखते हुए, यूहन्ना-रचित सुसमाचार में लिखे गए सात "मैं हूं" कथनों में से दूसरे कथन को कहा।[1] उसने कहा, "जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा" (8:12)।

यहूदी विचारों में, "ज्योति" एक और ऐसा शब्द था जो परमेश्वर या मसीह होने के दावे से जुड़ा हुआ था। (तुलना कीजिए: भजन संहिता 27:1; अय्यूब 29:3; मीका 7:8; यशायाह 60:19।) यहूदी अगुवों ने इस बात पर जोर दिया कि मात्र यीशु के

अपने विषय में कहे गए शब्द पर्याप्त नहीं थे। उसके दावों का समर्थन एक से अधिक गवाहों के द्वारा होना चाहिए था। बीते दिनों में, यीशु ने अपने दावों का समर्थन परमेश्वर की सामर्थ्य से किए जानेवाले आश्चर्यकर्मों[2] के द्वारा और पुराना नियम की मसीह से संबंधित भविष्यवाणियों[3] के द्वारा किया था। परन्तु इस समय, यीशु ने मात्र पिता की गवाही का उपयोग किया जिसने उसे भेजा था। यीशु ने सरल शब्दों में यों कहा कि यदि वे पिता को जानते, तो उसके विषय में पिता की गवाही को सुननेवाले और स्वीकार करनेवाले होते। यीशु ने आगे यह भी कहा कि जो उस पर विश्वास नहीं करेंगे वे अपने पापों में मरेंगे, क्योंकि वे परमेश्वर के मार्ग से चुक जाएंगे।

धार्मिक अगुवों का बैर-भाव बढ़ता ही गया। तथापि, विरोध के मध्य, बहुतेरे सुननेवालों ने यीशु में विश्वास किया।

पढ़िए यूहन्ना 8:1-11

1. आप, यूहन्ना 7:53-8:2 से यीशु के विषय में क्या जान पाते हैं?

2. फरीसियों ने व्यभिचारी स्त्री की परिस्थिति का उपयोग कैसे किया? उसके प्रति उनकी मनोवृत्ति क्या थी (8:3-6)?

3. यीशु ने उस स्त्री तथा उन लोगों के जीवन में किस पाप को पहचाना (8:7-11)?

4. आप इस घटना में यीशु की दया के विषय में क्या देखते हैं? उसकी दया ने उस स्त्री के लिए क्या संभव कर दिया?

पढ़िए यूहन्ना 8:12-19

5. यीशु ने उसमें विश्वास करनेवाले जन से क्या प्रतिज्ञा की है (8:12)?

संदर्भः टिप्पणी 1, *यीशु के "मैं हूँ" कथन,* पृष्ठ 86

6. यीशु ने स्वयं अपने विषय में ऐसा क्या जानने का दावा किया जो धार्मिक अगुवे नहीं जानते थे (8:14)?

7. यीशु ने कैसे फरीसियों के न्याय को उसकी न्याय करने की क्षमता के विपरीत बताया (8:15-16)?

टिप्पणीः "फरीसियों का न्याय सीमित और सांसारिक था। उनके अर्थ के विचार से, यीशु ने स्पष्ट किया कि उसने न्याय किया ही नहीं। सही अर्थ में कहें, तो उसने निश्चय ही न्याय किया था। (वचन 26)।" द *एनआइव्ही स्टडी बाइबल,* पृष्ठ 1612

8. **क.** यीशु ने कौनसा दावा किया जो उसके विरोधियों के बैर को और भड़काता गया (8:19)?

   ख. यीशु ने इस दावे को यूहन्ना 14:9-10 में कैसे व्यक्त किया है?

पढ़िए यूहन्ना 8:21-30

9. **क.** यीशु ने अपने विरोधियों से क्या प्रतिज्ञा की (8:21, 23-24)?

   संदर्भः टिप्पणी 4, *अपने पापों में मरोगे,* पृष्ठ 86

   ख. यीशु ने उसमें विश्वास करनेवालों से क्या प्रतिज्ञा की (11:25-26; 14:2-3)?

10. यीशु ने, उनसे जो उसे क्रूस पर चढ़ानेवाले थे, कोमलता और शांति के साथ बात की। यीशु ने यहूदियों को अपनी क्या पहचान दी (8:28)?

टिप्पणी: यीशु ने जब *ऊंचे पर चढ़ाए* जाने की बात कही, तब उसने अपने आनेवाले क्रूसीकरण और पुनः जी उठने का संकेत दिया।

संदर्भः टिप्पणी 4, *मनुष्य का पुत्र,* पृष्ठ 22

11. यीशु जब पिता को प्रसन्न करने के लिए जीवन जीता था, तब उसके पास वह कौनसा आश्वासन था जो हमें भी मिल सकता है (8:29)?

12. क. धार्मिक अगुवों द्वारा किए जानेवाले विरोध के होते हुए भी क्या हुआ (8:30)?

ख. *ऐच्छिक प्रश्नः* आपके विचार से वह क्या बात थी जिसके कारण लोगों ने यीशु में विश्वास किया?

बुनियाद पर बनाना

दया का महत्त्व

यीशु ने व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री के मामले में प्रतिक्रिया व्यक्त करते समय, चरित्र के एक विशेष गुण का आदर्श प्रस्तुत किया जो तृप्ति के लिए आवश्यक हैः दया।

दोष देने तथा असंवेदनशीलता के नमूनों को न अपना कर, दया का मन बनाए रखने के लिए, निस्वार्थता की आवश्यकता होती है। तथापि यह चुनाव अन्त में अत्यन्त आशीष की ओर ही ले जाता है। वह व्यक्ति जो मात्र अपने ही लिए जीता है, और दया का मन विकसित नहीं करता, अन्ततः जीवन को खाली, अतृप्त और उद्देश्यहीन पाएगा। यह आवश्यक है कि हम अपनी *तृप्ति की तलाश* में अपने भीतर दया विकसित करें।

जबकि असहायों पर दया दिखाना एक स्वाभाविक गुण होता है, गलत करनेवालों के प्रति दया दिखाना बहुत अधिक कठिन जान पड़ता है, और जो अपने आप को हमारे शत्रु घोषित कर देते हैं उनके प्रति दया दर्शाना तो बिलकुल ही असंभव है। इस संबंध में, यह ध्यान देना महत्त्वपूर्ण है कि यीशु ने दया का मन रखते हुए अलग-अलग व्यक्तियों के साथ अलग-अलग ढंग से प्रतिक्रिया व्यक्त की। वह व्यभिचार में पकड़ी

गई स्त्री के साथ दयालु था, परन्तु पाखण्डी धार्मिक अगुवों के साथ दृढ़ता और सख्ती से पेश आया। वह उस स्त्री के विषय में जानता था कि दया और अपनेपन से उसका जीवन बदल सकता था। परन्तु फरीसियों के विषय में, यीशु जानता था कि उनके इंकार को तोड़ने का एकमात्र संभावित तरीका, उनके पाखण्ड को उजागर करना और अपने विषय के सत्य को दोहराना ही था। यीशु ने, प्रतिशोध या सत्य से समझौता कर लेने जैसी आत्मरक्षा की स्वाभाविक प्रतिक्रियाओं को चुनने से इंकार किया, परन्तु वही एकमात्र तरीका अपनाता रहा जिससे वह उनके लिए पश्चात्ताप उपलब्ध करा सके।

दयामय जीवन की मांग होती है कि हम निरंतर औरों की भलाई की खोज में रहें। मन में इस लक्ष्य को रखकर, हम प्रत्येक परिस्थिति में अपनी क्षमता से भरसक प्रयास करते हैं। बुद्धि, या जीने की कला, यह जानना है कि किसी व्यक्ति-विशेष के साथ दी गई परिस्थिति में दया को कौनसा रूप लेना चाहिए।

परमेश्वर हमें वह बुद्धि और दया देना चाहता है जो हमारी *तृप्ति की तलाश* में आवश्यक है। इस पाठ में, हम दयामय जीवन से संबंधित बाइबल-आधारित निर्देशों को देखेंगे।

1. **क.** उस स्त्री के प्रति धार्मिक अगुवों ने कौनसी मनोवृत्तियाँ दिखाईं? अपराधियों के प्रति दिखाए जानेवाले ये प्रत्युत्तर कैसे विशेष हैं?

   ख. यीशु ने उसके प्रति कैसा प्रत्युत्तर दिया? उसके लिए यीशु की इच्छा क्या थी?

2. **क.** फरीसियों ने घमण्ड और अपने पाप के प्रति अंधेपन के कारण, उस स्त्री को निम्न और तुच्छ दृष्टि से देखा था। यहाँ हमारे लिए क्या चेतावनी है?

   ख. कौन सी बात हमें लोगों के प्रति दयालु बनाती है?
   फिलिप्पियों 2:5-8

3. हम में ऐसी निस्वार्थता निर्माण करने की प्रतिज्ञा परमेश्वर कैसे देता है?
   रोमियों 5:5

संदर्भः टिप्पणी 2, *पवित्र आत्मा,* पृष्ठ 37

4. **क.** नम्र एवं इच्छुक हृदय में पवित्र आत्मा द्वारा उत्पन्न किए जानेवाले प्रेम का वर्णन पौलुस कैसे करता है?
1 कुरिन्थियों 13:4-8क

ख. पौलुस, 1 कुरिन्थियों 13:1-3 में किस बात की चेतावनी देता है?

5. **क.** यीशु ने कैसे फरीसियों को स्त्री से भिन्न प्रत्युत्तर दिया?

ख. दयापूर्ण प्रत्युत्तरों को भिन्न परिस्थितियों में अलग-अलग क्यों होना चाहिए?

ग. जब हम बुद्धिमत्तापूर्ण प्रत्युत्तर देने का प्रयत्न करते हैं तब परमेश्वर हमें क्या देना चाहता है?
याकूब 1:5

नीतिवचन 15:4क, 23

नीतिवचन 16:21

6. जबकि यीशु अपने शत्रुओं के साथ अत्यन्त सख्त था, जब वह क्रूस पर चढ़ाया गया था तब उसने उनके प्रति कौनसी मनोवृत्ति दिखाई?
लूका 23:33-34

2 पतरस 3:9

7. यीशु ने दया दिखाते समय कभी भी सत्य से समझौता नहीं किया। हमें लोगों की सच्ची सहायता करने के लिए सर्वदा क्या करना अवश्य है?
इफिसियों 4:15

अय्यूब 23:11

8. लोगों के प्रति दयापूर्ण मन बनाए रखने के लिए त्याग की, और कभी-कभी भावनात्मक एवं शारीरिक असुविधा सहने की, आवश्यकता हो सकती है। जो औरों की आवश्यकताओं के लिए त्यागपूर्ण मन से देता है, उसके लिए पवित्रशास्त्र की प्रतिज्ञा क्या है?
नीतिवचन 11:25

नीतिवचन 28:27

लूका 6:38

9. परमेश्वर क्या चाहता है कि लोग उसकी संतनों में देखें, जैसे उसके पुत्र में देखते थे? कुलुस्सियों 3:12-14

सारांश

10. क्या कोई व्यक्ति या समूह है जिसके प्रति दया दिखाना आप को कठिन लग रहा है? यीशु के उदाहरण और इस पाठ में हम ने पढ़े सहायक सिद्धातों में आप क्या देखते हैं?

11. **क.** आपकी तृप्ति की तलाश में लोगों के प्रति दया का हृदय बनाए रखना क्यों आवश्यक है?

ख. आपको दयापूर्ण हृदय बनाए रखने से कौन सी बात रोक सकती है?

12. अपने जीवन के इस क्षेत्र के विषय में आपकी प्रार्थना क्या है?

पाठ १० टिप्पणियाँ

1. *यीशु के "मैं हूँ" कथन।* यूहन्ना-रचित सुसमाचार में सात *"मैं हूँ"* कथन लिखे गए हैं:

6:35	जीवन की रोटी
8:12; 9:5	जगत की ज्योति
10:7, 9	परमेश्वर तक पहुँचने का द्वार
10:11, 14	अच्छा चरवाहा
11:25	पुनरुत्थान और जीवन
14:6	मार्ग, सच्चाई और जीवन
15:1, 5	दाखलता

2. **संदर्भ:** टिप्पणी 1, *यीशु के आश्चर्यकर्म,* पृष्ठ 76

3. **संदर्भ:** टिप्पणी 5, *पवित्र शास्त्र की मसीह-संबंधित भविष्यवाणी,* पृष्ठ 54

4. *अपने पापों में मरोगे* (8:24; 8:21)। "वह 'पाप' जो 8:21 में एकवचन और 8:24 में बहुवचन के रूप में उल्लेखित है, उस **एक** का इनकार करना है जो उद्धार देता है (तुलना कीजिए- 16:9)। वे इसलिए 'मरेंगे' क्योंकि वे पाप के अधिकार में दबे रहकर उसके राज्य में बने रहे। उनकी शारीरिक मृत्यु उनके परमेश्वर से अनंतकाल के लिए अलग होने का प्रारंभ होगा। यदि वे यीशु को परमेश्वर के प्रकटीकरण के रूप में अस्वीकार करेंगे, तो वे अपने उद्धार की एकमात्र आशा को खो देंगे।" *वाल्वर्ड एण्ड झक्, द बाइबल नॉलेज कमेन्टरी, न्यू टेस्टामेन्ट,* पृष्ठ 304

--0--

पाठ ११ और अधिक सार्वजनिक वाद-विवाद

यूहन्ना 8:31-59

यीशु ने, जब वह मन्दिर में शिक्षा दे ही रहा था, जिन्होंने उसमें विश्वास प्रगट किया, उन्हें उसकी शिक्षा में बने रहने का निर्देश दिया। उसने उनसे प्रतिज्ञा की, तुम "सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा" (8:32)।

इस कथन से, यहूदियों में घमण्ड भर आया।[1] स्पष्ट रूप से अपने रोम के अत्याचारी राजनैतिक दासत्व की ओर ध्यान न देते हुए, यहूदी अगुवों ने ऐलान कर दिया कि अब्राहम के वंश से होने के कारण वे किसी भी मनुष्य के दासत्व में नहीं थे। परन्तु यीशु ने स्पष्ट किया कि वह पाप के प्रति मनुष्य के उस दासत्व के विषय में कह रहा था जो लोगों पर प्रभुत्व और नियंत्रण रखता है। परमेश्वर का पुत्र होने के कारण उसने उसके पास मनुष्य को पाप से स्वतंत्र करने का, तथा उसे अधिकाई से ईश्वरीय सत्य का ज्ञान देने का अधिकार होने का दावा किया। उसने कहा, तुम "सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा" (8:32)।

जबकि यीशु इस बात से सहमत था, कि यहूदियों का अपने दावे के अनुसार अब्राहम से संबंध था, परन्तु उसने इस बात को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया, कि जो व्यक्ति *आत्मिक रूप से* अब्राहम का संबंधी होगा वह उसे -- एक निर्दोष मनुष्य को -- मार डालने की खोज में नहीं रहेगा। मात्र इतना ही नहीं, परन्तु यीशु ने यह भी कहा कि जो अब्राहम के समान परमेश्वर की आज्ञा माननेवाला होगा, वह पहचान लेगा कि यीशु परमेश्वर पिता के पास से भेजा गया है।

इन शब्दों से यहूदी क्रोधित हो गए, और बदले में उस लांछन को उछाला जिसका निशाना सम्भवत: यीशु के कुंवारी से जन्म लेने की ओर था: "हम व्यभिचार से नहीं जन्मे; हमारा एक पिता है अर्थात् परमेश्वर" (8:41)।

यीशु ने उत्तर में कहा, "यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, तो तुम मुझ से प्रेम रखते; क्योंकि मैं परमेश्वर में से निकल कर आया हूँ; . . . उसी ने मुझे भेजा" (8:42)। तब यीशु ने कहा, कि उनका उसके निर्दोष होने पर भी उसे मार डालने का उद्देश्य प्रमाणित करता था कि वे परमेश्वर से नहीं परन्तु शैतान[2] से प्रेरणा प्राप्त थे, जो झूठ और हत्यारे का पिता है।

यीशु के तर्क एवं अधिकार को नुकसान पहुंचाने में उतावले हो गए यहूदी अगुवों ने यीशु को ही दुष्टात्मा-ग्रस्त सामरी[3] कह दिया। इन आधारहीन दोषारोपण का इंकार करने के पश्चात् यीशु ने दावा किया कि वह अपने लिये आदर नहीं चाहता था। परन्तु उसने अपने शत्रुओं को चेतावनी दी कि पिता द्वारा भेजे गए पुत्र का अनादर करने का लेखा वे पिता को ही देंगे। यीशु ने बेधड़क, अनंत अधिकार का निर्विवाद दावा करते हुए कहा, "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्त काल तक मृत्यु को न देखेगा" (8:51)।

पुन: यीशु के शत्रुओं ने उसमें दुष्टात्मा होने का आरोप लगाया, क्योंकि उसका दावा उसे अनंत एवं अब्राहम और भविष्यद्वक्ताओं से महान ठहरानेवाला था।

"तुम्हारा पिता अब्राहम मेरा दिन[4] देखने की आशा से बहुत मगन था; और उसने देखा, और आनन्द किया" (8:56)। जब वे इस बात का विरोध कर ही रहे थे कि यीशु, जो तब 50 वर्ष का भी नहीं था, कैसे अब्राहम को देखने का दावा कर सकता था, उन्हें और भी अधिक चौंका देनेवाला कथन सुनने मिला:

यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूं।" इस प्रकार यीशु ने स्वयं का परमेश्वर के पुराना नियम के नाम "मैं हूं" से घनिष्ठ संबंध स्थापित किया (निर्गमन 3:14)।[5] इस प्रकार उसने परमेश्वर होने का निर्विवाद दावा किया।

यहूदी अगुवों ने तत्काल इस ईश-निंदा के कारण यीशु को पत्थरवाह करने के लिए पत्थर उठाए, परन्तु यीशु बिना किसी क्षति के मन्दिर परिसर से निकल गया।

पढ़िए यूहन्ना 8:31-41

1. **क.** यीशु ने क्या कहा कि वह अपने शिष्यों से क्या चाहता है (8:31), और आपके विचार से इसका वास्तविक अर्थ क्या है?

   ख. उसने किस प्रतिफल की प्रतिज्ञा की (8:32)?

2. **क.** जब यहूदियों ने किसी के दास न होने का दावा किया, तब यीशु ने उस दासत्व का स्पष्टीकरण कैसे किया जिसका उल्लेख वह कर रहा था (8:34)?

ख. इस दासत्व से जो स्वतंत्रता यीशु दे सकता है, उसके विषय में उसने क्या स्पष्ट किया (8:35-36; यूहन्ना 1:12 को भी देखिए)?

3. यहूदियों ने परमेश्वर के सामने अपने आत्मविश्वास और धार्मिकता का आधार किसे बनाया था (8:33, 39)?

संदर्भः टिप्पणी 1, *यहूदी,* पृष्ठ 94

4. जबकि यीशु इस बात से सहमत था कि उनका अब्राहम से खून का संबंध था, उसने उनके अब्राहम के समान धर्मी होने के दावे को कैसे अस्वीकार किया (8:37, 39-40, 56)? यीशु ने उनके व्यवहार में किस अनियमितता को दिखाया?

संदर्भः टिप्पणी 4, *अब्राहम मेरा दिन देखने की आशा से. . . .,* पृष्ठ 94

पढ़िए यूहन्ना 8:42-47

5. यहूदी अगुवों के इस दावे को कि परमेश्वर हमारा पिता है, यीशु ने कैसे उत्तर दिया (8:42)?

6. इसलिए कि वे यीशु को मारने की मनसा रखते थे, यीशु ने यहूदी अगुवों को किससे जोड़ा और क्यों (8:44)?

संदर्भः टिप्पणी 5, *शैतान, दुष्टात्माएं,* पृष्ठ 68

7. यीशु ने यहूदी अगुवों के अविश्वास का वर्णन कैसे किया (8:47)?

8. यहूदी अगुवों ने क्रोध में आकर यीशु की शिक्षा को नुकसान पहुँचाने के लिए यीशु को क्या कह दिया (8:48)?

संदर्भः टिप्पणी 3, *सामरी,* पृष्ठ 94

9. **क.** उसके प्रत्युत्तर में यीशु ने क्या स्पष्ट किया (8:49-50)?

ख. कौनसी प्रतिज्ञा की (8:51)?

10. **क.** जब यीशु ने अनंत जीवन देने की प्रतिज्ञा की, यहूदियों ने क्या समझा कि वह स्वयं के विषय में क्या कह रहा था (8:52-53)?

ख. "तू अपने आप को क्या ठहराता है?," इस प्रश्न को यीशु ने दिए उत्तर का सारांश संक्षेप में लिखिए (8:54-58)।

संदर्भः टिप्पणी 5, *पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ,* पृष्ठ 95

ग. कौनसी बात प्रमाणित करती है कि यहूदियों ने यीशु के परमेश्वर होने के दावे को समझा था (8:59)?

बुनियाद पर बनाना
सत्य के पक्ष में खड़े रहना - १

हमारे संसार में पाए जानेवाले अन्याय, स्वार्थी महात्त्वाकांक्षा और द्वेष की जड़ में झूठ और धोखा ही होता है। इसलिए कि यीशु ने स्वयं हमारे संसार के झूठ और धोखे का प्रत्यक्ष अनुभव किया था, हम जान सकते हैं कि वह उन यातनाओं को समझता है जो हमे यहाँ सहनी पड़ती हैं। वह झूठ से होनेवाले हमारे उस संघर्ष को भी जानता

है जिसके कारण निर्दोष लोगों को कष्ट सहना पड़ता है। वह हमारे पूर्णत: ईमानदार रहने के संघर्ष को भी समझता है, और उस हिम्मत को भी जो सत्य से समझौता न करने में, या असत्य का साथ न देकर आत्मसंतुष्ट रहने में आवश्यक होती है। और वह उस उलझन को जानता है जो हमें उसकी सहायता के बिना सही और गलत को समझने में होती है।

इस सम्पूर्ण समझ के साथ, यीशु हमें धोखे और झूठ की प्रभुता से स्वतंत्र करने की प्रतिज्ञा करता है। वह प्रतिज्ञा करता है कि सीखने का मन रखनेवालों पर सत्य को और अधिक प्रगट करते हुए, उन्हें अपने समान सत्य के पक्ष में निड़रता और संवेदनशीलता के साथ खड़े रहने की बुद्धि और साहस देगा। यीशु प्रतिज्ञा करता है कि जो सत्य वह सिखाता है उसे थामे रहना न मात्र किसी को परमेश्वर के अनंत परिवार का हिस्सा बनाता है, परन्तु हमारे अपने हृदय में एवं चारों ओर के संसार में व्याप्त पाप के धोखे से स्वतंत्र होने का अनुभव भी दिलाता है।

सत्य को जानने और सत्य के पक्ष में खड़े रहने में स्वतंत्रता और तृप्ति है। आइए हम सत्य से संबंधित अद्‌भुत बाइबल-आधारित सिद्धान्तों को देखें। हम यह भी देखेंगे कि हमारी *तृप्ति की तलाश* में सत्य के पक्ष में खड़े रहने के लिए हमें क्या करना अवश्य होगा।

1. **क.** आप बेईमानी को अपने चारों ओर के संसार में कहाँ-कहाँ देखते हैं?

   ख. बेईमानी का परिणाम क्या होता है?

2. **क.** कौनसी बात लोगों को झूठ बोलने के लिए प्रेरित करती है? झूठ थोड़े समय के लिए क्या देने की प्रतिज्ञा करता है?

   ख. हम झूठ बोलते हैं तो क्या होता है? बेईमानी वास्तव में हमें किस प्रकार उस तृप्ति से वंचित रखती है जिसे हम पाना चाहते हैं?

3. बाइबल निम्नलिखित वचनों में झूठ के विषय में क्या चेतावनी देती है?
   नीतिवचन 12:22

1 पतरस 3:10, 12

4. निम्नलिखित शास्त्र-वचन झूठ के संबंध में क्या स्पष्ट आज्ञा देते हैं?
लैव्यव्यवस्था 19:11

जकर्याह 8:16

5. बेईमानी को प्रेरित करनेवाला आम कारण प्राय: लालच होता है। यीशु का विरोध करनेवाले अधिकांश धार्मिक अगुवों के मामले में यही बात थी। निम्नलिखित पद झूठ बोलने और भौतिक लाभ के विषय में क्या चेतावनी देते हैं?
नीतिवचन 21:6

1 तीमुथियुस 6:10

6. **क.** बाइबल क्यों कहती है कि हम परमेश्वर की सहायता के बिना सत्य को पहचानने में असमर्थ हैं?
यिर्मयाह 17:9

नीतिवचन 14:12

ख. प्रत्येक मनुष्य में पाए जानेवाले शारीरिक या पापमय स्वभाव का वर्णन बाइबल कैसे करती है?
रोमियों 8:7

7. यूहन्ना 8:34-36 में, यीशु अपनी उस सामर्थ्य के विषय में बताता है जिसके द्वारा वह हमें हमारे स्वार्थी स्वभाव के दासत्व से स्वतंत्र कराता है। निम्नलिखित वचन के अनुसार इसे कौनसी बात संभव बनाती है?
यहेजकेल 36:26-27

संदर्भः टिप्पणी 2, *पवित्र आत्मा,* पृष्ठ 37

8. हमारी सत्य की खोज में हमें परमेश्वर के वचन बाइबल में पाए जानेवाले सिद्धान्तों के विषय में क्या आश्वासन दिया गया है?
भजन संहिता 19:7-10

9. बाइबल, यीशु एवं सत्य के विषय में क्या कहती है?
यूहन्ना 1:14ख

यूहन्ना 14:6

यूहन्ना 18:37

10. क. झूठ के आरंभ के विषय में, यूहन्ना 8:44 में यीशु क्या प्रगट करता है?

संदर्भः टिप्पणी 5, *शैतान, दुष्टात्माएं,* पृष्ठ 68

ख. इस शत्रु से हमारी रक्षा करने के लिए परमेश्वर हमें क्या आश्वासन देता है (इफिसियों 6:14, 17)?

11. जब हम सत्य के पक्ष में खड़े रहते हैं, इसके लिए हमें चाहे जो कीमत चुकानी पड़े, यीशु हम से तृप्ति के मार्ग में किस बात की प्रतिज्ञा करता है?
यूहन्ना 8:32, 36

सारांश

12. हमारी तृप्ति की तलाश में सत्य क्या भूमिका निभाता है? जब आप ईमानदार रहने में असफल हुए तो आपने क्या पाया?

13. बाइबल के अनुसार, सत्य को पहचानने और हमारे अपने धोखेबाज स्वभाव से स्वतंत्र होने में, यीशु मसीह में रखे गए विश्वास को कौनसी भूमिका निभानी चाहिए?

14. कीमत चाहे जो चुकानी पड़े, आपकी तृप्ति की तलाश में परमेश्वर आपको क्या करने की आज्ञा देता है?
नीतिवचन 23:23

पाठ ११ टिप्पणियाँ

1. *यहूदी* (8:48) शब्द उन यहूदी अगुवों की ओर संकेत करता है जो यीशु के विरोधी थे। यूहन्ना ने अपने सुसमाचार में इस शब्द का प्रयोग 70 बार किया है। इसका उपयोग कभी प्रशंसात्मक भाव से (उदाहरण के लिये- 4:22), तो कभी अनिश्चित भाव से (उदाहरण के लिये- 2:6) किया गया है, परन्तु अधिक बार इसे यीशु के शत्रुओं के लिये ही प्रयोग किया गया है। द *एनआइव्ही स्टडी बाइबल*, पृष्ठ 1594

2. **संदर्भः** टिप्पणी 5, *शैतान, दुष्टात्माएं,* पृष्ठ 68

3. *सामरी* (8:48)। सामरियों को मिली-जुली नस्ल के रूप में देखा जाता था, फरीसी वंश के नहीं; और उनकी धार्मिक विधियां यहूदी और मूर्तिपूजक रीतियों का मिश्रण थीं। (देखिए - टिप्पणी 1, *सामरी,* पृष्ठ 45)। जब यहूदी अगुवों ने यीशु पर सामरी होने का आरोप लगाया, तब वे या तो उसे अपनी शिक्षा में धर्मपरायणता का विरोधी होने का आरोप लगा रह थे, या फिर उसके जन्म की ओर संकेत कर रहे थे।

4. *अब्राहम मेरा दिन देखने की आशा से बहुत मगन था* (8:56)। परमेश्वर ने अब्राहम की विश्वासयोग्यता के कारण उससे प्रतिज्ञा की थी, कि उसके वंश से एक ऐसा राष्ट्र उत्पन्न होगा जो सम्पूर्ण जगत को आशीषित करेगा। जब यीशु अब्राहम के मगन होने की बात कर रहा था तब वह संभवतः अब्राहम के उस आनंद का उल्लेख कर रहा था जो उसे परमेश्वर की उस योजना के पूर्ण होने के कारण था जिसके अन्तर्गत मसीह देहधारी होकर सारे राष्ट्रों को आशीषित करनेवाला था (उत्पत्ति 18:18)। विश्वास के द्वारा, अब्राहम ने दूर से ही मसीह के दिन को देखा था और आनंदित हुआ था। द *एनआइव्ही स्टडी बाइबल*, पृष्ठ 1614

5. *पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ!* (8:58)। जब यीशु ने "मैं था," न कहकर "मैं हूँ" कहा, तब उसने उस पवित्र नाम, *मैं हूँ*, का उपयोग किया जिसके द्वारा पुराना नियम में परमेश्वर ने अपना परिचय दिया था (निर्गमन 3:14)। इस पहचान के द्वारा यीशु ने परमेश्वर पिता के साथ एक होकर अनंत अस्तित्व का दावा किया था। इस कथन से यीशु ने सच्चे विश्वासियों को कभी समाप्त न होनेवाला जीवन देने की क्षमता रखने का (8:51) और अब्राहम के साथ अपनी जान-पहचान का (8:56-57) दावा किया था।

देखिए: टिप्पणी 1, *यीशु के "मैं हूँ" कथन। पृष्ठ 86*

यूहन्ना 8:58 में यीशु का कथन, ईश्वरत्व की प्रभावी और प्रबल घोषणा थी। इसके कारण, यहूदियों ने तुरन्त यीशु को पत्थरवाह करने हेतु पत्थर उठाए, क्योंकि उनके अनुसार वह ईश-निन्दा थी, एक ऐसा अपराध जिसके लिए पुराने नियम के यहूदी धर्म में मृत्युदण्ड की सजा थी।

--0--

पाठ १२ जन्म से अन्धे को चंगा करना

टिप्पणी: *इस पाठ में 'बुनियाद पर बनाना' यह भाग कुछ लम्बा है।*

यूहन्ना 9

वह सब्त का दिन था; सम्भवत: उस घटना के बाद का दिन जब यीशु धार्मिक अगुवों के क्रोध से बचकर मन्दिर से निकल गया था (8:59)। उसने शिष्यों के साथ मार्ग में चलते हुए एक भिखारी को देखा जो जन्म से अन्धा था। यहूदी गुरु इस विश्वास का समर्थन करते थे कि लोगों की विकलांगता का कारण उनका अपना या उनके माता-पिता का पाप होता है।[1] परन्तु यीशु ने शिष्यों को समझाया कि अन्धे मनुष्य की दशा का पाप से कुछ लेना-देना नहीं था, परन्तु परमेश्वर उसकी उस दशा का उपयोग उसके जीवन में अपने काम प्रगट करने के लिए करनेवाला था। ऐसा कहते हुए, यीशु ने अन्धे की आँखों पर कीचड़ लगाया, और उससे कहा कि वह जाकर शीलोह के कुण्ड में अपनी आँखे धो ले। वहाँ उस अन्धे ने अनुभव किया कि वह देख सकता था।

जैसे ही लोगों ने जो कुछ हुआ उसके विषय में जाना, अच्छी-खासी खलबली मच गयी। तथापि, यह हलचल कोई उत्सव नहीं परन्तु एक उत्तेजना थी कि क्या हुआ था, और यीशु कौन था। लोग उस मनुष्य को फरीसियों के पास ले गए। फरीसियों ने अपना ध्यान इस बात पर केंद्रित कर दिया कि जब यीशु ने अन्धे को चंगा किया तब उसने उनके सब्त के दिन के नियमों को तोड़ा था।[2] वे बार-बार उस मनुष्य से उसके पहले के अन्धेपन और वह कैसे चंगा हुआ के विषय में प्रश्न करते रहे, और एक बार उसके माता-पिता से भी पूछा। अंत में, फरीसियों में आपस में ही इस बात पर विभाजन हो गया कि यीशु परमेश्वर की ओर से था या फिर वह पापी था। अत: उन्होंने उस चंगे हुए मनुष्य से पूछा कि यीशु कौन था इसके विषय में *वह* क्या सोचता था। वह मनुष्य अचम्भित था कि उन्हें आश्चर्य करने की क्या आवश्यकता थी। उसने वह कह दिया जो उसके लिये स्पष्ट था - यीशु को तो परमेश्वर की ओर से होना ही था, क्योंकि परमेश्वर किसी पापी को ऐसी चंगाई का आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ्य नहीं दिया होता।

उस मनुष्य के उत्तर एवं यीशु में उसके स्पष्ट विश्वास के कारण क्रोधित होकर, उन धार्मिक अगुवों ने उसे आराधनालय से निकाल दिया। उनका दावा था कि वह "तो बिलकुल पापों में जन्मा है," और उन्हें उपदेश देने के योग्य नहीं था। यीशु ने उसके

निकाल दिए जाने का समाचार सुना। यीशु उस मनुष्य से मिला, और धीमे से उस पर प्रगट किया कि वह मसीह था। उस मनुष्य ने तुरन्त विश्वास किया और यीशु को दण्डवत् किया।

तत्पश्चात् फरीसियों की ओर मुड़ते हुए यीशु ने कहा, "मैं इस जगत में न्याय के लिए आया हूँ, ताकि जो नहीं देखते वे देखें, और जो देखते हैं वे अन्धे हो जाएं" (9:39)। फरीसियों ने यीशु के आश्चर्यकर्म[3] के प्रति अपने प्रत्युत्तर से यह दिखा दिया था कि वे आत्मिक अन्तर्दृष्टि का दावा तो करते थे, परन्तु सत्य यदि उनकी कार्य-सूची के अनुरूप न हो, तो वे उसे स्वीकार करने से इनकार करते थे। ऐसा करते हुये उन्होंने स्वयं को दोषी ठहरा दिया था।

परन्तु अन्धे मनुष्य का यह वृत्तांत, यीशु की सामर्थ्य का भौतिक क्षेत्र में एक नाटकीय एवं सुस्पष्ट उदाहरण है, कि यीशु में वह सामर्थ्य है कि जो इच्छुक हैं उन्हें आत्मिक अन्धेपन से बाहर लाए, ताकि वे वह कौन है की सच्चाई को देखें।

पढ़िए यूहन्ना 9:1-13

1. **क.** शिष्यों के अन्धे मनुष्य से संबंधित प्रश्न का उत्तर देते हुए, यीशु ने कष्टों से संबंधित कौनसी विचारधारा का खंड़न किया (9:1-3)?

   संदर्भः टिप्पणी 1, *किसने पाप किया . . .?* पृष्ठ 103

   ख. *ऐच्छिक प्रश्नः* यीशु ने अपने शिष्यों को कौनसे सिद्धान्त दिए, जो आज विश्वासियों के द्वारा लागू किए जा सकते हैं (9:4-5)?

2. **क.** जब उस चंगे हुए मनुष्य ने पहली बार विविध रंगों और आकृतियों को देखा होगा तो उसे क्या लगा होगा?

   ख. उसे जाननेवाले लोगों की प्रतिक्रिया क्या थी (9:8-13)?

पढ़िए यूहन्ना 9:14-34

3. अन्धे मनुष्य के चंगे होने पर फरीसियों ने क्या किया (9:14-17)?

4. अन्धे मनुष्य के माता-पिता फरीसियों के प्रश्नों का उत्तर देने में क्यों सावधान थे (9:18-23)?

5. **क.** फरीसियों के दुबारा पूछने पर उस अन्धे ने क्या ठनठनाता हुआ उत्तर दिया (9:24-25)?

   ख. एक भूतपूर्व अन्धे ने, फरीसियों के अकारण किए जानेवाले व्यवहार के उत्तर में एक छोटा-सा उपदेश दे दिया। उसने कौनसी मुख्य बातें कहीं (9:30-33)?

पढ़िए यूहन्ना 9:35-41

6. जब यीशु अन्धे से मिला तब उसने स्वयं के विषय में क्या प्रगट किया? तब उस मनुष्य ने क्या किया (9:35-38)?

   संदर्भः टिप्पणी 4, *मनुष्य का पुत्र*, पृष्ठ 22

7. **क.** फरीसीयों को चेतावनी देते हुए यीशु ने आत्मिक रीति से निष्कपट और पाखण्डी लोगों के साथ कैसा व्यवहार करने की प्रतिज्ञा की (9:39)?

   ख. आत्मिक ज्ञान रहते हुए भी, सत्य को अस्वीकार करनेवाले धार्मिक अगुवे किस बात के दोषी रहनेवाले थे (9:41)?

टिप्पणी: "फरीसियों को इस बात का धक्का लगा था कि यीशु उन्हें आत्मिक अन्धे समझता था (9:40)। यीशु ने प्रतिकार करते हुए कहा था कि उनके व्यवहार की क्षमायाचना मात्र इस तथ्य से हो सकती थी कि उनमें अन्धत्व (मूर्खता और हठीलापन) था। जो निष्कपट रहे, और यह जान गए कि पाप ने कैसे उन्हें सत्य के प्रति अन्धा किया था, उन्हें उसने आत्मिक समझ और दृष्टि दी। परन्तु जो पाखण्डी, आत्म-सन्तुष्ट और अन्धे बने रहे, उनका उसने इंकार किया।" *एनआइव्ही लाइफ एप्लिकेशन बाइबल,* पृष्ठ 1897। **टिप्पणी 1,** *फरीसी* भी देखिए, पृष्ठ 36

बुनियाद पर बनाना
सत्य के पक्ष में खड़े रहना - २

यीशु ने महिमामय काम करते हुए अन्धे को उसकी आजन्म विकलांगता से चंगा किया था, और उसे भीख मांगने से छुटकारा देकर एक जिम्मेवार नागरिक बनाया था। तथापि, उस चंगे हुए मनुष्य के आसपास के लोग उसके साथ आनन्दित नहीं हुए। परन्तु वे इस बात में लग गए थे कि यीशु पर कैसे हावी होंगे। उस मनुष्य ने, जिसने शायद अपनी चंगाई का उत्सव मनाया होता, स्वयं को धार्मिक राजनीति की चक्की में पिसता हुआ पाया।

जब हमारी आँखे पहली बार खुलती हैं, कि आत्मिक सत्य को देखें और यीशु कौन है समझें, तब यीशु में भरोसा रखना आरंभ करते हुए, हमारा स्वाभाविक प्रत्युत्तर बहुत आनन्द से भर जाना होता है। परन्तु जब दूसरे लोग हमारे विश्वास पर प्रश्न करते हैं, हमारा सत्यपूर्ण उत्तर संभवत: वैसा ही प्रत्युत्तर उकसाता है जैसे यूहन्ना 9 में चंगे हुए मनुष्य के साथ हुआ था। प्रोत्साहन और आनंद मनाने के स्थान पर, हमें उनसे जो अपने ही दृष्टिकोण तथा कार्य-सूची पर अटके रहते हैं, मात्र निराशा, और यहाँ तक कि तिरस्कार ही मिलता है।

अब हम दो महत्त्वपूर्ण संदेश देखेंगे जो इस वृत्तांत से मिलते हैं। प्रथम, सत्य के प्रति विस्तृत खुलापन रखने, और जो शिक्षा वास्तविकता के अनुरूप नहीं है उससे चिपके रहने से इनकार करने का महत्त्व। दूसरा, मसीह में विश्वास के कारण होनेवाले सताव की अपेक्षा करने तथा उसका सामना करने संबंधित बाइबल-आधारित सिद्धान्तों को जानने का महत्त्व।

हम अपनी *तृप्ति की तलाश* में, सत्य के पक्ष में खड़े रहने के महत्त्व का अध्ययन आगे बढ़ाते हुए, कुछ बाइबल वचनों को देखेंगे जो इन महत्त्वपूर्ण मुद्दों से संबंधित हैं।

(क) सीखने की मनोवृत्ति बनाए रखना

1. **क.** धार्मिक अगुवों की चिंता का विषय क्या था, वह मनुष्य या उनकी अपनी कार्य-सूची?

   ख. जो हमारे विश्वास को हतोत्साहित करेंगे, ऐसों से मिलनेवाले तिरस्कार के विषय में यह वृत्तांत हमें क्या सिखाता है?

2. **क.** वह कौनसी बात थी जिसने धार्मिक अगुवों को सत्य को देखने से रोका था?

   ख. सत्य को समझने की हमारी क्षमता को कौनसी बातें नष्ट कर सकती हैं?
   लूका 8:11-14

   संदर्भः टिप्पणी 5, *शैतान,* पृष्ठ 68

   ग. यीशु ने लूका 8:15 में सीखनेवाले मन का वर्णन कैसे किया है?

3. **क.** सीखनेवाली मनोवृत्ति बनाए रखने के महत्त्व के विषय में, निम्नलिखित वचन क्या प्रगट करते हैं?
   नीतिवचन 2:1-8

   ख. यदि हम परमेश्वर की ओर सीखनेवाली मनोवृत्ति नहीं रखते हैं, तो क्या हो सकता है?
   रोमियों 1:21

4. आत्मिक समझ में बढ़ने हेतु बाइबल हमें क्या निर्देश देती है?
   याकूब 1:21-22

नीतिवचन 1:5

5. अवश्य है कि नयी आत्मिक समझ परमेश्वर के वचन बाइबल से मेल खानेवाली हो। इस विषय में भजन संहिता 119:160 में क्या कहा गया है?

(ख) विश्वास के लिए सताव सहना

6. मसीह में विश्वास करनेवालों को बाइबल किस विषय में चेतावनी देती है?
यूहन्ना 15:20

2 तीमुथियुस 3:12

7. विश्वास के लिये सताव सहने के संबंध में किन इनामों की प्रतिज्ञा की गई है?
मत्ती 5:10-12

रोमियों 5:3-5

8. **क.** जो मसीह के बिना है उनके विषय में 1 कुरिन्थियों 2:14 हमें क्या स्मरण दिलाता है?

ख. *ऐच्छिक* - परमेश्वर का विरोध करनेवालों की दशा का वर्णन इफिसियों 4:17-19 कैसे करता है?

ग. हमें अपने स्वयं के विषय में क्या स्मरण रखना अवश्य है, ताकि हम अपने सतानेवालों का न्याय करते समय प्रतिक्रिया दिखाने के बजाय संवेदनशीलता दिखाएं?
तीतुस 3:3-5

9. औरों के द्वारा हमारे विश्वास पर होनेवाले हमलों का उत्तर देने के विषय में बाइबल हमें क्या निर्देश देती है?
1 कुरिन्थियों 15:58

1 पतरस 2:21-23

10. क. मत्ती 5:14 में, यीशु ने शिष्यों को "जगत की ज्योति" कहा है। हम अपने चारों ओर के संसार में किस प्रकार सर्वोत्तम रीति से मसीह की गवाही दे सकते है?
2 तीमुथियुस 2:24-26

1 पतरस 3:15-16*

ख. 1 यूहन्ना 4:7 के अनुसार एक मसीही का चिन्ह क्या होना चाहिए?

* मसीहत के विषय में सामान्यत: पूछे जानेवाले प्रश्नों के उत्तरों के लिए सहायक पुस्तकें: - पीटर क्रीफ्ट, रोनॉल्ड के. टेसेली, *हैन्डबुक ऑफ क्रिश्चन अपॉलॉजेटिक्स्*, इन्टर वर्सिटि प्रेस
- केनेथ बोआ, लैरी मूडी, *आइ एम ग्लैड यू आस्क्ड्*, व्हीक्टर बुक्स
- जॉश मैक्डोवेल, *मोर देन अ कारपेन्टर*, हियरस् लाईफ पब्लिशर
- पौल लिट्ल, *नो व्हाय यू बिलिव्ह*, इन्टर वर्सिटि प्रेस
- जॉन वरविक मोन्टगोमेरी, *हिस्टरी एण्ड क्रिश्चनिटि*, हियरस् लाइफ पब्लिशर
- सी. एस. लुईस, *मिअर क्रिश्चनिटि*

11. जब हम पवित्र आत्मा को हमारे जीवन को परिपूर्ण करने कहते हैं (इफिसियों 5:18ख), वह विश्वास के लिये होनेवाले सताव को सहने में हमारी सहायता कैसे करता है?
लूका 12:11-12

संदर्भ: टिप्पणी 2, *पवित्र आत्मा*, पृष्ठ 37

सारांश

12. क्या आपके जीवन में ऐसी कोई बात है, जो आपको आत्मिक सच्चाई में बढ़ने से रोक रही है?

13. जब आप नयी आत्मिक सच्चाई सुनते हैं, तब आपको किस बात के विषय में सावधान रहना आवश्यक है?

14. क. आपने कब अपने विश्वास के कारण विरोध सहा है? आपके आसपास की दुनिया के वे कौनसे व्यापक दबाव हैं जिन्होंने आपको बाध्य किया कि आप सन्तुष्ट रहें और मसीह कौन है और उसने आपके जीवन में क्या किया है न बताएं?

ख. इस अध्ययन ने आपको क्या करने का प्रोत्साहन दिया है?

पाठ १२ टिप्पणियाँ

1. *किसने पाप किया . . . ?* (9:2)। "यहूदी गुरुओं ने इस सिद्धान्त को विकसित किया था कि 'ऐसी कोई मृत्यु नहीं जो बिना पाप के हो, और ऐसा कोई कष्ट नहीं जो बिना अधर्म के हो।' वे यहां तक सोच सकते थे कि एक बालक अपनी माता के गर्भ में भी पाप कर सकता है, या यह कि उसकी आत्मा ने अस्तित्व में आने के पहले की दशा में पाप किया होगा। उनकी यह भी धारणा थी कि कुछ लोगों पर उनके माता-पिता के पाप के कारण भारी दण्ड पड़ा था।" द *एनआइव्ही स्टडी बाइबल,* पृष्ठ 1614

"परन्तु मसीह ने उस मनुष्य के कष्ट का उपयोग विश्वास के विषय में शिक्षा देने और परमेश्वर की महिमा के लिये किया। हम एक ऐसे पापमय संसार में रहते हैं, जहां भले व्यवहार को सदा पुरस्कार नहीं दिया जाता, और बुरे व्यवहार को हमेशा दण्ड नहीं मिलता। इस कारण, कभी-कभी निर्दोष लोगों को कष्ट सहना पड़ता है। यदि परमेश्वर हमारी हर एक प्रार्थना के उत्तर में कष्ट को दूर

करने लगे तो हम प्रेम और भक्ति के कारण नहीं, परन्तु मात्र आराम और सुविधाओं के लिए उसके पीछे चलेंगे। हमारे कष्टों का कारण चाहे जो हो, उसका सामना करने में हमारी सहायता करने की सामर्थ्य यीशु के पास है। जब आप किसी बीमारी, दु:खद घटना, निर्बलता/विकलांगता को सहते हैं तब, 'यह मेरे साथ क्यों हुआ?' या 'मैंने क्या बुरा किया?' ऐसे प्रश्न करने का प्रयास मत कीजिए। इसके स्थान पर, परमेश्वर से उस परीक्षा के लिए सामर्थ्य, और जो हो रहा है उसे समझने के लिए सुस्पष्ट दृष्टिकोण मांगिए।" *एनआइव्ही लाइफ एप्लिकेशन बाइबल,* पृष्ठ 1895

2. *वह सब्त के दिन का पालन नहीं करता* (9:16)। जब यीशु ने मिट्टी सानी और उस अन्धे मनुष्य को चंगा किया, उसने दो बार सब्त के दिन के नियम को तोड़ा, जिसके अनुसार काम करने या चंगाई करने की अनुमति नहीं थी। फरीसी सब से बढ़कर सब्त के दिन का पालन करने पर जोर देते थे। "किसी और विषय पर रब्बियों के द्वारा दी गयी शिक्षा इतनी अधिक कष्टदायक रीति से बारीक और अपने तथाकथित उद्देश्य में इतनी साफ-साफ बेतुकी नहीं थी। क्योंकि यदि हम सही रीति से समझे लेते हैं कि उन जटिल और असहनीय रीति से भारी विधियों और नियमों की तह में क्या है . . ., यह इसलिए था कि, निषेधात्मक दृष्टि से, सारे परिश्रम से पूर्ण आराम पाना, और, सकारात्मक दृष्टि से, सब्त को एक आनंद का समय बनाना।" सब्त के विषय में रब्बियों के भयंकर अतिशयोक्तिपूर्ण दृष्टिकोण, और उनके अंतहीन भारी नियम एक बहुत ही लम्बा विषय है, जिसे इस अध्ययन में पूरा नहीं किया जा सकता।। वास्तव में, *बेबिलोन ताल्मुड*, (यहूदी-संहिता) में सब्त के नियमों पर 24 अध्याय थे, और कहा जाता है कि एक रब्बी को मात्र एक अध्याय में दिए गए नियम का अध्ययन करने में ढाई वर्ष का समय लगा था।" ए. एडर्शीम, द *लाइफ एण्ड टाईम्स ऑफ जीजस* द *मसाया,* अपेन्डिक्स 17, पृष्ठ 777

3. **संदर्भ:** टिप्पणी 1, *यीशु के आश्चर्यकर्म,* पृष्ठ 76

--0--

पाठ १३ अच्छा चरवाहा यीशु

यूहन्ना 10

जब यीशु ने एक जन्म से अन्धे मनुष्य को चंगा किया, यहूदी अगुवों में बड़ी खलबली मच गयी (अध्याय 9)। अंततः, उस चंगा किए गए मनुष्य को, उसने यीशु के विषय में दी गवाही के कारण, आराधनालय में से निकाल दिया गया। परन्तु यीशु ने इस मनुष्य को खोज निकाला, उससे अपना संबंध बनाया, और उस अवसर का उपयोग उसे और भीड़ को अपने अच्छा चरवाहा होने के विषय में कुछ बताने के लिये किया।

उन धार्मिक अगुवों के विपरीत जिन्होंने परमेश्वर की ओर से चरवाहे होने का दावा तो किया था परन्तु उस अन्धे की थोड़ी भी चिंता नहीं की थी, यीशु ने स्वयं को एक अच्छा चरवाहा कहा। उसकी भेड़ें, इस्राएल में के विश्वासयोग्य लोग, उसका शब्द सुनेंगे और निर्भयता से उसके पीछे चलेंगे। एक अच्छे चरवाहे के रूप में, यीशु ने स्वयं को भेड़ों की भेड़शाला का द्वार या मार्ग बताया। वे सब जो उसके द्वारा प्रवेश करेंगे, उद्धार पाएंगे और उन्हें बहुतायत का जीवन मिलेगा। वह उन चोर, डाकू या मजदूर जैसा नहीं था जो भेड़ों को तितर-बितर करेंगे और मार देंगे। यीशु ने स्पष्ट किया कि वह भेड़ों के लिए अपना प्राण देने आया था। उसने दूसरी (गैर-यहूदी) भेड़ों की भी चर्चा की जो उसका शब्द सुनेंगी और उसके झुण्ड का हिस्सा बनेंगी। यीशु ने आगे यह भी कि कहा कि पिता ने, अपने प्रेम में, उसे अधिकार दिया था कि अपनी भेड़ों के लिए अपना प्राण दे और फिर उसे वापस भी ले।

यीशु के शब्द सुनकर यहूदियों ने अलग-अलग प्रतिक्रिया दिखाई। कुछ लोागों ने उसे दुष्टात्मा-ग्रस्त कहा, परन्तु औरों ने तर्क प्रस्तुत किया कि दुष्टात्मा से ग्रसित व्यक्ति अन्धे को दृष्टि नहीं दे सका होता, और न ऐसी शिक्षा तैयार कर सका होता।

स्थापन-पर्व के आठ दिनों के दौरान जब यीशु मन्दिर में टहल रहा था, यहूदियों ने उसे चुनौती दी कि वह स्वयं को खुले रूप में मसीह घोषित करे। यीशु ने उत्तर में कहा कि वैसा उसने पहले ही कर दिया था, और यद्यपि उसके आश्चर्यकर्म[1] और सच्चाई ने उसके शब्दों को प्रमाणित किया था, वे विश्वास करनेवाले नहीं थे, क्योंकि वे उसकी भेड़ें नहीं थे। यीशु ने आगे कहा कि उसकी भेड़ें उसका शब्द सुनेंगी, और उसकी आवाज को पहचानेंगी, और उसके पीछे हो लेंगी। वे यीशु के और पिता के हाथों में अनंतकाल तक सुरक्षित रहेंगी। तब यीशु ने अपने ईश्वरत्व का सर्वाधिक स्पष्ट

दावा प्रस्तुत किया, "मैं और पिता एक हैं" (10:30)। जब यहूदियों ने उसे इस ईश-निंदा (परमेश्वर होने का दावा) के लिए पत्थरवाह करने हेतु पत्थर उठाए, यीशु ने उनसे याचना की कि वे अपनी आँखे खोलकर उसके दावे के प्रमाण को देखें। वे उसके जीवन में किसी पापमय शब्द या कार्य की ओर इशारा नहीं कर सकते थे और उसके दया से प्रेरित होकर किए गए आश्चर्यकर्म उसमें वास करनेवाले परमेश्वर, पिता, के चरित्र को प्रतिबिम्बित करते थे। यीशु के शत्रुओं पर उसके शब्दों का कोई असर नहीं हुआ। उन्होंने उसे पकड़ने का प्रयत्न किया परन्तु वह उनके हाथ से निकल गया।

इसके पश्चात्, यीशु यरदन के पार पीरिया से होकर उस क्षेत्र में गया जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने अपनी आरम्भिक सेवकाई की थी। वहाँ अनेक लोग यीशु के पास आए और उस पर विश्वास किया।

पढ़िए यूहन्ना 10:1-21

1. **क.** यीशु ने, परमेश्वर के झुण्ड (इस्राएल में से विश्वासयोग्य लोग) के संबंध में भेड़ और चरवाहे की रूपक-कथा के द्वारा किस प्रकार स्वयं को धार्मिक अगुवों से भिन्न बताया (10:1-5)?

   संदर्भ: टिप्पणी 3, *प्राचीन निकट-पूर्वी देशों के भेड़-पालन*, पृष्ठ 112

   ख. यहेजकेल 34:2-5, 10 में दिए वर्णन के अनुसार इस्राएल में पाए जानेवाले अविश्वासयोग्य अगुवों (चरवाहों) के लक्षणों की सूची बनाइए।

   संदर्भ: टिप्पणी 2, *परमेश्वर के लोगों के चरवाहे*, पृष्ठ 112

2. जब लोगों ने यीशु के शब्दों को नहीं समझा, उसने आगे स्वयं का वर्णन भेड़शाला में प्रवेश करने के लिए भेड़ों के द्वार के रूप में किया। यीशु के अनुसार वह कौनसी बात थी जो केवल वही दे सकता था (10:9; 14:6 भी देखिए)?

टिप्पणी: *जितने मुझ से पहले ...* (10:8)। यीशु यहाँ उन "झूठे चरवाहों" के

विषय में कह रहा था जो यहूदी इतिहास के सम्पूर्ण समय में पाए गए थे, जो फरीसियों और महायाजकों के समान थे। वह पुराना नियम के विश्वासयोग्य भविष्यद्वक्ताओं के बारे में नहीं कह रहा था।

3. यीशु ने स्वयं के और भेड़ों के शत्रुओं के बीच क्या भिन्नता बताई (10:10)?

4. **क.** यीशु ने अपने और इस्राएल में चरवाहे होने का दावा करनेवालों के मध्य और क्या तुलना की है (10:11-13)?

ख. यीशु ने अपने और अपनी भेड़ों के बीच के संबंध का वर्णन कैसे किया (10:14-16)?

टिप्पणी: *इस भेड़शाला की नहीं* (10:16) यह उन अन्यजातियों की ओर संकेत करता है जो बाद में विश्वास करनेवाले थे।

5. **क.** यीशु ने, अच्छे चरवाहे के रूप में उस की जो जिम्मेवारी थी उसके विषय में क्या भविष्यवाणी की (10:17-18)?

ख. इन शब्दों के साथ यहूदी अगुवों में क्या मत फैल गया (10:19-21)?

पढ़िए यूहन्ना 10:22-42

6. जब यहूदियों ने यीशु को स्वयं को खुले रीति से मसीह घोषित कर देने की चुनौती दी, तब उसने कैसे प्रत्युत्तर दिया (10:25-26)?

7. **क.** यीशु की भेड़ों के जो गुण यूहन्ना 10:27-29 में दिए गए हैं, उनकी सूची बनाइए।

ख. यीशु ने अपनी शिक्षा के संदर्भ में क्या दावा किया जिसे उसके विरोधियों ने ईश-निन्दा समझा (10:30)?

टिप्पणी: *मैं और पिता एक हैं* (10:30) यह "यीशु के द्वारा अपने ईश्वरत्व के विषय में किया गया सबसे स्पष्ट कथन है। यीशु और उसका पिता एक ही व्यक्ति नहीं है परन्तु वे तत्त्व और स्वभाव में एक हैं। इस प्रकार, यीशु मात्र एक अच्छा गुरु ही नहीं है - वह परमेश्वर है। उसका परमेश्वर होने का दावा अचूक था। धार्मिक अगुवे उसे मार डालना चाहते थे, क्योंकि उनके नियम कहते थे कि जो कोई स्वयं को परमेश्वर कहलाएगा वह मार डाला जाए (लैव्यव्यवस्था 24:16)।" *लाइफ एप्लिकेशन बाइबल, एनआइव्ही,* पृष्ठ 1898

8. जब यहूदियों ने यीशु को ईश-निन्दा करने के कारण मार डालने के लिए पत्थर उठाए तब उसने किस ओर इशारा किया कि वे सत्य को देखें (10:32)?

संदर्भ: टिप्पणी 9, *यीशु के आश्चर्यकर्म,* पृष्ठ 76

9. यीशु ने कहा कि यदि पवित्रशास्त्र अगुवों और न्यायियों को ईश्वर कहता है (भजन संहिता 82:6), तो पृथ्वी-पर-भेजा-गया परमेश्वर का पुत्र निश्चय ही कितना अधिक इस दावे का हकदार होगा (10:34-36)! यीशु ने उनसे क्या देखने की याचना की और क्यों (10:37-38)?

10. यीशु के यरूशलेम में अपने शत्रुओं के हाथ से बच निकलने के बाद क्या हुआ (10:39-42)?

बुनियाद पर बनाना
असुरक्षा पर विजय पाना

परमेश्वर ने सम्पूर्ण बाइबल में स्वयं को चरवाहा कहा है। बाइबल के समय के लोग चरवाहे की भूमिका से बहुत अधिक परिचित थे, क्योंकि भेड़-पालन बहुत आम बात थी। जब यीशु ने स्वयं का वर्णन अपनी भेड़ों के लिए प्राण देनेवाले अच्छे चरवाहे के रूप में करना आरंभ किया, वह अपने अनुयायियों के लिए सुरक्षा, अगुवाई और निश्चिन्तता की प्रतिज्ञा हेतु सुन्दर और सुपरिचित शब्द-चित्रण का उपयोग कर रहा था।

भेड़ों के समान ही, जो बहुत ही चंचल प्राणी होती हैं, हमें भी शांत रहने के लिए निश्चिन्त होने की आवश्यकता होती है। हमारी उपलब्धियाँ या सम्पत्ति चाहे जो हो, हम तब तक सन्तुष्ट और तृप्त नहीं हो सकते जब तक हम वर्तमान और भविष्य के खतरों की चिंता और भय से मुक्त नहीं होते।

यीशु, स्वयं को अच्छे चरवाहे के रूप में प्रगट करने में, जो उस में भरोसा रखते हैं उनके लिए चिंता पर विजय पाने की और भय को शांत करने की प्रतिज्ञा कर रहा था। आइए हम इस ताजगी देनेवाले और आशाभरे संदेश को, अपनी व्यक्तिगत *तृप्ति की तलाश* के प्रकाश में ध्यानपूर्वक देखें।

1. **क.** एक अच्छे चरवाहे की, अपनी भेड़ों के साथ की भूमिका का वर्णन आप कैसे करेंगे?

   ख. आप लोगों के अच्छे "चरवाहे" का वर्णन कैसे करेंगे?

2. **क.** अच्छी और बुरी चरवाही का परिणाम क्या होता है?

   ख. भेड़े वास्तव में बदबूदार और बुद्धिहीन होती हैं। भेड़ों की देखभाल करने के लिए एक अच्छे चरवाहे में किन गुणों का होना आवश्यक है?

3. अपने भेड़ों के प्रति प्रभु की चिंता की विशेषताओं की सूची बनाइए।
यशायाह 40:11

यहेजकेल 34:12, 14-16

टिप्पणी: भेड़ों के मध्य भेद करने में "मोटी और बलवन्त" (यहेजकेल 34:16) से इशारा उनकी ओर है जो इस्राएल में परमेश्वर के झुण्ड की निर्बल भेड़ों पर अत्याचार करते थे।
यूहन्ना 10:11

4. भजन संहिता 23 में यहोवा शब्द का उपयोग अच्छे चरवाहे का वर्णन करने के लिए किया गया है। परमेश्वर के लिए इस इब्री नाम का अर्थ इस प्रकार है: "*अनुग्रह का परमेश्वर; वह परमेश्वर जिस पर भरोसा किया जा सकता है; जो विश्वासयोग्य है; परमेश्वर जो सर्वदा एकसा है और जिसमें परिवर्तन नहीं होता; वह जिस पर विश्वास किया जा सकता है कि वह अपनी सारी प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा।*" इस प्रकार की देखभाल किसी की तृप्ति को कैसे बढ़ा सकती है?

5. **क.** बाइबल के समय के चरवाहे सोटे और लाठी का उपयोग करते थे, जो भेड़ोंको आराम पहुँचाने के लिए होती थीं। सोटा एक लकड़ी का मजबूत टुकड़ा होता था, जिसे चरवाहा भेड़ों के शत्रुओं को मारकर भगाने के काम में लाता था। लाठी एक लम्बी, मुड़ी हुई छड़ी होती थी, जिसे चरवाहा भेड़ की पीठ में अटकाता था जब वह दूर जाना आरंभ करती थी। ये वस्तुएं हमारे अच्छा चरवाहा, यीशु मसीह, के साथ के संबंध में किन बातों का प्रतीक हो सकती हैं?

ख. अच्छा चरवाहा के रूप में प्रभु की सुरक्षा के संबंध में निम्नलिखित वचन क्या उदाहरण प्रस्तुत करते हैं?
निर्गमन 14:14

भजन संहिता 18:2

ग. प्रभु की अगुवाई और अनुशासन के विषय में निम्नलिखित वचन क्या सिखाते हैं?
भजन संहिता 25:9

यशायाह 30:21

यशायाह 48:17

6. **क.** भजन संहिता 23 में अच्छे चरवाहे की देखभाल के किन लाभों का वर्णन किया गया है?

ख. अच्छे चरवाहे की देखभाल से लाभ पाने के लिए भेड़ को क्या करना आवश्यक है?
नीतिवचन 3:5-6

सारांश

7. **क.** आपके जीवन के कौन से भाग अभी आपके लिए इस समय असुरक्षा पैदा कर रहे हैं? आप को कहां सुरक्षा या अगुवाई की आवश्यकता महसूस हो रही है?

ख. जब यीशु ने स्वयं का वर्णन एक अच्छे चरवाहे के रूप में किया, तब इस शर्त पर कि आप अपनी आवश्यकताओं के लिए उस पर भरोसा करेंगे, उसने आपसे क्या प्रतिज्ञा की?

8. यीशु के द्वारा दी जानेवाली देखभाल और अगुवाई का अनुभव करने से आपको कौनसी बातें रोक सकती हैं?

9. अच्छे चरवाहे से आपके संबंध में आप किस बात को सर्वाधिक चाहते हैं?

पाठ १३ टिप्पणियाँ

1. **संदर्भः** टिप्पणी 1, *यीशु के आश्चर्यकर्म,* पृष्ठ 76

2. *परमेश्वर के लोगों के चरवाहे* । यूहन्ना 10:1-30 को पुराना नियम की (तथा प्राचीन निकट-पूर्वी देशों की) "चरवाहे" की उस कल्पना के प्रकाश में समझना अवश्य है जो परमेश्वर के लोगों के राजकीय रखवाले का प्रतीक थी। परमेश्वर स्वयं ही "इस्राएल का चरवाहा" कहलाता था (भजन संहिता 80:1; तुलना कीजिए- भजन संहिता 23:1; यशायाह 40:10-11; यहेजकेल 34:11-16), और उसने इस्राएल के अगुवों ("चरवाहों") को महान जिम्मेवारी सौंपी थी, जिसका आदर करने से वे चुक गए थे। परमेश्वर ने इन झूठे चरवाहों को त्याग दिया (देखिएः यशायाह 56:9-12; यहेजकेल 34) और भेड़ों की चिंता करने के लिए एक सच्चा चरवाहा, मसीह, देने की प्रतिज्ञा की (यहेजकेल 34:23)। द *एनआइव्ही स्टडी बाइबल,* पृष्ठ 1615

3. *प्राचीन निकट-पूर्वी देशों के भेड़-पालन* में "भेड़शाला पत्थर से बना चौकोर घेरा हुआ करता था जिसके एक ओर द्वार होता था। इस द्वार पर एक द्वारपाल या चौकीदार का पहरा होता था, जिसका काम अधिकृत व्यक्ति को प्रवेश करने देना, और घुसपैठियों को बाहर रखना था। यदि कोई और किसी ओर से चढ़कर भेड़शाला में घुसता हुआ दिखाई देता तो यही समझ लेना सुरक्षित होता था कि वह कोई घुसपैठिया था। ऐसों को रोकने के लिए दीवारों के ऊपरी भागों में कंटीली झाड़ियां लगाई जाती थीं। एक ही घेरे में एक से अधिक झुण्ड रखे जाने की संभावना होती थी; परन्तु इसके लिए चरवाहे को केवल द्वार पर खड़े होकर भेड़ों को पुकारने की आवश्यकता होती थी; उसकी भेड़ें उसका शब्द सुनकर पहचान लेतीं और उसके पास आतीं। इतना ही नहीं, झुण्ड इतना छोटा होता था कि वह अपनी प्रत्येक भेड़ को व्यक्तिगत रूप से जान पाता था, और उन्हें नाम से पहचानता था। यहां यीशु के द्वारा बनाए गए शब्द-चित्रण में महत्त्वपूर्ण बात चरवाहे और उसकी भेड़ों के बीच का वह व्यक्तिगत लगाव

है, जो उन्हें उसके साथ बनाए रखता है, जब वे उसके मार्गदर्शन का अनुसरण करती हैं। बाइबल के दिनों के चरवाहों के पास सहायता के लिए कोई कुत्ता नहीं होता था, जैसे कि आज के आधुनिक चरवाहों के पास होता है।" एफ. एफ. ब्रुस, द *गॉस्पेल ऑफ जॉन,* पृष्ठ 224

--0--

पाठ १४ लाजर मृतकों में से जिलाया गया

यूहन्ना 11

यीशु की यरदन पार की पीरिया प्रांत की सेवकाई के समय, उसे समाचार मिला कि मरियम और मार्था का भाई लाजर बहुत बीमार था। यीशु के ये प्रिय मित्र बैतनिय्याह में रहते थे, जो यरूशलेम से दो मील से कम की दूरी पर था।

यीशु ने, लाजर की दशा का समाचार मिलने पर अपने शिष्यों से कहा कि उसकी बीमारी परमेश्वर और उसके पुत्र की महिमा करने के उद्देश्य से थी। तथापि यीशु तुरन्त बैतनिय्याह को नहीं गया, परन्तु पीरिया में ही दो दिन और रुक गया। इस में शंका नहीं कि शिष्यों ने चैन की सांस ली होगी कि यीशु यहूदिया में लौट नहीं रहा था, जहां कुछ ही दिनों पहले उसके शत्रुओं ने उसे पत्थरवाह करने का प्रयास किया गया था।

तब यीशु ने घोषणा की, कि लाजर को नींद (अर्थात् मृत्यु) से जगाने के लिए बैतनिय्याह को जाने का समय आ गया था। शिष्य यीशु के प्राण के लिए डरे हुए थे, और विरोध करने लगे कि उसे लौटकर यहूदिया में नहीं जाना चाहिए। परन्तु यीशु ने कहा कि वह वहां जाने के लिए आनंदित था, क्योंकि आनेवाली घटना उनके विश्वास को बहुत बढ़ानेवाली थी। तब थोमा ने शिष्यों की हिम्मत को यह कहकर जुटाया, "आओ, हम भी उसके साथ मरने को चलें।"

यीशु बैतनिय्याह के बाहरी सीमा में पहुँचा तब लाजर को मर कर चार दिन हो गए थे। मार्था ने उससे मिलकर विश्वास के शब्द बोले, "हे प्रभु, यदि तू यहां होता, तो मेरा भाई कदापि न मरता। और अब भी मैं जानती हूं कि जो कुछ तू परमेश्वर से मांगेगा, परमेश्वर तुझे देगा।" यीशु ने उसे आश्वासन दिया, "तेरा भाई जी उठेगा।" "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जिएगा।"[1]

मार्था ने मरियम को यीशु के पास लाया, और वह तब उसके साथ रोया जब वे, और बहुतेरे शोक मनानेवाले यहूदी, लाजर की कब्र की ओर गए। कब्र पर रखे गए पत्थर को हटाने के बाद, यीशु ने बड़े शब्द से अपने पिता से प्रार्थना की। वह चाहता था कि वहां उपस्थित लोग, होनेवाले आश्चर्यकर्म में पिता ने अपने पुत्र को दिए समर्थन को देखें। तत्पश्चात्, यीशु ने कब्र में बड़े जोर से पुकारा, "हे लाजर, निकल आ!"

लाजर, कफन से हाथ पांव बन्धे हुए बाहर निकल आया। यीशु ने उसके कफन को खोलने कहा। लाजर जीवित और स्वस्थ मुक्त किया गया।

देखनेवाले यहूदियों में से बहुतेरे आश्चर्यचकित हुए, और यीशु में विश्वास किया। दूसरे सीधे धार्मिक अधिकारियों के पास गए, ताकि यीशु ने जो किया था उसकी सूचना उन्हें दें। सन्हेद्रिन[2] ने एक विशेष बैठक बुलाई, जिसमें महायाजक काइफा ने घोषणा की कि यीशु को मरना ही होगा, क्योंकि उसकी बढ़ती हुई प्रसिद्धि ने यहूदी राष्ट्र की रोम के साथ की गई सन्धि को संकट में डाल दिया था। उस क्षण से यहूदी अगुवों ने यीशु को मार डालने का षडयंत्र रचने लगे।

यीशु और उसके शिष्य सार्वजनिक स्थान से हटकर यरूशलेम की पूर्वोत्तर दिशा में जंगल के निकट के देश में इफ्राईम नामक एक नगर को चले गए। जैसे ही लोग यरूशलेम में फसह के पर्व के पहले शुद्धीकरण के लिए आने लगे, हर एक जन यीशु को खोज रहा था, और वे चर्चा कर रहे थे कि इस गलीली बढ़ई और सामर्थी धार्मिक और राजनितिक यहूदी अधिकारियों के बीच चल रहे संघर्ष का क्या होगा। महायाजकों और फरीसियों ने यीशु को कानून से बहिष्कृत ठहरा दिया था, और निर्देश दे दिए थे कि जिस किसी को उसका पता चले, वह अधिकारियों को उसकी सूचना दे, ताकि वे उसे पकड़ सकें।

पढ़िए यूहन्ना 11:1-16

1. लाजर का समाचार मिलने पर यीशु की पहली प्रतिक्रिया क्या थी (11:4-6)?

2. यीशु के यहूदिया जाने के निर्णय से शिष्य क्यों चकित थे (11:8)?

3. यीशु ने उनके वहां जाने पर क्यों जोर दिया (11:9-15)?

   संदर्भः टिप्पणी 3, *दिन के बारह घंटे,* पृष्ठ 121

4. थोमा को सामान्यतः उसके शंका करनेवाले स्वभाव के लिए जाना जाता है। यहां उसने किस भक्ति और साहस को दिखाया (11:16)?

पढ़िए यूहन्ना 11:17-37

5. जब यीशु मार्था और मरियम के घर के पास पहुँचा, तब वहां की परिस्थिति का वर्णन कीजिए (11:17-19)?

6. यीशु के साथ के इस वार्तालाप में आप मार्था के विषय में कौनसी सकारात्मक बातें देखते हैं (11:20, 21-22, 27)?

7. मार्था ने यीशु में पूरा विश्वास प्रकट किया। उसके उत्तर में यीशु ने कौनसी अद्‌भुत घोषणाएं कीं (11:23, 25-26)?

   संदर्भः टिप्पणी 1, . . . *जीवन मैं हूँ*, पृष्ठ 120

8. यीशु ने मरियम को क्या उत्तर दिया, और उसके इस उत्तर ने उसके विषय में क्या दर्शाया (11:33, 35)?

पढ़िए यूहन्ना 11:38-44

9. यीशु की प्रार्थना के अनुसार इस घटना का उद्देश्य क्या था (11:42)?

10. **क.** यीशु की आज्ञा से कौनसी अविश्वसनीय घटना घटी (11:43-44)?

    ख. यीशु ने इस आश्चर्यकर्म के द्वारा किस अधिकार और संबंध को प्रगट किया?

पढ़िए यूहन्ना 11:45-57

11. यीशु के इस आश्चर्यकर्म के परिणाम-स्वरूप क्या हुआ (11:45-53, 57)?

    संदर्भः टिप्पणी 2, *सन्हेंद्रिन,* पृष्ठ 120; और टिप्पणी 4, *काइफा जो महायाजक था ... भविष्यवाणी की,* पृष्ठ 121

12. यीशु के जनसाधारण से दूर हो जाने पर भी उसकी अनुपस्थिति में क्या प्रगट हुआ (11:56)?

बुनियाद परबनाना
अंतिम तृप्ति

मानव के अत्यंत भयानक अनुभवों में से एक मृत्यु है। सब से बड़ी असुरक्षा, मृत्यु के सामने बेबस होने से उत्पन्न होती है; यह वह सच्चाई है जो हम सब पर प्रगट करती है कि अन्ततः जीवन पर नियंत्रण करने में हम असमर्थ हैं। स्वाभाविक मानवीय लालसा यह है कि हम, और वे जिनसे हम प्रेम करते हैं, कभी न मरें।[5] सभोपदेशक 3:11 के अनुसार यह लालसा परमेश्वर ने ही दी है। "उसने (परमेश्वर ने) मनुष्यों के मन में अनादि-अनंत काल का ज्ञान उत्पन्न किया है।"

अवश्य है कि हम अपनी *तृप्ति की तलाश* में सम्पूर्ण शान्ति का अनुभव करने के लिए, 'यीशु मसीह मृत्यु पर सामर्थी है' इस आशा के संदेश को ग्रहण करें। इस प्रकार, यीशु के यूहन्ना 11:25 में कहे शब्द, "और जो कोई जीवित है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा," बाइबल के सर्वाधिक मनोहर और आशापूर्ण शब्दों में से हैं। यीशु ने लाजर को जीवित करने के द्वारा अपने पीछे चलनेवालों को वर्तमान में आत्मिक जीवन, और यहां के बाद अनंत जीवन दोनों का आश्वासन दिया।

एडवर्ड द कन्फेसर ने अपनी मृत्यु के पहले कहा था: "विलाप मत करो, मैं मरूंगा नहीं; और जब मैं मरणहारों की इस धरती को छोड़ता हूं, मुझे विश्वास है इस बात का, कि जीवतों के देश में प्रभु की आशीषों को देखूंगा।" विलियम बारक्ले ने लिखा, "यीशु मसीह के द्वारा हम जानते हैं कि हम सूर्यास्त की ओर नहीं, परन्तु सूर्योदय की ओर यात्रा कर रहे हैं। सर्वाधिक सच्चे अर्थ में हम अपनी मृत्यु के मार्ग पर नहीं, परन्तु अपने जीवन के मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं।"

यीशु, विश्वासियों के लिए उनकी अनंत जीवन की लालसा पूर्ण करने की प्रतिज्ञा करता है। उसने निश्चयता से कहा है कि मृत्यु अंत नहीं है, और परमेश्वर ने उसे मृत्यु में से जिलाया, ताकि उसके शब्दों को सत्य प्रमाणित करे। आइए हम यीशु के मृत्यु की सामर्थ्य को नाश करने और विश्वासियों को अंतिम तृप्ति - अनंत जीवन - देने के दावे को देखें।

1. **क.** हमारी मृत्यु और मरने के भय से उत्पन्न होनेवाली कुछ भावनाएं कौनसी हैं?

   ख. मानवीय हृदय की, मृत्यु से संबंधित स्वाभाविक लालसाएं क्या हैं?

   संदर्भः टिप्पणी 5, *जीने की मानवीय लालसा से संबंधित,* पृष्ठ 121

2. निम्नलिखित वचनों के अनुसार, शारीरिक मृत्यु की वास्तविकता का कारण क्या है?
   रोमियों 3:23; 6:23

   ऐच्छिकः *संबंधित शास्त्रभाग* – उत्पत्ति 2:16-17; 3:6; लैव्यव्यवस्था 17:11, 14; इब्रानियों 9:22

3. मृत्यु के इस दण्ड पर विजय पाने के लिए परमेश्वर ने कैसे पहल की?
   रोमियों 5:8

4. **क.** निम्नलिखित वचनों के अनुसार हम मृत्यु से जीवन में कैसे परिवर्तित किए जाते हैं?
   यूहन्ना 1:12-13; 3:3

   ख. निम्नलिखित वचनों के अनुसार, मृत्यु के बाद जीवन देने का अधिकार किसे है?
   यूहन्ना 5:21; 6:40

5. परमेश्वर ने, यीशु के अनंत जीवन से संबंधित शब्दों को प्रमाणित करने के लिए यीशु को उसकी पृथ्वी पर की सेवकाई के समय लाजर तथा और बहुतेरों को मृत्यु से जिलाने की सामर्थ्य देने के अलावा और क्या किया?
   1 कुरिन्थियों 15:3-8क

महत्त्वपूर्ण संदर्भः "*डीड क्राइस्ट राईज फ्राम द डेड*" नोटबुक की जेब में रखी *नो व्हाय यू बिलिव* पुस्तिका, पृष्ठ 41

6. परमेश्वर अपने पुत्र के द्वारा जिस अनंत जीवन की प्रतिज्ञा करता है, उसके विषय में निम्नलिखित वचन क्या प्रगट करते हैं?
1 कुरिन्थियों 15:42-44, 54

प्रकाशितवाक्य 21:4

प्रकाशितवाक्य 22:5

7. निम्नलिखित वचन, विश्वासियों के लिए शारीरिक मृत्यु के तात्कालिक अनुभव का वर्णन कैसे करते हैं?
भजन संहिता 17:15

2 कुरिन्थियों 5:6, 8

फिलिप्पियों 1:23

संदर्भः टिप्पणी 6, *विश्वासियों के लिए मृत्यु,* पृष्ठ 122

8. यीशु मसीह के अनुयायी होने के कारण हमें मृत्यु से डरने की आवश्यकता नहीं है। तथापि, यह बात हमें मृत्यु से जुड़े नुकसानों में होनेवाले दुःख के अनुभव से बचा नहीं लेती। यूहन्ना के इस अद्भुत अध्याय में, यीशु ने, शोक-यात्रा के समय, परमेश्वर की सहानुभूति को -- उसके हमारे साथ और हमारे लिए दुःखी होने को -- प्रदर्शित किया (11:33-35)। यीशु हमारे दुःख में कैसे साथ देता है इसके विषय में आपने यूहन्ना 11 में क्या देखा (लूका 7:12-13 भी देखिए)।

9. प्रभु की दृष्टि में एक विश्वासी की मृत्यु कैसी है?
भजन संहिता 116:15

सारांश

10. **क.** यीशु जो जीवन देता है उसके विषय में इस पाठ से आप क्या स्पष्ट समझते हैं?

ख. यह समझ आपकी तृप्ति की तलाश में क्या भूमिका निभाती है?

11. पवित्रशास्त्र बताता है कि अनंत जीवन पाने में हमारा काम यीशु में विश्वास करना है, अर्थात् मान लेना कि सबकुछ जो यीशु ने कहा है वह पूर्णत: सत्य है, और इस विश्वास पर, पूर्ण भरोसे के साथ, अपना जीवन दांव पर लगाना आरंभ करना। क्या आपने इस उद्देश्य से अपना समर्पण कर दिया है?

पाठ १४ टिप्पणियाँ

1 . . . . *जीवन मैं हूं* (11:25)। *जीवन* यह शब्द यूहन्ना में 36 बार मिलता है। जो जीवन यीशु देता है उसके लिए सर्वप्रथम परमेश्वर के पुत्र में विश्वास करने के द्वारा परमेश्वर के परिवार में जन्म लेना (1:4, 12-13), और परमेश्वर की संतान होकर उसके जीवन को जो अनंत है, अपने में प्राप्त करना आवश्यक है (14:16-17, 20, 23)। जब यीशु ने दावा किया, कि जो उसमें विश्वास करेगा वह कभी न मरेगा (11:26), तब वह निश्चय ही यह नहीं कह रहा था कि विश्वासी शारीरिक रूप से कभी न मरेगा। बल्कि, यीशु अभी आत्मिक मृत्यु पर विजय पाने की और शारीरिक मृत्यु के बाद विश्वासी को एक नयी देह और अनंत जीवन देने की अपनी सामर्थ्य घोषित कर रहा था (तुलना कीजिए: 1 कुरिन्थियों 15:50-57, और वचन 35-44 भी)। यीशु का अपना पुनरुत्थान इन सारे दावों का प्रमाण ठहरने वाला था। यीशु के द्वारा ऊपरी कक्ष में कहे गए शब्द थे: "इसलिए कि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे" (14:19)।

2. *सन्हेद्रिन* । सन्हेद्रिन यहूदियों का सर्वोच्च न्यायालय था। इसमें याजक, शास्त्री

और पुरनिए होते थे। इसमें 71 सदस्य होते थे, जिनका सभापति महायाजक होता था। सन्हेद्रिन में फरीसी और सदूकी दोनों होते थे। *फरीसी* एक अ-राजनीतिक गुट थे जिनकी एकमात्र रुचि यहूदी व्यवस्था के अनुसार जीने में थी, और जब तक यह संभव होता था, उन्हें इस बात की चिंता नहीं होती थी कि उन पर शासन कौन करता था। *सदूकी* एक यहूदी गुट था, जो इस्राएल के धनी कुलीन वर्ग का प्रतिनिधित्व करता था। धर्मशास्त्रीय विचारों में रूढ़िवादी न होकर, वे फरीसियों के द्वारा पालन किए जानेवाले यहूदी व्यवस्था के प्रति सख्त लगाव का साफ-साफ इंकार करते थे। व्यवहारिक रूप से देखें तो सन्हेद्रिन में पाए जानेवाले सारे याजक सदूकी थे, वे केवल अपनी प्रतिष्ठा और सम्पत्ति को कायम रखना चाहते थे। इस बात को निश्चित जानकर कि यीशु की प्रसिद्धि से आगे चलकर सार्वजनिक अव्यवस्था उत्पन्न होगी, और यह जानते हुए कि रोमी अधिकारी ऐसी परिस्थिति पर नियंत्रण करने में निर्दयता से काम लेंगे, सदूकियों ने उस नासरी का अंत करना चाहा। यह स्पष्ट था कि सन्हेद्रिन की उस सभा पर, जिसने यीशु को मार डालने का निर्णय लिया था, सदूकियों का वर्चस्व था (यूहन्ना 11:45-53)। रोम ने, अंततः यहूदी हठीलेपन से तंग आकर ईसवी सन् 70 में यरूशलेम को घेर लिया। शहर को खण्डहर बनाया दिया गया, और सदूकियों के पास न तो धन रहा न अधिकार।

3. *दिन के बारह घंटे* (11:9-10)। "बैतनिय्याह जाना उतना अधिक जोखिम का नहीं होगा यह स्पष्ट करने के लिए यीशु ने एक उदाहरण का उपयोग किया। एक अर्थ में वह भौतिक प्रकाश या अंधकार में चलने (जीने) की बात कर रहा था। आत्मिक क्षेत्र में, यदि कोई परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीवन बिताता है, तो वह सुरक्षित होता है। बुराई के क्षेत्र में जीना जोखिम भरा होता है। यीशु जब तक परमेश्वर की योजना के अनुसार चल रहा था, तब तक ठहराए गए समय से पहले उस पर कोई हानि आनेवाली नहीं थी।"

   यही लोगों पर भी लागू होता था, कि जब तक यीशु जगत में ज्योति के रूप मे था तब ही उन्हें उस पर विश्वास कर लेना अवश्य था (देखिए: 9:4 - "जिसने मुझे भेजा है हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है; वह रात आनेवाली है जिसमें कोई काम नहीं कर सकता।")। शीघ्र ही वह जानेवाला था, और यह विशेष सुअवसर भी समाप्त होनेवाला था।" *वाल्वर्ड एण्ड झक्, द बाइबल नॉलेज कमेन्टरी,* पृष्ठ 313

4. *काइफा जो महायाजक था . . . भविष्यवाणी की* (11:49-52)। "उसके शब्द उस अर्थ में सही थे जिसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकता था। पवित्रशास्त्र

में भविष्यवाणी परमेश्वर की ओर से प्रगट किए गए सत्य को बताना है। वास्तव में काइफा के शब्दों का अर्थ यही था कि यीशु की मृत्यु उस राष्ट्र के लिए होगी, जिसका लाभ, राजनितिक अशांति दूर करने के लिए नहीं (जैसे कि काइफ का अर्थ था), परन्तु उस पर जो विश्वास करेंगे उनके पापों को दूर करने के लिए होगा।" *एनआइव्ही स्टडी बाइबल,* पृष्ठ 1620

5. सी. एस. लुईस ने, अनंतकाल तक *जीने की मानवीय लालसा* के संबंध में लिखा था: "जीव-जन्तु उन इच्छाओं के साथ नहीं जन्मे हैं, यदि उन इच्छाओं की सन्तुष्टि विद्यमान नहीं है। एक बच्चे को भूख लगती है: ठीक है, भोजन नाम की वस्तु है। बत्तख का बच्चा तैरना चाहता है: ठीक है, पानी नाम का पदार्थ है। यदि मैं अपने में कोई ऐसी लालसा पाता हूं जिसे इस जगत का कोई भी अनुभव तृप्त नहीं कर सकता है, तो इसका सर्वाधिक संभव स्पष्टीकरण यही है, कि मेरी रचना दूसरे जगत के लिए हुई है। अवश्य है कि मैं अपने में वह लालसा अपने उस वास्तविक देश के लिए जीवित रखूं जिसे मैं मरने के बाद ही देख पाऊंगा। अवश्य है कि मैं उसे किसी से ढक न जाने दूं, और न दूर होने दूं। अवश्य है कि मैं उसे अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य बना लूं, ताकि उस दूसरे देश की ओर बढ़ता जाऊं, और ऐसा ही करने में औरों की भी सहायता करूं।" *मीअर क्रिश्चीयानिटि,* पृष्ठ 120

6. *विश्वासियों के लिए मृत्यु* तत्काल यीशु मसीह की उपस्थिति में चले जाना है (तुलना कीजिए: लूका 23:42-43; 2 कुरिन्थियों 5:6, 8; फिलिप्पियों 1:23)। यीशु मसीह के दूसरे आगमन के समय (मत्ती 24:27-31; यूहन्ना 14:2-3; प्रेरितों के काम 1:10-11), वे सब जिन्होंने उसमें विश्वास किया है, यीशु के पुनरुत्थित देह के समान ही पुनरुत्थित देह पाएंगे (1 कुरिन्थियो 15:42-44; 1 थिस्स. 4:14-17)। इन सच्चाइयों के कारण एक विश्वासी के लिए मृत्यु अंत या भयानक बात नहीं है, और उसे पवित्रशास्त्र में "मसीह में सो" जाना कहा गया है (1 कुरिन्थियों 15:18; 1 थिस्स. 4:13)। बाइबल में यह तो स्पष्ट नहीं दिया गया है कि जो विश्वासी मसीह के दूसरे आगमन के पहले मरेंगे वे अपने "मसीह में सो गए" की अवस्था में क्या अनुभव करेंगे, सिवाय इसके कि उन्हें प्रभु यीशु के पास भरपूर निकटता प्राप्त होगी।

--0--

पाठ १५ सार्वजनिक सेवकाई का समापन

यूहन्ना 12

यरूशलेम में फसह के पर्व के छः दिन पहले, यीशु और उसके शिष्य बैतनिय्याह को लौटे। वहां शमौन कोढ़ी के घर में यीशु के सम्मान में भोज रखा गया था (मत्ती 26:6)। मार्था इस भोज में परोस रही थी, और उसका भाई लाजर, जिसे यीशु ने मृत्यु में से जिलाया था, यीशु के साथ मेज पर बैठा था।

भोजन के दौरान, लाजर की बहन मरियम, भारत देश से आयात किया गया बहूमुल्य इत्र यीशु के चरणों पर डालने आई। उस इत्र की कीमत सम्पूर्ण एक वर्ष की आय के बराबर थी। सुगंध से सारा घर भर गया। परन्तु यहूदा, जो यीशु की सेवकाई के लिए दिए गए पैसों का हिसाब रखता था, और प्रायः उसमें से कुछ निकाल लेता था, कुड़कुड़ाने लगा कि वह इत्र बेचकर उसका पैसा गरीबों में बाट दिया जाना चाहिए था। यीशु ने, यह जानते हुए कि उसकी मृत्यु निकट थी, मरियम के भक्ति के कार्य का पक्ष लेते हुए कहा कि वह उसे उसके गाड़े जाने के लिए तैयार कर रही थी।

इस दौरान, बहुतेरे लोग शमौन के घर पर एकत्रित हो गए थे, जब उन्होंने सुना कि यीशु और लाजर वहां थे। यीशु एक ऐसा विवादास्पद व्यक्ति बन गया था कि वह यरूशलेम के आस-पास के लोगों से बचकर नहीं रह सकता था। यह समाचार अब तक सर्वसामान्य लोगों तक फैल चुका था कि उसने लाजर को मृतकों में से जिलाया था, और बहुतेरे यहूदी उस आश्चर्यकर्म के कारण उस पर विश्वास कर रहे थे। इसके परिणाम-स्वरूप, महायाजकों ने, जिन्होंने यीशु को मार डालने का निर्णय ले लिया था, लाजर को भी मार डालने का निश्चय किया।

शनिवार का दिन (सब्त) बैतनिय्याह में बीताने के बाद, रविवार को यीशु ने यरूशलेम में अपना अंतिम प्रवेश किया। वह गधे के बच्चे पर सवार हुआ, जो कि शान्ति का प्रतीक था, और जिसके द्वारा जकर्याह 9:9 की मसीह-संबंधित प्राचीन भविष्यवाणी भी पूरी हुई। बेतहाशा उत्साहित लोगों की भीड़-की-भीड़ यीशु के पास एकत्रित हो गई। भीड़ बढ़ती ही गई, क्योंकि जिन लोगों ने लाजर को जिलाने के आश्चर्यकर्म को देखा था वे मार्ग में जाते हुए औरों को भी बता रहे थे। हजारों गलीली भी, जिन्होंने यीशु के अनेक आश्चर्यकर्म देखे थे, फसह के पर्व में आए थे, और भीड़ में मिल गए थे। इसके पहले, उन्होंने यीशु को अपना सांसारिक राजा बनाना चाहा था,

परन्तु यीशु ने उसे अस्वीकार कर दिया था। कदाचित् वे सोच रहे थे कि अब जब कि यीशु 'महान राजा की नगरी' में प्रवेश कर रहा था, तो मान जाएगा।

उत्साहित भीड़ ने यीशु के सामने मार्ग पर खजूर की डालियों को बिछाया, और नारे लगाए, "होशन्ना!" (स्तुति का शब्द जिसका अर्थ "कृपया उद्धार कर!" होता था। देखिए: भजन संहिता 118:25)। उन्होंने यीशु के लिए नारे लगाते हुए उसे "जो प्रभु के नाम से आता है," और "इस्राएल का राजा" कहा। उसने नगर में, अपने चारों ओर नारे लगाती हुई भीड़ के साथ, प्रवेश किया।

इसके पहले भी यीशु की प्रसिद्धि बढ़ती ही जा रही थी। यहूदी अगुवे, दंगे से बचने के लिए, इस प्रतीक्षा में थे कि चोरी-छिपे उसे पकड़ने का उपाय मिले ताकि उसे पकड़ें और मार डालें। भीड़ में से अधिकांश लोग यीशु पर सच में विश्वास नहीं करते थे, तौभी धार्मिक अगुवे आपस में कुड़कुड़ा रहे थे, "संसार उसके पीछे हो चला है।"

नगर में पहुंचने के बाद, परमेश्वर का भय माननेवाले कुछ यूनानियों ने, जो पर्व में आराधना करने के लिए आए थे, यीशु से बात करने की विनती की। उसने इन यूनानियों की विनती को एक चिन्ह समझा, कि उसकी मृत्यु का समय निकट आ गया था। वह समय था कि यहूदियों के साथ-साथ प्रतीक्षा करनेवाले यूनानियों को भी परमेश्वर के उद्धार का संदेश प्राप्त हो।

यीशु ने स्पष्ट करना आरंभ किया कि उसकी आनेवाली मृत्यु वास्तव में उसकी महिमा होने का मार्ग था। उसने गेहूं के दाने का उदाहरण प्रस्तुत किया कि बहुत फल लाने के पहले वह भूमि में गिरकर "मर जाता है"। परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए उसका दूसरों के पापों के लिए अपना प्राण देना (यशा. 53:10, 12) सबके लिए आत्मिक जीवन पाने का सुअवसर प्रदान करनेवाला था। यीशु ने स्पष्ट किया कि "जो अपने प्राण को प्रिय जानता है वह उसे खो देता है; जो इस जगत मे अपने प्राण को अप्रिय जानता है, वह अनन्त जीवन के लिए उसकी रक्षा करेगा" (12:25)। दूसरे शब्दों में, जो मात्र स्वयं के लिए जीता है, वह कभी भी अनंत तृप्ति को नहीं जानेगा। दूसरी ओर, यीशु ने प्रतिज्ञा की कि "यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा" (12:26)।

जब यीशु की व्यथा बढ़ती जा रही थी, उसने दोहराया कि वह इस बलिदान के समय के लिए ही आया था, और उसे टालेगा नहीं। उसने पुकारा, "हे पिता, अपने नाम की महिमा कर।" इसका उत्तर परमेश्वर ने स्वर्ग से ऐसी आवाज में दिया जो सुनी जा सकती थी, "मैंने उसकी महिमा की है, और फिर भी करूंगा" (12:28)।

यीशु ने स्पष्ट किया कि वह समय आ गया था, कि इस संसार का सरदार निकाल

दिया जाए। अवश्य था कि यीशु क्रूस पर चढ़ाया जाए, ताकि लोगों को परमेश्वर की ओर खींचे। अंतिम एक बार, उसने अपने पास की भीड़ को प्रोत्साहित किया कि अवसर के रहते वे ज्योति पर विश्वास कर लें। तब वह लोगों से हट गया कि आनेवाले दिनों के लिए स्वयं को तैयार करे।

यीशु के असंख्य आश्चर्यकर्मों के बाद भी अधिकांश लोगों ने उसमें विश्वास नहीं किया। यूहन्ना ने लिखा कि हृदय की इस कठोरता के विषय में यशायाह भविष्यद्वक्ता ने सैंकडों वर्ष पहले भविष्यवाणी की थी। तौभी, बहुतों ने विश्वास किया, यहूदी अगुवों ने भी, जो अपने विश्वास के विषय में चुप थे, क्योंकि उन्हें अपने साथियों के द्वारा बाहर निकाल दिए जाने का भय था।

वह मंगलवार का दिन था, उस सप्ताह का जिसे अब दु:ख-भोग का सप्ताह कहा जाता है, जब यीशु अपनी सार्वजनिक सेवकाई के अंत में पहुँच गया था। अगले दो दिन वह एकांत में, अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के पहले, अपने शिष्यों को शिक्षा देने में बितानेवाला था। उसने बहुत बार अपने संदेश को दोहराया था: "जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मुझ पर नहीं, वरन मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है। और जो मुझे देखता है, वह मेरे भेजनेवाले को देखता है। मैं जगत में ज्योति होकर आया हूं ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अन्धकार में न रहे। क्योंकि मैंने अपनी ओर से बातें नहीं की, परन्तु पिता, जिसने मुझे भेजा है, उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि क्या क्या कहूं? और क्या क्या बोलूं? और मैं जानता हूं कि उसकी आज्ञा अनन्त जीवन है" (12:44-46, 49-50क)।

पढ़िए यूहन्ना 12:1-11

1. **क.** यीशु के बैतनिय्याह में भोजन के समय, मरियम ने भक्ति का कौनसा अनोखा काम किया (12:3)?

   ख. यीशु ने, यहूदा द्वारा आपत्ति प्रगट किए जाने पर क्या उत्तर दिया (12:7-8)?

2. **क.** यीशु जब बैतनिय्याह में था तब क्या हुआ (12:9)?

   ख. महायाजकों ने क्या करने का निर्णय लिया, और क्यों (12:10-11)?

पढ़िए यूहन्ना 12:12-19

3. **क.** यीशु ने जब गधे के बच्चे पर सवार होकर यरूशलेम में प्रवेश किया तब उसका स्वागत कैसे हुआ (12:12-13)?

   ख. प्राचीन समय में, एक राजा का गधे के बच्चे पर सवार होकर किसी नगर में प्रवेश करना नम्रता और शांति का कार्य समझा जाता था। बाद में शिष्य भी इसके तथा लोगों की प्रतिक्रिया के विषय में क्या समझे (12:16)?

   टिप्पणी: वचन 13, भजन संहिता 118:25-26 से लिया गया उद्धरण है। वचन 15, पुराना नियम की जकर्याह 9:9 से ली गई मसीह-संबंधित भविष्यवाणी है।

4. इसलिए कि लोग यीशु के द्वारा लाजर को जिलाए जाने का समाचार फैलाते रहे, यीशु के आसपास की भीड़ बहुत बढ़ती ही गई (12:17-18)। यीशु का विरोध करनेवाले धार्मिक अगुवों ने कैसे प्रत्युत्तर दिया (12:19)?

पढ़िए यूहन्ना 12:20-36क

5. **क.** जब परमेश्वर का भय माननेवाले अन्यजातीय यूनानी यीशु से मिलने आए, उसने जान लिया कि उसके बलिदान का समय निकट था। यहूदियों के साथ-साथ ही प्रतीक्षा कर रहा अन्यजातीय संसार, शीघ्र ही मसीह के द्वारा प्राप्त होनेवाले उद्धार के विषय में जाननेवाला था। जब यीशु ने अपनी मृत्यु के समय को निकट आते देखा, उसने किस सिद्धान्त का स्पष्टीकरण किया (12:23-24)?

   ख. यीशु ने अपने स्वयं के जीवन के निकटवर्ती बलिदान के संदर्भ में कौनसा आत्मिक सिद्धान्त प्रस्तुत किया (12:25-26)?

   टिप्पणी: वचन 12:25 में *जो अपने प्राण को प्रिय जानता है* का संकेत उस व्यक्ति की ओर है जो स्वयं पर ही ध्यान केंद्रित करता है - अपनी सफलताओं, अपनी इच्छाओं, और अपने लक्ष्यों पर - इस पर नहीं कि

अपना जीवन मसीह के लिए और दूसरों की आवश्यकताओं के लिए समर्पित करें। वह *जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है,* वह व्यक्ति है जिसकी भक्ति परमेश्वर के प्रति ऐसी होती है कि उसे तुलना करने पर शेष सारे प्रेम बैर लगते हैं। उसके परमेश्वर के प्रति समर्पण ने उसे विवश किया है कि आत्मकेंद्रित होने और स्वयं की चिंता में रहने के स्वभाव को पीछे छोड़ दे ताकि वे उसके जीवन का केन्द्र न बनें।

6. **क.** यीशु, शिष्यों के साथ अपनी मृत्यु की चर्चा करते समय, कौनसा चुनाव कर रहा था (12:27-28; मत्ती 26:38-39, 42, 53 भी देखिए)?

ख. परमेश्वर पिता ने यीशु की प्रार्थना, "हे पिता अपने नाम की महिमा कर," का उत्तर देते हुए, वहां उपस्थित लोगों के लाभ के लिए, क्या हामी भरी (12:28)?

ग. यीशु ने क्या कहा कि उसकी क्रूस पर की मृत्यु के द्वारा कौनसी तीन बातें होनेवाली थीं (12:31-33)?

टिप्पणी: *इस जगत का न्याय* (12:31)। "यीशु की क्रूस पर की मृत्यु जगत पर एक न्याय था। बुराई के लिए प्रायश्चित्त किया गया था। जगत के लक्ष्य, आदर्श, और धर्म मूर्खता दर्शाए गए थे। "*इस जगत का सरदार*" (12:31)। "क्रूस शैतान के पराजय का भी साधन था (प्रकाशितवाक्य 12:10)। यीशु ने कहा था कि इस जगत का सरदार निकाल दिया जाएगा (अर्थात् शैतान; तुलना कीजिए - यूहन्ना 14:30; 16:11)। उसका लोगों पर का अधिकार, जो पाप और मृत्यु के द्वारा था, पराजित कर दिया गया था, और अब वे उसके आत्मिक अंधकार और पापों की गुलामी के साम्राज्य से छुड़ाए जा सकते थे (कुलु. 1:13-14; इब्रानियों 2:14-15)।" *वाल्वर्ड एण्ड झक्,* पृष्ठ 318.

संदर्भ: टिप्पणी 5, *शैतान*, पृष्ठ 68, तथा
टिप्पणी 6, *ऊंचे पर चढ़ाया गया सांप*, पृष्ठ 38

7. भीड़ यह तो समझ गई थी कि यीशु का कहना था कि उसे मरना अवश्य है, परन्तु यह नहीं समझ पाई थी कि इसके द्वारा मसीह-संबंधित भविष्यवाणी कैसे पूरी हुई थी। यीशु के द्वारा लोगों को दिए अंतिम प्रत्युत्तर को आप अपने शब्दों में कैसे बताएंगे (12:35-36)?

संदर्भः टिप्पणी 1, *मसीह*, पृष्ठ 21 तथा टिप्पणी 5, *मसीह-संबंधित पवित्रशास्त्र की भविष्यवाणी*, पृष्ठ 54

पढ़िए यूहन्ना 12:37-43

8. **क.** लेखक को किस बात का आश्चर्य हो रहा था (12:37)?

संदर्भः टिप्पणी 1, *यीशु के आश्चर्यकर्म*, पृष्ठ 76

ख. यूहन्ना ने यशायाह 53:1 और 6:10 की प्राचीन भविष्यवाणियों का उद्धरण दिया, जो लोगों के द्वारा यीशु मसीह को दिए प्रत्युत्तर में पूर्ण हुई थीं। उनके, परमेश्वर के पुत्र के प्रकटीकरण पर विश्वास करने से इनकार पर परमेश्वर का न्याय क्या था (12:38-42)?

टिप्पणीः *विश्वास न कर सके* (12:39) इस वाक्यांश का "अर्थ यह नहीं है कि जिनके विषय में चर्चा हो रही है उन लोगों के पास विकल्प नहीं था। उन्होंने जानबूझकर परमेश्वर का इनकार किया, और बुराई को चुन लिया, और वचन 40 स्पष्ट करता है कि इसके बदले में परमेश्वर ने अपने न्याय के रूप में उन्हें आँखों का अन्धापन और हृदय की कठोरता दी। फिर भी अनेक यहूदी अगुवों ने यीशु को मसीह जानकर उस पर विश्वास किया (वचन 42)।" द *एनआइव्ही स्टडी बाइबल*, पृष्ठ 1622.

9. धार्मिक अगुवों के बीच क्या हुआ (12:42-43)?

पढ़िए यूहन्ना 12:44-50

10. यीशु ने अपने कार्य की सच्चाई का सारांश देने में जो मुख्य बातें प्रस्तुत कीं उनकी सूची बनाइए (12:44-50)?

बुनियाद पर बनाना
सही केन्द्र

कुछ ही दिन बचे थे कि यीशु अपने उस उद्देश्य को पूरा करे जिसके लिए वह आया था: जगत के पापों के लिए अपना प्राण देने, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह पापों की क्षमा और अनंत जीवन पाए। उसके विरोध में फैले कड़वे द्वेष के समक्ष, और उसके मन में खलबली जब बढ़ती ही गई, उसने धीमे से स्वयं को स्मरण दिलाया, और औरों को बताया, कि यही वह उद्देश्य था जिसके लिए वह आया था: जगत को दोषी ठहराने के लिए नहीं, परन्तु उसका उद्धार करने के लिए (12:47)।

इस संदर्भ में, उसने प्रकृति से तृप्ति का एक बहुत-ही महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त स्पष्ट किया। "जब तक गेहूं का दाना भूमि में गाड़ा नहीं जाता, जगत के लिए मर नहीं जाता, वह कभी भी गेहूं के एक दाने से अधिक कुछ नहीं होता। परन्तु जब वह गाड़ा जाता है, वह अंकुरित होता है, और अपने से बहुत गुणा फल लाता है। इसी प्रकार, जो अपने प्राण को वह जैसा है वैसे ही पकड़े रहता है, वह उस प्राण का नाश कर देता है। परन्तु यदि तुम उसे छोड़ देते हो, अपने प्रति प्रेम में लापरवाह होते हो, तुम उसे सर्वदा के लिए वास्तविक और अनंत पाओगे।" (12:24-25, द *मेसेज ट्रान्सलेशन*)।

यीशु ने सच्ची तृप्ति के दो घटकों पर जोर दिया। एक, प्रभु के प्रति सम्पूर्ण मन से भक्ति, मरियम के समान, जिसने यीशु के पैरों पर उंडेलने के लिए वह खर्च कर दिया जो संभवत: जीवनभर की बचत रही होगी। दूसरा, सम्पूर्ण मन से परित्याग, परमेश्वर के पुत्र के समान दूसरों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए परमेश्वर के पीछे चलना।

हम अपने *तृप्ति की तलाश* का अध्ययन आगे बढ़ाते हुए इन बातों में से प्रत्येक को संक्षिप्त में देखेंगे।

1. मानव स्वभाव का वह स्वाभाविक केन्द्र क्या होता है जो यीशु के शत्रुओं में स्पष्ट रूप से था?

2. जब कोई अपने जीवन को पूर्णत: अपने ही हित, लक्ष्य और इच्छाओं में केन्द्रित करता/करती है, तो उसका परिणाम क्या होता है?

3. **क.** जिन धार्मिक अगुवों ने यीशु पर विश्वास किया था उन्हें दूसरों के सत्य की खोज में सहायता करने से किस बात ने रोका था (12:42-43)?

ख. वे, जो लोगों के विचारों की चिंता किए बिना मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार करते हैं, उनसे परमेश्वर क्या प्रतिज्ञा करता है
2 तीमुथियुस 1:7

4. **क.** यीशु का ध्यान उस समय किस बात पर केन्द्रित था जब वह अपने प्राण देने की तैयारी कर रहा था?

ख. निम्नलिखित वचनों में यीशु के जीवन के कौनसे उद्देश्य पाए जाते हैं?
यूहन्ना 6:38-40

1 तीमुथियुस 2:3-4

5. **क.** यीशु ने लोगों को बचाने के अपने मन को लूका 15:3-6 में कैसे चित्रित किया?

ख. इस प्रकार ध्यान केन्द्रित करने से कौनसे प्रतिफल मिलेंगे?
यशायाह 53:11

इब्रानियों 12:2

6. जो अपने आप को परमेश्वर के प्रति सम्पूर्ण हृदय से समर्पित कर देते हैं उनसे पवित्रशास्त्र क्या प्रतिज्ञा करता है?
भजन संहिता 1:3

भजन संहिता 16:11

मत्ती 6:33 (31-32)

7. जो दूसरों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में परमेश्वर की सहायता करने के लिए स्वयं को, और जो कुछ उनके पास है उसे, समर्पित कर देते हैं उनसे पवित्रशास्त्र क्या प्रतिज्ञा करता है?
नीतिवचन 11:25

यशायाह 58:10-11

मलाकी 3:10

लूका 6:38

2 कुरिन्थियों 9:6

सारांश

8. यूहन्ना 12 के प्रमुख पात्रों --यीशु, मरियम, शिष्य, भीड़, धार्मिक अगुवे --में से किसने अंततः सर्वाधिक तृप्ति का अनुभव किया, और क्यों?

9. **क.** आपकी अपनी तृप्ति की तलाश में, परमेश्वर के प्रति सम्पूर्ण मन से समर्पण क्या भूमिका निभाता है?

ख. आपकी अपनी तृप्ति की तलाश में, दूसरों की आवश्यकताओं की सुधि लेना क्या अंतर लाता है?

ग. आपके लिए यीशु का जीवन किस प्रकार सही केन्द्र का उदाहरण था?

--0--

भाग २- असार्वजनिक सेवकाई, शिष्यों के लिए

पाठ १६

अंतिम भोज का आरंभ

यूहन्ना 13

यह जानकर कि उसकी मृत्यु का समय निकट था, यीशु अपने शिष्यों के साथ रहने के लिए जनसाधारण से अलग हो गया। दु:ख-भोग सप्ताह के गुरुवार की संध्या, यीशु और उसके शिष्य फसह का भोज[1] मनाने के लिए यरूशलेम के एक घर के ऊपरी कक्ष में, एकत्रित हुए। यह घटना, जो बाद में अंतिम भोज के नाम से जानी गई, संध्या के धुंधले प्रकाश में आरंभ हुई। वह यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने की पूर्व-संध्या थी। क्रूसीकरण दूसरे दिन सुबह 9 बजे हुआ था। अगले 24 घंटो के भीतर, यीशु कब्र में जानेवाला था। यूहन्ना के 13-17 अध्यायों में, प्रेरित यूहन्ना ने सर्वाधिक पूर्ण वास्तविक आंखों-देखा वृत्तान्त लिखा कि यीशु ने अपने अंतिम घंटों में क्या कहा और क्या किया। यीशु ने इन अंतिम घंटों का उपयोग अपने शिष्यों को, और उन्हें भी जो उस पर विश्वास करनेवाले थे, अपना सम्पूर्ण प्रेम और लगाव दिखाने के लिए किया।

यीशु जानता था कि शैतान[2] ने यहूदा इस्करियोती को उसे पकड़वा देने के लिए प्रभावित कर दिया था। वह यह भी जानता था कि परमेश्वर नियंत्रण रखे हुए था, और यह कि क्रूस उसकी उस महिमा तक लौटने का ठहराया गया मार्ग था जिसे उसने पिता के साथ सर्वदा से जाना था।

इस दृष्टिकोण के साथ, यीशु ने अपनी कमर में अंगोछा लपेटा, बरतन में पानी लिया, और शिष्यों के पैर धोना आरंभ कर दिया। यह निश्चय ही उन शिष्यों के लिए असुविधाजनक बात थी जो यीशु को अपने गुरु और प्रभु के रूप में देखते थे। सामान्यत: पैर धोने जैसा काम मात्र एक गुलाम के द्वारा ही किया गया होता।

फिर भी, एक पतरस को छोड़कर, वे सब शान्त थे। जब यीशु उसके पास आया, उस शिष्य ने इस बात को अस्वीकार किया कि उसका स्वामी उसके पैरों को धोए। परन्तु यीशु ने उत्तर दिया, "यदि मैं तुझे न धोऊं, तो मेरे साथ तेरा कुछ भी साझा नहीं।" तब पतरस ने आग्रह किया कि यीशु उसके मात्र "पांव ही नहीं, वरन् हाथ

और सिर भी धो दे!" यीशु ने एक प्रतीक का उपयोग करते हुए, जिसे वह जानता था कि पतरस अभी पूरी रीति से नहीं समझ पाएगा, उन्हें समझाया कि किसी को भी स्नान[3] के बाद स्वच्छ रहने के लिए मात्र पैर धोने की आवश्यकता होती है।

यीशु ने, वह पैर धोने का काम पूरा करने के बाद, उन्हें वह पाठ सिखाया जो उसके द्वारा अभी-अभी किए गए काम से मेल खाता था। अन्य सुसमाचारों में लिखा है कि इस भोज के समय शिष्यों में वाद-विवाद छिड़ गया था कि उनमें सब से बड़ा कौन था (तुलना कीजिए: लूका 22:24-27)। यीशु ने उन्हें बताया कि सब से बड़ा, सब का सेवक होगा। उसने कहा कि यदि उसने, उनके प्रभु और गुरु ने, उनकी सेवा की तो उसके शिष्य होने के नाते उनके ध्यान का केन्द्र भी औरों की सेवा करना होना चाहिए। यीशु ने कहा, "मैं ने तुम्हें नमूना दिखा दिया है, कि जैसा मैं ने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो। दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं; तुम तो ये बातें जानते हो, और यदि उन पर चलो, तो धन्य हो" (13:15-17)।

तब, जैसे ही यीशु ने सोचा कि इसके तुरन्त बाद यहूदा उसे धोखे से पकड़वाएगा, वह स्पष्ट रूप से और अत्यंत व्याकुल हो गया। उसने शिष्यों को बताया कि वह दु:खी था, क्योंकि उनमें से एक, जो उसके प्रति अपनी भक्ति का दिखावा करता था, क्रूरता के साथ उसके विरुद्ध हो जानेवाला था। जिज्ञासु होकर पतरस ने यूहन्ना की ओर मुड़कर, जो मेज पर यीशु की ओर झुका हुआ बैठा था, उससे कहा कि वह यीशु से पूछे कि उसे कौन पकड़वाएगा। यीशु ने चुपके से यूहन्ना को बताया कि बगल में बैठे जिस व्यक्ति को उसने रोटी दी वही वह होगा। वह व्यक्ति यहूदा था। जैसे ही यहूदा ने रोटी ली, शैतान ने यहूदा पर पूरा नियंत्रण कर लिया।[4] तब यीशु ने यहूदा को आज्ञा दी, "जो तू करता है, तुरन्त कर।" ऐसा कहते हुए, यीशु ने जानकर वह निर्देश दिया जो उसकी मृत्यु की ओर ले जानेवाला था।[5] शिष्यों ने, यूहन्ना ने भी, यहूदा के रात में बाहर निकलने पर कोई ध्यान नहीं दिया, क्योंकि उन्होंने सोचा कि यीशु ने उसे कुछ अच्छा काम करने का निर्देश दिया था।

अब यीशु ने, जो अपनी मृत्यु के पूर्व अंतिम घंटों में अपने प्रिय विश्वासयोग्य शिष्यों के साथ अकेला रह गया था, वह कहना आरंभ किया जिसे बाद में "ऊपरी कक्ष के प्रवचन" के नाम से जाना गया है (यूहन्ना 13:31-16:33)। इन शिक्षाओं में, यीशु ने उस पर प्रकाश डाला जो परमेश्वर के प्रकटीकरण का ताज होगा: मानवजाति के लिए उद्धार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से उसके पुत्र का बलिदान! यीशु के वे शब्द, जिन्हें शिष्य उसके पुनरुत्थान के बाद ही पूरी रीति से समझनेवाले थे, दो मुख्य विषयों पर केन्द्रित थे: (1) उसका जाना, और उसके बाद उनके साथ फिर एक होना, और (2) मसीह और उसके लोगों के बीच का प्रेमपूर्ण संबंध।

यीशु ने, अपने शिष्यों से कहा कि उसकी महिमा होने के लिए उसे वहां जाना अवश्य था जहां वे उसके पीछे नहीं जा सकते थे। इसके साथ ही, उसने उन्हें वह प्रमुख आज्ञा दी जिसका पालन उन्हें उसकी अनुपस्थिति में करना था। यीशु ने कहा, "एक दूसरे से प्रेम रखो; जैसा मैंने तुमसे प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगें, कि तुम मेरे चेले हो" (13:34-35)।

परन्तु पतरस जानना चाहता था कि यीशु कहां जा रहा था, और वह उसके पीछे क्यों नहीं जा सकता था। उसने यह घोषणा की, "मैं तो तेरे लिए अपना प्राण भी दूंगा।" यीशु ने उत्तर दिया, "क्या तू मेरे लिए अपना प्राण देगा? मैं तुझ से सच सच कहता हूं कि मुर्ग बांग न देगा, जब तक तू तीन बार मेरा इंकार न कर लेगा।"

पढ़िए यूहन्ना 13:1-17

1. इस क्षण, यीशु क्या जानता था (13:1क), और वह क्या करनेवाला था (13:1ख)?

   टिप्पणी: "प्रेम" शब्द यूहन्ना के 13 से 17 अध्यायों में 31 बार प्रयोग किया गया है, जहां यूहन्ना ने यीशु के द्वारा अपनी मृत्यु से पहले दी गई अंतिम शिक्षाओं और उसकी प्रार्थनाओं का वर्णन किया है।

2. यीशु को किस बात का निश्चय था, जबकि वह जानता था कि यहूदा ने उसे धोखे से पकड़वा देना ठान लिया था (13:2-3)?

3. पतरस ने किस बात पर आपत्ति प्रगट की (13:4-8क)?

4. यीशु ने पतरस को कैसे उत्तर दिया (13:8ख)

   संदर्भ: टिप्पणी 3, *स्नान,* पृष्ठ 141

5. **क.** यीशु ने शिष्यों के पैर धोकर किन भक्तिमय सिद्धान्तों की शिक्षा दी (13:12-17)?

ख. इस शिक्षा में लूका 22:24-27 क्या जोड़ता है?

पढ़िए यूहन्ना 13:18-30

6. यीशु ने शिष्यों को क्यों बताया कि उनमें से एक उसे पकड़वानेवाला था (13:18-19)?

   टिप्पणी: यीशु ने वचन 18 में, दाऊद के द्वारा भजन संहिता 41:9 में लिखे गए उस विलाप का उद्धरण दिया जो उसने अपने निकटतम् और प्रिय साथी से धोखा खाने के बाद लिखा था।

7. यीशु ने शिष्यों को ग्रहण करने के विषय में किन सिद्धान्तों की शिक्षा दी (13:20)?

8. **क.** वह क्या बात थी जिसके कारण शिष्य यीशु के किसी के द्वारा पकड़वाए जाने से संबंधित कहे गए शब्दों पर सोचने लगे, और उनकी सामान्य प्रतिक्रिया क्या थी (13:21-22)?

   ख. जबकि शिष्य एक दूसरे की ओर ताक रहे थे, बिना किसी कल्पना के कि वह पकड़वानेवाला कौन होगा, यीशु ने यूहन्ना को निश्चित रीति से क्या संकेत दिया?

   संदर्भ: संभवत: शिष्य सोच रहे थे कि जो कोई यीशु को पकड़वाएगा वह वैसा मात्र भूल से ही करेगा, कदाचित् संयोग से उसके ठिकाने का पता दे देगा (तुलना कीजिए: मरकुस 14:19)। वे इस बात को अभी पूरी रीति से समझनेवाले नहीं थे कि यीशु ने, परमेश्वर की उद्धार की योजना को जानते हुए, जानबूझकर यहूदा के काम को नहीं रोका था।

9. शिष्य, यूहन्ना भी, उस समय तक यहूदा के इरादों से असावधान थे। यीशु का निर्देश क्या था, और यहूदा ने क्या किया (13:27, 30)?

संदर्भः टिप्पणी 4, *शैतान ने यहूदा पर पूरा नियंत्रण कर लिया,* पृष्ठ 141 और टिप्पणी 5, *यीशु ने वह निर्देश दिया*, पृष्ठ 141, और टिप्पणी 5, *शैतान, दुष्टात्माएं,* पृष्ठ 68

पढ़िए यूहन्ना 13:31-38

10. क. अब जब यीशु अपने विश्वासयोग्य शिष्यों के साथ अकेला रह गया, उसने किन बातों पर जोर देना आरंभ किया (13:31-33)?

टिप्पणीः *महिमा करने* का अर्थ *यीशु कौन है यह प्रगट करना* है। यहां यीशु ने उस महिमामय उद्धार के विषय में भी बताया, जो उसके हमारे पापों के लिए क्रूस प्राण देने के द्वारा उपलब्ध कराया जानेवाला था।

संदर्भः टिप्पणी 4, *मनुष्य का पुत्र,* पृष्ठ 22

ख. यीशु ने शिष्यों को उसकी अनुपस्थिति में पालन करने के लिए कौनसे बुनियादी निर्देश दिए (13:34-35)?

11. क. पतरस ने किस बात पर जोर दिया (13:37)?

ख. उत्तर में यीशु ने क्या भविष्यवाणी की (13:38)?

बुनियाद पर बनाना

उदारतापूर्ण जीवन के विषय में और शिक्षा

जब यीशु नम्र होकर शिष्यों के पैर धोने के लिए घुटनों पर हुआ, उसके उस कार्य ने मानवजाति की आवश्यकता को पूरा करने के उद्देश्य से परमेश्वर के पुत्र के द्वारा लिए गए देहधारण की दीनता को चित्रित किया (तुलना कीजिएः फिलिप्पियों 2:4-8)। जबकि शिष्य इस बात से परेशान थे कि उनका प्रभु कैसे उनके पैर धोने के लिए झुक सकता है, वे संभवतः इस बात से और अधिक परेशान थे कि यीशु के इस नम्रतापूर्ण कार्यों में, उस सामर्थी सांसारिक राजा की कोई समानता दिखाई नहीं दे रही थी जिसकी वे आनेवाले मसीह में अपेक्षा कर रहे थे।

परन्तु अपनी पृथ्वी पर की सेवकाई के सम्पूर्ण काल में, यीशु ने दर्शाया था कि परमेश्वर के प्रतिनिधियों को और महान अगुवों को नम्र सेवक होना अवश्य है। मानवजाति पर परमेश्वर के हृदय को महिमान्वित करने या प्रगट करने के अपने उद्देश्य को पूरा करते हुए यीशु का समय पूर्णत: लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समर्पित था। अंतिम भोज के कुछ ही घंटों बाद, स्वयं को क्रूस पर अर्पित करने में यीशु स्वयं को नम्र करनेवाला था, और एक भयानक मृत्यु सहनेवाला था, ताकि मनुष्य की सब से बड़ी आवश्यकता की पूर्ति – पापक्षमा का सुअवसर और अपने सृष्टिकर्त्ता के साथ वास्तविक प्रेमपूर्ण संबंध – के लिए प्रबन्ध कर दे। तौभी, उसी समय जब बहुतेरे उसके इस प्रेमपूर्ण कार्य को अपने हृदय में संजोए रखेंगे, अधिकांश ऐसे होंगे जो इसे महत्त्व नहीं देंगे।

यहां, स्थायी तृप्ति को उत्पन्न करनेवाले "उदारतापूर्ण जीवन" के विषय में सीखने के लिए अनेक पाठ हैं। पिछले सप्ताह, हमारे **बुनियाद पर बनाना** के विषय "सही केन्द्र" में हमने देखा था कि गहरी तृप्ति परमेश्वर के प्रति और दूसरों की सेवा करने के प्रति समर्पित होने से मिलती है। इस सप्ताह, हम इस विषय में और अधिक खोज करेंगे। हम, मसीह की नम्र सेवकाई के संदर्भ में, सही प्रेरणाओं के विषय में कुछ अवलोकन करेंगे, और उन रुकावटों के विषय में भी जिनका सामना "उदारतापूर्ण जीवन" की तृप्ति के बीच हम सब करते हैं।

1. **क.** वे कौनसी अस्वस्थ प्रेरणाएं (उद्देश्य) हैं जिसके कारण लोग औरों की भलाई करते हैं?

   ख. इन प्रेरणाओं के साथ काम करने के परिणाम क्या होते हैं?

2. कुछ लोग विश्वास करते हैं कि उनके भले काम उन्हें परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराते हैं। हम परमेश्वर के सामने धर्मी कैसे ठहरते हैं इसके विषय में निम्नलिखित वचन क्या कहते हैं?
   रोमियों 3:22

   इफिसियों 2:8-9

3. यीशु ने सेवा के लिए किन प्रेरणाओं का आदर्श पृथ्वी पर प्रस्तुत किया? यूहन्ना 14:31

यूहन्ना 17:24-26

1 यूहन्ना 4:19

4. परमेश्वर और लोगों की सेवा करने लिए सही इरादे रखने के विषय में 1 कुरिन्थियों 13:1-3 में क्या बताया गया है?

5. **क.** 1 कुरिन्थियों 13:4-8क में परमेश्वर के उस प्रेम का वर्णन कैसे किया गया है जिसे यीशु ने दिखाया, और जो हमारे भले कामों की प्रेरणा हो ऐसे परमेश्वर चाहता है?

ख. यूहन्ना 17:26ख के अनुसार यह प्रेम कहां से आता है?

6. **क.** परमेश्वर के चरित्र को प्रतिबिम्बित करने में, यीशु ने उन लोगों से भी, जैसे कि यहूदा, प्रेम किया जिन्होंने उसके प्रेम को अस्वीकार किया था। उसने उनसे भी निरंतर याचना की जिन्होंने उसे अस्वीकर किया था। जब यीशु ने उस व्यक्ति के पैर धोए जो उसे पकड़वानेवाला था, उसने हमारे सामने सेवा के किस उत्तरदायित्व का आदर्श प्रस्तुत किया?

ख. जिनसे प्रेम करना कठिन है, या जो संवेदनशील नहीं हैं, ऐसे लोगों तक पहुँचने के संबंध में कौनसे सिद्धान्त निम्नलिखित वचनों में पाए जाते हैं? रोमियों 12:14, 17-21

2 तीमुथियुस 2:24-26

1 पतरस 4:16, 19

टिप्पणी: जब हम कठिन लोगों तक पहुंचना जारी रखते हैं तब यह भी

महत्त्वपूर्ण और पवित्रशास्त्र के अनुसार है कि हम अपने लिए स्वास्थ्यकारक सीमाओं को बनाए रखें। इस विषय पर *बाउन्ड्रीज* एक अच्छी पुस्तक है (*लेखक डॉ. हेनरी क्लाउड एण्ड जॉन टाउसेन्ड, झोन्डरवैन पब्लिशर्स*)।

7. जब यीशु ने पतरस के पैर धोए तब उसने उस प्रेमपूर्ण धीरज का प्रदर्शन किया जो उन लोगों की सेवा करने में आवश्यक होता है जिनमें गंभीर कमियां होती हैं। जो हमें क्रोध दिलाते हैं उन्हें रचनात्मक प्रत्युत्तर देने के विषय में निम्नलिखित वचन क्या कहते हैं?
   कुलुस्सियों 3:12-14

   याकूब 4:11-12

8. यीशु ने मात्र उनकी सेवा नहीं कि जो समाजिक मान्यताप्राप्त या धार्मिक थे। वह अपनी बहिष्कृत और "पापी" लोगों के बीच की जानेवाली सेवकाई के लिए प्रसिद्ध था। दूसरों की सेवा करने के संबंध में याकूब 2:1-8 में पाए जानेवाले सिद्धान्तों का सारांश लिखिए।

9. **क.** इफिसियों 2:10 के अनुसार, परमेश्वर के अपनी प्रत्येक संतान के लिए क्या उद्देश्य हैं?

   ख. जबकि यीशु को अपने चारों ओर के जगत में पाई जानेवाली *सारी* भयंकर आवश्यकताओं की जानकारी थी, उसने अपने पृथ्वी पर के काम को तीन वर्षों में समाप्त कर दिया। जब आप कहां और कैसे सेवा करें के संबंध में प्रभु से अगुवाई मांगते हैं, वह क्या प्रतिज्ञा करता है?
   भजन संहिता 32:8

   2 कुरिन्थियों 9:8

सारांश

10. **क.** यीशु ने मानवजाति की सेवा जिस ढंग से की उसकी प्रेरणा क्या थी?

ख. भलाई करने के लिए स्वार्थी इरादे रखने के विपरीत, सेवा की ये प्रेरणाएं क्यों स्थायी तृप्ति उत्पन्न करती हैं?

11. क्या कोई ऐसे लोग हैं जिनकी चिंता और सहायता करने में आपको कठिनाई होती है? यीशु के द्वारा यहूदा के साथ किया गया व्यवहार, इस पाठ में दिए गए अन्य बाइबल वचनों के साथ, आपको ऐसे लोगों से प्रेम करने और उनकी सेवा करने के विषय में क्या दिखाता है?

12. जब आप इस प्रयास में रहते है कि यीशु को आपके द्वारा लोगों से प्रेम करने दे और उनकी सेवा करें तब यीशु आपसे क्या प्रतिज्ञा करता है?
1 कुरिन्थियों 15:58

पाठ १६ टिप्पणियाँ

1. *फसह का भोज*। (टिप्पणी 1, *फसह का पर्व*, पृष्ठ 29, को भी देखिए।) फसह का पर्व, लगभग 1500 वर्ष पहले हुए इस्राएलियों के मिस्र की गुलामी से छुटकर बाहर आने के निर्गमन का उत्सव था। उस समय, प्रत्येक इस्राएली परिवार ने अपने द्वार की चौखट पर मेमने का लहू लगाया था, ताकि जब मृत्यु का दूत प्रत्येक मिस्री घर के पहिलौठे को मारेगा, उनके परिवार को "छोड़ जाएगा।" (इस वृत्तांत के लिए देखिए: निर्गमन 12:1-14)। मेमने के लहू ने उन्हें परमेश्वर द्वारा मिस्रियों पर भेजे गए दण्ड से बचाया था। यहूदी प्रत्येक वर्ष फसह के सप्ताह को मनाते थे, जो यहूदी कैलेण्डर के निसान महिने की 14 तारीख को दोपहर 2:30 से 5:30 के बीच आरंभ होता था। उस समय याजकों के प्रांगण में लोगों के पापों के लिए मेमने का बलिदान किया जाता था। यह विधी इसलिए की जाती थी कि उसके कारण परमेश्वर उनके पापों को "छोड़ जाएगा" या क्षमा करेगा। संध्या के धुंधले प्रकाश में फसह का भोज आरंभ होता था। यीशु ने अपने शिष्यों के साथ जो फसह का भोज किया था वह दु:ख-भोग सप्ताह के गुरुवार को हुआ था। यीशु जानता था कि वह सिद्ध और अंतिम "फसह का मेमना" बनकर वध होनेवाला था (1 कुरिन्थियों 5:7ख)। ऐसे लगता है कि यीशु ने अपने शिष्यों के साथ फसह के भोज के पहले चुपके से व्यवस्था की थी, ताकि यहूदा द्वारा पकड़वाया जाना बीच में रुकावट न लाए (लूका 22:7-13)। प्रभु अपने लोगों के साथ यह भोज करने के लिए उत्सुक

था, जिसमें वह "नयी वाचा" को स्थापित करनेवाला था। इस वाचा में, मसीह की देह और लहू के द्वारा उन सब के लिए पापों की क्षमा उपलब्ध होनेवाली थी जो यीशु पर विश्वास करनेवाले थे।

2. **संदर्भः** टिप्पणी 5, *शैतान*, पृष्ठ 68

3. *स्नान* (यूहन्ना 13:10)। अनेक टीकाओं के अनुसार, यीशु के स्पष्टीकरण में उपयोग किया गया स्नान शब्द, मसीह में विश्वास के द्वारा होनेवाले आरम्भिक आत्मिक शुद्धीकरण का प्रतीक रहा होगा (तुलना कीजिएः तीतुस 3:5)। पैर धोना, पापों का अंगीकार करने के द्वारा होनेवाले निरंतर के शुद्धीकरण का प्रतीक रहा होगा (तुलना कीजिएः 1 यूहन्ना 1:9)। और शुद्ध बने रहने की अवस्था परमेश्वर के साथ सही बने रहने का प्रतीक होगी।

4. शैतान ने यहूदा *पर पूरा नियंत्रण कर लिया*। यजमान का अपने पाहुन को स्वयं रोटी देना, उस पाहुन के प्रति आदर को प्रगट करना होता था। यजमान की ठीक बायीं ओर बैठना भी, जो बहुत संभव है कि यहूदा का स्थान था, आदर की बात होती थी। बहुतेरे विश्वास करते हैं कि यहूदा के साथ की गईं ये, दोनों में से चाहे एक या दोनों, बातें यीशु के द्वारा यहूदा के कठोर हृदय से की गयी *अंतिम* याचनाएं थीं। परन्तु उन याचनाओं को ठुकराया गया। यीशु के विदाई के साथ ही यहूदा ने शैतान को "हां" कहने का अपना अंतिम चुनाव करते हुए उसे अपने में प्रवेश और नियंत्रण करने की अनुमति दे दी थी। यहूदा के ऐसा चुनाव करने के कारण चाहे जो रहे हों, शैतान ने निश्चय ही सोच लिया था कि यीशु की मृत्यु परमेश्वर की उस योजना और कार्य को नष्ट कर देगी जो वह अपने पुत्र के द्वारा करनेवाला था। इसके विपरीत, यीशु की मृत्यु परमेश्वर की मानवजाति के उद्धार की योजना को पूरा करनेवाली थी (देखिए टिप्पणी 2, *परमेश्वर का मेमना,* पृष्ठ 21, तथा टिप्पणी 5, *शैतान,* पृष्ठ 68)

5. *यीशु ने वह निर्देश दिया जो उसकी मृत्यु की ओर ले जाएगा*, अर्थात्, "*जो तू करता है, तुरन्त कर*" (13:27)। "यीशु के ये शब्द पुनः एकबार उसके नियंत्रण को दिखाते हैं। उसकी मृत्यु वैसे ही होनेवाली थी जैसे उसने निर्देश दिए थे, वैसे नहीं जैसे उसके विरोधियों ने निश्चित किया था।" *द एनआइव्ही स्टडी बाइबल,* पृष्ठ 1624.

--0--

पाठ १७ यीशु अपने शिष्यों को शान्ति देता है

यूहन्ना 14

उस समय तक ऊपरी कक्ष में ही रहते हुए, यीशु ने अपने शिष्यों को अपनी अंतिम शिक्षाएं देना आरंभ किया। वे व्याकुल थे, क्योंकि यीशु ने उन्हें बताया था कि उनमें से एक उसे पकड़वाएगा, और यह कि वह जहां जा रहा था वहां वे उसके पीछे नहीं जा सकेंगे। परन्तु यीशु ने उन्हें परमेश्वर में और उसमे विश्वास करते हुए अपने हृदयों को शांत करने कहा। यीशु ने उन्हें कभी निराश नहीं किया था, और उसने प्रतिज्ञा की कि बातें चाहे जितनी बुरी दिखाई दें, वह उन्हें कभी निराश नहीं करेगा।

यीशु ने समझाया कि वह स्वर्ग में उनके लिए स्थान तैयार करने जा रहा था, और उसने स्वयं उन्हें वहां अपने साथ रहने के लिए ले जाने हेतु वापस आने की प्रतिज्ञा की।[1] जब थोमा ने प्रभु से जहां वह जा रहा था वहां का मार्ग पूछा, तब यीशु ने घोषणा की, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।"[2] वह स्पष्ट कर रहा था कि परमेश्वर तक पहुंचना तब तक असंभव है जब तक कोई 'देहधारण किए परमेश्वर' में विश्वास नहीं कर लेता, जो स्वयं होने का दावा यीशु ने सर्वदा किया था। कोई परमेश्वर को सच में तब तक नहीं जान सकता जब तक यीशु में विश्वास नहीं कर लेता, उस **एक** में जिसमें पिता ने स्वयं को मनुष्य रूप में प्रगट किया था।

तब फिलिप्पुस ने विनती की, "हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे।" यीशु ने उससे कहा, "जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है; मेरी ही प्रतीति करो कि मैं पिता में हूं; और पिता मुझ में है; नहीं तो कामों ही के कारण मेरी प्रतीति करो।" यीशु ने समझाया कि वह अब पिता के पास जानेवाला था, और, जबकि शिष्य उसकी सेवकाई को जारी रखेंगे, वे उनसे भी बड़े आश्चर्यकर्म[3] करेंगे जो उसके द्वारा किए गए थे। जो कुछ वे उसके नाम से मांगेंगे,[4] उसे वह करेगा ताकि उनके द्वारा पिता की महिमा हो।

अपने शिष्यों को और भी शान्ति और आश्वासन देने यीशु ने उन्हें बताया कि पिता के पास जाने के बाद वह पवित्र आत्मा को उनके सहायक और शिक्षक के रूप में भेजेगा। पवित्र आत्मा उनके *साथ* रहेगा, जैसे यीशु रहता था, और उन *में* वास करेगा ताकि उनके द्वारा मसीह के गुणों और कामों को उत्पन्न करे।

अपनी निकटवर्ती मृत्यु और पुनरुत्थान की ओर संकेत करते हुए, जिसे शिष्य उस समय नहीं समझे थे, यीशु ने घोषणा की कि संसार फिर उसे नहीं देखेगा। तथापि, उसने विश्वासियों[6] के लिए वापस आने की प्रतिज्ञा की, जो उसे आत्मिक आंखों से देख पाएंगे, और उसके पुनरुत्थित जीवन के सहभागी होंगे।

तब यीशु ने एक सच्चे शिष्य के चिन्ह को बताया: "यदि कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा।" यीशु ने कहा कि जो उसकी शिक्षा के प्रति विश्वासयोग्य बने रहेंगे, उन्हें पिता से विशेष प्रेम मिलेगा। यीशु ने प्रतिज्ञा की, "मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साथ वास करेंगे।"

यहूदा ने (संभवत: तद्दै ने; मत्ती 10:3; मरकुस 3:18), यीशु से पूछा कि वह क्यों संसार को फिर दिखाई नहीं देगा परन्तु केवल विश्वासियों के द्वारा ही देखा जाएगा। यह बात उनकी उस अपेक्षा के अनुरूप नहीं थी, कि यीशु वह मसीह-संबंधित राजा बनेगा जिसकी प्रतिज्ञा पवित्रशास्त्र ने की थी (तुलना कीजिए: पृष्ठ 53 पर दी गई टिप्पणी 5)। यीशु ने उत्तर में कहा कि परमेश्वर का प्रकटीकरण उस व्यक्ति के भीतर से आएगा जो यीशु के प्रति प्रेम और विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता के साथ प्रत्युत्तर देगा।

तब उसने घोषणा की कि उस घड़ी "संसार का सरदार" या शैतान को नियंत्रण दिया गया था। परन्तु उसका पतन ही होनेवाला था, (तुलना कीजिए: 12:31)[7] क्योंकि मसीह ने क्रूस के प्रति समर्पित होकर अपने पिता के लिए अपने महान प्रेम को प्रमाणित किया था। यह भी कि उसके शिष्यों के विश्वास की रक्षा होनेवाली थी, जबकि वे यीशु की सारी भविष्यवाणियों को पूरा होते देखेंगे।

पढ़िए यूहन्ना 14:1-14

1. शिष्य तब व्याकुल हो गए जब उन्होंने इस बात पर विचार किया कि यीशु उन में से किसी एक के द्वारा पकड़वाया जानेवाला था, और ऐसे स्थान में चला जानेवाला था जहां वे उसके पीछे नहीं जा सकेंगे। असंमजस और भ्रम के इस समय में सामर्थ्य और आशा पाने के लिए क्या करने की आज्ञा यीशु ने उन्हें दी (14:1)?

2. यीशु ने स्वर्ग में अपने पिता के घर के विषय में क्या प्रतिज्ञा की (14:2-3)?

3. थोमा द्वारा स्वर्ग, जहां यीशु जा रहा था, के विषय में पूछे गए तर्कपूर्ण प्रश्न का उत्तर यीशु ने कैसे दिया (14:5-6)?

संदर्भः टिप्पणी 2, *बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता*, पृष्ठ 149

4. फिलिप्पुस द्वारा पिता को देखने के लिए की गई विनती का उत्तर यीशु ने कैसे दिया (14:8-11)?

संदर्भः टिप्पणी 1, *यीशु के आश्चर्यकर्म*, पृष्ठ 76

5. **क.** यीशु में विश्वास करने का परिणाम क्या होने की प्रतिज्ञा उसने की (14:12)?

संदर्भः टिप्पणी 3, *इन से भी बड़े काम*, पृष्ठ 149

ख. यीशु ने प्रार्थना के विषय में कौनसी जबरदस्त प्रतिज्ञा की (14:13-14)?

टिप्पणीः *जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे*, पृष्ठ 149

पढ़िए यूहन्ना 14:15-31

6. यीशु ने उस पवित्र आत्मा का वर्णन कैसे किया जिसे अपने प्रेम करने और आज्ञा माननेवालों को देने की प्रतिज्ञा उसने की थी (14:16-17)?

टिप्पणीः सहायक (ग्रीक में *पेरेक्लेटॉस*) का अर्थ, 'वह जो सहायक या रक्षक के रूप में साथ रहने के लिए बुलाया गया, कचहरी में मित्र, मध्यस्थ, अगुवाई और सहायता में विश्वासयोग्य, शांति देनेवाला' होता है। यीशु पृथ्वी पर रहते समय शिष्यों के लिए यही सब था, और शीघ्र ही पवित्र आत्मा यीशु का स्थान लेनेवाला था। यीशु भी इस भूमिका को स्वर्ग में करता रहेगा (तुलना कीजिएः 1 यूहन्ना 2:1ख)। **संदर्भः** टिप्पणी 2, *पवित्र आत्मा*, पृष्ठ 37

7. यीशु की प्रतिज्ञा के अनुसार, उसके पिता के पास जाने के बाद विश्वासियों के लिए क्या होनेवाला था (14:18-20)?

संदर्भः टिप्पणी 6, *मैं तुम्हारे पास आता हूं,* पृष्ठ 150, और टिप्पणी 1, *मैं .. ....फिर आकर,* पृष्ठ 148

8. यीशु के अनुसार, यीशु से सच्चा प्रेम करनेवाले के विषय में कौनसी बात सच होगी (14:15, 21)?

9. यहूदा (इस्करियोती नहीं) और अन्य शिष्य चाहते थे कि यीशु अपनी मसीह होने की सामर्थ्य और महिमा सारे जगत के सामने प्रगट करे। इसके विषय में किए गए यहूदा के प्रश्न का उत्तर यीशु ने क्या दिया (14:22-24)?

10. यीशु ने पवित्र आत्मा के विषय में और क्या सिखाया (14:25-26)?

11. यीशु, हमारी भय या घबराहट की परिस्थिति के लिए कौनसी अद्‌भुत प्रतिज्ञा कर सका (14:27)?

12. **क.** जो बातें शिष्य उस समय तक पूरी रीति से समझ नहीं पा रहे थे, उन्हें समझाने में यीशु क्यों समय दे रहा था (14:29)?

ख. यीशु ने "संसार के सरदार" के साथ होनेवाले उसके संघर्ष के विषय में क्या बताया (14:30-31)?

संदर्भः टिप्पणी 7, *उसका पतन होगा,* पृष्ठ 150 और टिप्पणी 5, *शैतान,* पृष्ठ 68

टिप्पणीः *उठो यहां से चलें,* (14:31ख)। सामान्यतः माना जाता है कि जबकि यीशु ने यहां अपने शिष्यों से ऊपरी कक्ष छोड़ने कहा था, तौभी 18:1 तक उन्होंने ऐसा नहीं किया था। यह कल्पना करना कठिन है कि शेष भाषण सार्वजनिक स्थान में या गतसमनी बाग को जाते समय मार्ग में कहा गया होगा।

बुनियाद पर बनाना
शान्ति जो समझ से परे है

यीशु अपने क्रूसीकरण से कुछ ही घंटे दूर था। जिन शिष्यों से वह बहुत प्रेम करता था, वे ऐसी निराशा और नुकसान का समाना कर रहे थे जो वे समझ नहीं पा रहे थे। परमेश्वर का पुत्र, उनका मसीह, वही जिसने आंधी को शांत किया था, हजारों को भोजन खिलाया था, और मरे हुओं को मृत्यु में से जिलाया था, उसी समय पृथ्वी पर अपना राज्य क्यों स्थापित नहीं कर सकता था, और क्यों शिष्यों को नेतृत्व के ओहदे नहीं दे सकता था? क्यों उसे उन्हें छोड़कर जाना और मरना अवश्य था? कोई तरीका नहीं था जिससे यीशु उस समय उन्हें ये सारी बातें पूरी रीति से समझने में सहायता करता। संभवत: वह अपने विश्वासयोग्य अनुयायियों के लिए उतना ही दु:खी हो रहा था, जितना कि वह अपने उस मार्ग के कारण हो रहा था, जो उसे आनेवाले कुछ घंटो में लेना अवश्य था।

तथापि, मानव इतिहास के उस सब से अधिक अंधकारमय समय के दौरान, *यीशु के पास शान्ति थी और उसने शान्ति दी* -- तब जब पापी मनुष्य परमेश्वर के अनुग्रहकारी पुत्र को क्रूस पर चढ़ानेवाला था। उस समय, यीशु उस शान्ति को जानता था, और उसने वह शान्ति दी, जो भीतर से आती है और जो कठिन से कठिन कठिनाई, दर्द और दु:ख को सह सकती है। यीशु ने समझाया कि यह शान्ति, महिमामय अनंत भविष्य के आश्वासन से, भीतर वास करनेवाले पवित्र आत्मा की सहायता और सतत घनिष्ठ मित्रता से, और प्रार्थना के सामर्थ्य से प्राप्त होती है।

आज, मनुष्य-मनुष्य और राष्ट्र-राष्ट्र के बीच की शान्ति हमारे संसार में सब से बड़ी समस्या है, जैसे कि इतिहास के हर एक पीढ़ी में थी। और जीवन में तृप्ति का अनुभव करने के लिए व्यक्तिगत शान्ति आवश्यक है। शान्ति की तलाश में, बहुतों ने यीशु को एक राजनीतिक राजा के रूप में चाहा था, जिसने मानवीय कष्टों से आराम दिया होता। क्या इससे उनके संसार में शान्ति आनेवाली थी?

यीशु ने कहा, "मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता; तुम्हारा मन न घबराए और न डरे" (14:27)। आइए हम उस शान्ति को और अधिक जानें, जो यीशु देता है -- उस शान्ति को जो समझ से परे है।

1. क. आप उस शान्ति का वर्णन कैसे करेंगे जो संसार देता है?

ख. लोग, मसीह से अलग, शान्ति की तलाश कहां और कैसे करते हैं?

ग. यीशु जो शान्ति देता है वह उस शान्ति से कैसे भिन्न है जो हम उससे अलग होकर पाते हैं?

2. **क.** निम्नलिखित वचनों में यीशु और शान्ति का क्या संबंध है?
यशायाह 9:6ख

लूका 2:10-14

ख. यूहन्ना 14:27 के साथ ही यूहन्ना 16:33 में यीशु ने शान्ति के विषय में क्या प्रतिज्ञा की है?

3. यूहन्ना 14:13-14 में, यीशु ने शिष्यों से कहा कि वे प्रार्थना के द्वारा शान्ति और सामर्थ्य पाएंगे। प्रार्थना और शान्ति के विषय में फिलिप्पियों 4:6-7 हमें क्या बताता है?

4. यीशु ने अपने शिष्यों को, उस पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा के द्वारा शान्ति दी जो उनमें वास करने के लिए पेन्तेकुस्त के दिन भेजा जानेवाला था। पवित्र आत्मा और उसके द्वारा दी जानेवाली शान्ति के विषय में निम्नलिखित वचन हमें क्या बताते हैं?
रोमियों 8:15-16

रोमियों 8:26-27

5. यीशु ने, जाकर प्रत्येक विश्वासी के लिए स्वर्ग में स्थान बनाने की प्रतिज्ञा की। वह अंतिम शान्ति क्या है जो यीशु देता है?
प्रकाशितवाक्य 21:1-4

6. **क** यीशु ने, उस शान्ति की जो वह देता है, क्या कीमत चुकाई?
यशायाह 53:5

संदर्भ: टिप्पणी 2, *परमेश्वर का मेमना*, पृष्ठ 21

ख. हम तब तक परमेश्वर *की* शान्ति नही पा सकते, जब तक हमारी परमेश्वर *के साथ* शान्ति स्थापित नहीं हो जाती। हम उस शान्ति को, जो यीशु देता है, पाना कैसे आरंभ करते हैं?
रोमियों 5:1

7. यीशु की शान्ति का चित्रण निम्नलिखित वचनों में कैसे किया गया है?
भजन संहिता 23:4

यशायाह 32:17-20

यशायाह 26:3

सारांश

8. आपकी *तृप्ति की तलाश* में शान्ति का क्या स्थान है?

9. यीशु मसीह आपसे शान्ति की क्या प्रतिज्ञाएं करता है?

10. क्या आपके जीवन में कोई क्षेत्र है/हैं जहां आप अधिक शान्ति का अनुभव करना चाहेंगे? आप वह शान्ति कैसे अनुभव कर सकते हैं?

पाठ १७ टिप्पणियाँ

1. *मैं ... फिर आकर* (14:3)। यीशु अपने पृथ्वी पर के दूसरे आगमन के विषय में कह रहा था। उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने के पहले (यूहन्ना 14:3; मत्ती 24:30-31), और पुन: उसके पुनरुत्थान के बाद (यूहन्ना 21:22), यीशु ने प्रतिज्ञा की कि वह पृथ्वी पर वापस आएगा। उसने शिक्षा दी कि उसके आने की घटना का समय, जिसे *मसीह का दिन* या मात्र *उस दिन* कहा जाता है, केवल परमेश्वर ही जानता है (मरकुस 13:32)। यीशु ने प्रतिज्ञा की कि वह

व्यक्तिगत रूप से देह-सहित आएगा (प्रेरितों के काम 1:11), और उसका आना, बड़ी महिमा और वैभव के साथ, दृश्य रूप से और सुस्पष्ट होगा। जब वह आएगा, वह प्रत्येक का न्याय करेगा (2 तीमुथियुस 4:1), और धार्मिकता और शान्ति के नये महिमामय जगत में ले जाएगा। कुछ लोग विश्वास करते हैं कि यीशु के दो आगमन होंगे, एक, जब वह कलीसिया को उठा लेने के लिए आएगा (1 थिस्स. 4:17), दूसरा जो महाक्लेश के समय के बाद होगा (प्रकाशितवाक्य 7:14)। अन्य लोग यीशु के आगमन के सारे बाइबल-आधारित हवालों को एक ही घटना के पहलुओं के रूप में देखते हैं, जो इतिहास के अंत समय में होगी। द *एनआइव्ही टॉपिकल स्टडी बाइबल,* पृष्ठ 1075. (हवाले- आमोस 8:3, 9, 13; 9:11; मीका 4:6; 5:9-15; 2 थिस्स. 1:6-10; प्रकाशितवाक्य 19:11-16; प्रेरितों 1:9-11)

2. *बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता* (14:6)। "यदि यह आपत्तिजनक रीति से सीमित लगता है, तो यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि जिसने यह दावा किया है वह देहधारी वचन और पिता को प्रगट करनेवाला है। यदि परमेश्वर के पास मनुष्यजाति को संदेश देने का और कोई मार्ग नहीं है सिवाय उसके वचन के (चाहे देहधारी या वैसे ही), तो मनुष्यजाति के पास भी परमेश्वर तक पहुँचने का और कोई मार्ग नहीं है सिवाय उसी वचन के, जो देहधारी हुआ और हमारे मध्य रहा ताकि पहुँच का वह मार्ग उपलब्ध करा दे। यीशु का दावा, इस सुसमाचार की प्रस्तावना के प्रकाश में समझते हुए, सीमित नहीं परन्तु सम्मिलित करनेवाला है। सम्पूर्ण सत्य परमेश्वर का सत्य है, जैसे कि सम्पूर्ण जीवन परमेश्वर का जीवन है; परन्तु परमेश्वर का सत्य और परमेश्वर का जीवन यीशु में देहधारी हुए हैं।" एफ. एफ. ब्रुस, द *गॉस्पल ऑफ जॉन,* पृष्ठ 298

3. *इन से भी बड़े काम* (14:12)। "यीशु यह नहीं कह रहा है कि उसके शिष्य और अधिक आश्चर्यजनक काम करेंगे -- कहा जाए तो, मृतकों में से जिलाना तो सर्वाधिक आश्चर्यजनक काम है। बल्कि, शिष्य, पवित्र आत्मा के सामर्थ्य में काम करते हुए, परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार पलस्तीन देश के बाहर और सारे जगत में पहुँचानेवाले थे।" *लाइफ एप्लिकेशन बाइबल, एनआइव्ही,* पृष्ठ 1911

4. *जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे* (14:13)। यीशु के नाम से मांगने का अर्थ परमेश्वर की इच्छा और चरित्र के अनुसार मांगना है। "परमेश्वर उन विनतियों को पूरा नहीं करेगा जो उसके स्वभाव और इच्छा के विरुद्ध हैं, और हम उसके

नाम को किसी जादूई मंत्र के रूप में, अपनी स्वार्थी लालसाओं को पूरा करने के लिए उपयोग में नहीं ला सकते। यदि हम गंभीरता से परमेश्वर के पीछे चल रहे हैं, और उसकी इच्छा को पूरा करना चाहते हैं, तो हमारी विनतियां उसकी इच्छा के अनुरूप ही होंगी और वह उन्हें पूरी करेगा।" *लाइफ एप्लिकेशन बाइबल, एनआइव्ही,* पृष्ठ 1911 । "मात्र वह प्रार्थना नहीं जो यीशु के नाम का उल्लेख करती है, परन्तु . . . वह प्रार्थना जो यीशु के द्वारा किए गए काम को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से की गई हो -- प्रार्थना जिसका उत्तर वह स्वयं देगा (वचन 14 भी देखिए)।" द *एनआइव्ही स्टडी बाइबल,* पृष्ठ 1625

5. **संदर्भः** टिप्पणी 2, *पवित्र आत्मा,* पृष्ठ 37

6. *मैं तुम्हारे पास आता हूं* (14:18)। यीशु अपने पुनरुत्थान के बाद के दर्शनों, अपने दूसरे आगमन (देखिएः उपरोक्त टिप्पणी 1), और परमेश्वर के पवित्र आत्मा के आगमन, जो उनमें वास करने के लिए भेजा जानेवाला था, के विषय में कह रहा था।

7. *उसका पतन होगा* । जैसे की यीशु ने कुछ दिनों पूर्व कहा था, शैतान का पतन होनेवाला था (यूहन्ना 12:31), परन्तु शैतान उसे नहीं जानता था। जबकि उसने यीशु को समाप्त कर देने की योजना बनाई थी, यीशु में ऐसा कुछ नहीं था जिसकी सहायता से शैतान उस पर अपनी पकड़ कसता ताकि उस पर जय प्राप्त कर सके। मसीह पाप-रहित और बुराई पर विजयी था। यीशु जानता था कि जब वह क्रूस पर अपना प्राण देगा, वह शैतान के हाथों असहाय शिकार होनेवाला नहीं था, परन्तु वह पिता की आज्ञा का पूर्ण पालन करनेवाला था। यीशु जानता था कि उस घटना की सम्पूर्ण प्रक्रिया परमेश्वर के उद्देश्य - अर्थात् विश्वास करनेवालों के लिए उद्धार और परमेश्वर के लिए महिमा - को पूरा करने के लिए अधिशासित की जानेवाली थी। इसके प्रकाश में, यीशु दृढ़निश्चय के साथ, परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए आगे बढ़ा। टिप्पणी 2, *परमेश्वर का मेमना* भी देखिए, पृष्ठ 21

--0--

पाठ १८ शिष्यत्व से संबंधित और शिक्षा

यूहन्ना 15

यीशु ने अपने शिष्यों को अपना विदाई संदेश देना जारी रखते हुए, परमेश्वर के प्रत्येक विश्वासी के जीवन में किए जानेवाले कार्य को दिखाने हेतु दाखलता की समानता का उपयोग किया। इस समानता में, परमेश्वर पिता किसान (स्वामी और रखवाला) है, यीशु दाखलता है, और प्रत्येक विश्वासी उस दाखलता की डाली है। पिता निरंतर दाखलता से फल न देनेवाली डालियों को काटने का, और फल देनेवाली डालियों को छांटने का काम करता है, ताकि वे अधिक से अधिक फल दें। डालियां अपने पोषण और फल देने की क्षमता के लिए दाखलता पर निर्भर रहती हैं। दाखलता से पोषण प्राप्त किए बिना, डालियां सूख जाती हैं, और निकम्मी हो जाती हैं।

यह समानता शिष्यों के समझने के लिए सरल थी। हर वर्ष पलस्तीन में, किसान अपनी दाख की बारियों की काट-छांट करते थे। वे मरी हुई, सूखी लकड़ियों को काटते और अच्छी डालियों को छांटते थे ताकि उनकी पैदावार बढ़े। यीशु ने इस प्रभावकारी समानता का उपयोग यह समझाने के लिए किया कि पिता प्रत्येक विश्वासी में फलदायकता (मसीह के स्वभाव और काम) को बढ़ाने के लिए कैसे परिश्रमपूर्ण ध्यान देता है। मसीह में बने रहने के द्वारा विश्वासी आहार को प्राप्त करेगा कि मसीह-समान जीवन का "फल" *सहज ही* उत्पन्न करे। यह फलदायकता समय और पिता की देखभाल के साथ बढ़ती जाएगी।

यीशु ने आगे कहते हुए शिष्यों के लिए अपनी सब से बड़ी इच्छा को स्पष्ट किया: कि वे प्रतिदिन परमेश्वर के प्रेम की उपस्थिति में जीएं। यीशु ने स्पष्ट किया कि उसने अपने पिता के प्रेम को अनुभव किया था, क्योंकि उसने निरंतर पिता की इच्छा को पूरा करने का चुनाव किया था। वे भी परमेश्वर के अद्‌भुत प्रेम में बने रहेंगे यदि वे यीशु की एक आज्ञा का पालन करेंगे: "जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसी ही तुम भी एक-दूसरे से प्रेम रखो।" यीशु ने प्रतिज्ञा की कि जो इस आज्ञा का पालन करेंगे वे यीशु की मित्रता का अनुभव करेंगे, परमेश्वर के लिए फलदायी सेवा का विशेष अधिकार पाएंगे, और पिता को महिमा पाते देखेंगे, जब वह विश्वासयोग्यता से उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा।

परन्तु जब वे अन्य विश्वासियों के साथ प्रेमपूर्ण संगति को बढ़ाएंगे, और उसका आनंद

उठाएंगे, यीशु ने चेतावनी दी कि उनकी संगति से बाहर रहनेवालों की ओर से उन पर सताव आएगा। उसने कहा, "यदि संसार तुमसे बैर रखता है, तो तुम जानते हो कि उसने तुमसे पहले मुझ से भी बैर रखा। मैंने तुम्हें संसार में से चुन लिया है इसी लिए संसार तुमसे बैर रखता है।"[1] संसार शिष्यों को विदेशियों के रूप में देखेगा, क्योंकि यीशु ने उन्हें अपने लोग होने के लिए चुन लिया था। यीशु ने उन्हें सावधान किया कि उन्हें भी उसी प्रकार कड़े विरोध का सामना करना होगा, जैसे उसे उन लोगों से सहना पड़ा था जो पिता को नहीं जानते थे। परन्तु विश्वासी लोग परमेश्वर के साथ अपने संबंध को पहचानेंगे, और उसके महत्त्व को जानेंगे।

यीशु ने घोषणा की कि जो उसका विरोध करते थे उनके पास अपने इस पाप के लिए कोई बहाना नहीं था, क्योंकि उन्हों ने अपनी आंखों से यीशु के आश्चर्यकर्मों[2] को, उसकी ईश्वरीय शिक्षाओं और पवित्र जीवन को देखा था। सारे समय का सब से बड़ा न्याय उन नगरों और पीढ़ी पर आएगा जिन्होंने परमेश्वर के पुत्र की उपस्थिति को प्रत्यक्ष देखा था और तौभी उसका इंकार किया था (तुलना कीजिए: मत्ती 11:20-24)।

उस सताव के होते हुए भी, जो उन्हें सहना होगा, शिष्यों को परमेश्वर के उस पुत्र की गवाही देना अवश्य था जिसकी सेवकाई को उन्होंने प्रत्यक्ष देखा था। यीशु ने प्रतिज्ञा की कि सहायक भी, अर्थात् वह पवित्र आत्मा जिसे यीशु भेजेगा, उसके विषय में गवाही देगा। पवित्र आत्मा उन्हें अपने विश्वास में स्थिर रहने के लिए शब्द और सामर्थ्य देगा।

पढ़िए यूहन्ना 15:1-8

1. यीशु के द्वारा दी गई समानता में कौन-कौनसे पात्र हैं, और वे किसका प्रतिनिधित्व करते हैं (15:1, 5)?

2. **क.** किसान का काम और उद्देश्य क्या होता है (15:2)?

   ख. यीशु, इस समानता से, पिता के प्रत्येक विश्वासी के साथ के संबंध के विषय में क्या प्रगट कर रहा था (15:2)?

   संदर्भ: टिप्पणी 3, *काटना-छांटना,* पृष्ठ 158

3. **क.** दाखलता की भूमिका क्या होती है (15:3-5)?

ख. यीशु अपने प्रत्येक विश्वासी के साथ के संबंध के विषय में क्या सिखा रहा था?

टिप्पणी: *तुम तो . . . शुद्ध हो* (15:3; अर्थात् फल लाने के लिए छांटकर शुद्ध किए गए हो, जैसे 15:2 में)। वह शिष्य "शुद्ध" है जो यीशु के वचन को मानता है (14:23), और जिसमें यीशु का वचन बना रहता है (तुलना कीजिए: 15:7)। यहां अर्थ यह भी है कि उसका वचन पिता के द्वारा काटने-छांटने के लिए उपयोग में लाया जाता है।

4. **क.** यद्यपि डाली में दाखलता के बिना जीवन नहीं होता, तौभी उसे बहुत महत्त्वपूर्ण काम दिया गया है। वह काम क्या है?

ख. निम्नलिखित वचनों के अनुसार फलदायकता क्या है?
यूहन्ना 14:12

इफिसियों 5:9

5. मसीह में बने रहने के कौनसे परिणामों की प्रतिज्ञा यूहन्ना 15:7-8 में की गई है?

पढ़िए यूहन्ना 15:9-17

6. **क.** यीशु की अपने शिष्यों के लिए सर्वोच्च इच्छा क्या थी (15:9, 11)?

ख. यह कैसे संभव होगा (15:10, 12, 17)?

7. अपने आज्ञा माननेवालों के साथ के अपने संबंध के विषय में यीशु ने क्या कहा (15:13-16)?

संदर्भः टिप्पणी 4, *जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे,* पृष्ठ 149

पढ़िए यूहन्ना 15:18-27

8. क. यीशु ने उस बैर-भाव के विषय में अपने शिष्यों को क्या बताया जो वे अविश्वासी संसार की ओर से अनुभव करनेवाले थे (15:18-21)?

संदर्भः टिप्पणी 1, *संसार तुम से बैर रखता है* पृष्ठ 158

ख. संसार के उसके प्रति बैर के विषय में यीशु ने क्या कहा (15:22-25)?

9. शिष्यों के सामने आनेवाले सताव के बावजूद, कौन उन्हें यीशु मसीह की गवाही देने के लिए बाध्य और सक्षम करेगा (15:26-27; प्रेरितों 1:8)?

बुनियाद पर बनाना

जीने के लिये सामथ्य

जब शिष्य यीशु के साथ चलते थे, तो वे उस मनुष्य को देखते थे जिसके समान वे बनना चाहते थे। वह दयालु, सहनशील, करुणामय होते हुए भी सत्य के प्रति दृढ़ था। उसकी परमेश्वर की असीम बुद्धि तक पहुंच थी, और वह एक ही समय में आत्मिक और भौतिक दोनों जगत को देखने की क्षमता रखता था। वह एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व था, परमेश्वर के साथ और स्वयं में शान्ति प्राप्त, तथा औरों की आवश्यकताओं की सेवा निस्वार्थता से करने योग्य था। घातक शत्रुओं के सम्मुख उसकी विश्वास की शान्त और निर्भिक चाल शिष्यों के लिए विस्मयकारी थी।

हमारी *तृप्ति की तलाश* में हम सब पूर्ण बनने की, शान्ति पाने की, और जैसे यीशु था वैसे दूसरों के लिए महत्त्वपूर्ण रहने की लालसा करते हैं। हम भय, आत्मसंशय, चिंता, दुविधा, और स्वार्थ पर विजय पाना चाहते हैं, जो हमें वैसे काम करने से रोकते हैं जैसे करने के लिए परमेश्वर ने हमारी रचना की है। हम उस आनंद या सामर्थ्य के भीतरी स्रोत का अनुभव करने की लालसा करते हैं, जो मनोव्यथा और कठिनाइयों के मध्य भी यीशु के पास था।

यूहन्ना 15 का अद्‌भुत समाचार यह है कि यीशु हमें मसीही जीवन हमारी अपनी सामर्थ्य में जीने के लिए नहीं कहता। वह उस संबंध की बात करता है जिसके अन्तर्गत वह हमें वह सबकुछ देता है जो हमारे भीतर इसलिए आवश्यक होता है कि हम उसके चरित्र के उन फलों को उत्पन्न करें जो पूर्णता और तृप्ति की ओर ले जाते हैं। जब हम यीशु के वचन के संबंध में आज्ञाकारिता का जीवन जीते हैं, तब वह पवित्र आत्मा को भेजने की प्रतिज्ञा करता है (यूहन्ना 3:5-8; 4:23; 6:63; 7:39) कि वह प्रत्येक विश्वासी में वास करे (14:15-16, 25)। पवित्र आत्मा उन सब में साक्षात मसीह का जीवन उत्पन्न करता है, जो उसकी अगुवाई के प्रति समर्पित होने का चुनाव करते हैं, और परमेश्वर के वचन से आत्मिक जीवन लेते हैं। वह जो मसीह में बना रहता है, न मात्र स्वाभाविक रीति से ही मसीह-समान जीवन का फल उत्पन्न करता है, परन्तु प्रभावकारी प्रार्थना का जीवन और किसी भी विनती के साथ परमेश्वर तक पहुंच सकने का भी अनुभव करता है (15:7, 16)। उसे परमेश्वर के प्रेम की उपस्थिति (15:9-10), भीतर वास करनेवाले मसीह का पूर्ण आनंद (15:11), मसीह यीशु की बलिदानात्मक मित्रता एवं घनिष्ठता (15:13-15), और स्वयं यीशु के द्वारा चुने हुए उसके सहकर्मी होने की विशेष कृपा का आभास होता है।

यूहन्ना रचित सुसमाचार में पाए जानेवाले यीशु के सर्वाधिक दयालु शब्द उसकी इस शिक्षा में मिलते हैं कि हमें मसीह-समान जीवन, अर्थात् मसीह की सम्पूर्णता, अपने स्वयं के प्रयासों के द्वारा उत्पन्न नहीं करनी है। उसके वचन में बने रहने के द्वारा और जीवनदायक पवित्र आत्मा पर निर्भर रहते हुए, हम यीशु मसीह को हमारी परिस्थिति में चलने और हमारे द्वारा अपना जीवन जीने की अनुमति देने के योग्य होते हैं।

आइए हम जीवन जीने की उस सामर्थ्य का अध्ययन करें जिसे देने की प्रतिज्ञा यीशु ने की है, यदि हम उसमें बने रहते हैं।

1. **क.** अपनी ही सामर्थ्य में ईश्वरीय सिद्धान्तों का अनुसरण करने का और मसीही जीवन जीने का प्रयास करने का परिणाम क्या होता है?

   ख. आप यूहन्ना 15:1-8 में दी गई व्यापक प्रतिज्ञा का सारांश कैसे देंगे?

2. **क.** यीशु हमारे भीतर अपना जीवन कैसे उत्पन्न करता है?
   यूहन्ना 14:16-17 (रोमियों 8:11)

ख. यीशु द्वारा बताया गया "दाखलता का जीवन" कैसे आरंभ होता है?
इफिसियों 1:13-14 (यूहन्ना 3:3, 5-6)

3. निम्नलिखित वचनों में पवित्र आत्मा के कामों का क्या वर्णन किया गया है?
यूहन्ना 14:26

फिलिप्पियों 2:13

4. क. गलातियों 5:16-17, 19-23 में किस संघर्ष का वर्णन किया गया है?

ख. गलातियों 5:16, 24-25 के अनुसार इस संघर्ष पर विजय कैसे पाई जा सकती है?

इफिसियों 5:18ख

ग. यदि हम मसीह में बने रहने की इच्छा रखते हैं तो हम किस प्रकार पवित्र आत्मा के द्वारा भरे जाते हैं?
लूका 11:13

संदर्भ: टिप्पणी 2, *पवित्र आत्मा,* पृष्ठ 37

5. दाखलता में बने रहने के लिए हम किन-किन बातों का चुनाव कर सकते हैं?
भजन संहिता 119:11, 105 (भजन संहिता 1:2-3)

इफिसियों 4:22-24

इफिसियों 4:30-32

1 यूहन्ना 1:9

6. **क.** जितना अधिक हम यह चुनाव करेंगे कि पवित्र आत्मा को हमारे भीतर मसीह का चरित्र उत्पन्न करने की अनुमति दे, उतना ही अधिक वह हमारे जीवन से दिखाई देगा। 2 कुरिन्थियों 3:17-18 में क्या प्रतिज्ञा की गई है?

ख. यदि हम मसीह में बने रहने का चुनाव करते हैं, तो लोग यीशु मसीह की किन विशेषताओं को हमारे जीवन से बराबर प्रगट होते देखेंगे?
गलातियों 5:22-23

इफिसियों 1:17-19क

2 तीमुथियुस 1:17

सारांश

7. **क.** दाखलता और डालियों की समानता, मसीही जीवन को यीशु मसीह के बिना जीने की आपकी क्षमता के विषय में क्या दर्शाती है?

ख. आपके भीतर मसीह का जीवन उत्पन्न करने में पवित्र आत्मा क्या भूमिका निभाता है?

8. यदि आप अपने जीवन का हर एक क्षेत्र यीशु को समर्पित करते हैं, तो वह प्रतिज्ञा करता है कि एक दाखलता के समान, वह अपने स्वयं के स्वभाव के फलों को आपके जीवन के माध्यम से उत्पन्न करेगा। क्या ऐसी कोई परिस्थिति है जिसका समाधान आप अपने ही बल पर निकालने का प्रयास करते रहे हैं? कदाचित् निम्नलिखित प्रार्थना आपके हृदय की इच्छा को व्यक्त करेगी:

प्रभु, मैं मान लेती/लेता हूं कि इस परिस्थिति को मैं अपने ही बल पर सुलझा रही थी/रहा था। अब कृपया इस क्षेत्र का नियंत्रण अपने हाथ में ले, और मुझे अपने प्रेम, बुद्धि और संयम के आत्मा से भर दे। यीशु के नाम में, आमीन।

9. **क.** आप मसीह के चरित्र के किन पहलुओं को विशेष रीति से अपने जीवन में चाहते हैं?

   ख. परिवर्तन एक प्रक्रिया है, परन्तु यीशु किस बात की प्रतिज्ञा करता है, जब आप निरंतर उसमें बने रहने का चुनाव करते हैं?

पाठ १८ टिप्पणियाँ

1. *संसार तुम से बैर रखता है* (15:19)। "जैसे कि यूहन्ना के लेखन में हमेशा पाया जाता है, 'संसार' एक ईश्वर-रहित संसार है, वह संसार जो परमेश्वर के विरोध में संघटित है, और इसीलिए उसके लोगों के विरोध में है। उस क्षण यीशु स्वयं उनके विरोध का निशाना था; कुछ ही घंटों में वह उनकी शत्रुता का शिकार होनेवाला था। यह तो होना ही था कि उसके साथियों को भी संसार का बैर सहना होगा, जैसे उसने सहा था।" एफ. एफ. ब्रुस, द *गॉस्पल ऑफ जॉन,* पृष्ठ 313

2. टिप्पणी 1, *यीशु के आश्चर्यकर्म,* पृष्ठ 76

3. *काटना-छांटना* । "यीशु दो प्रकार की काट-छांट में अंतर करता है:

   (1) डालियों को अलग करना और (2) छटाई करना। फलदाई डालियों की छटाई की जाती है ताकि वे और बढ़ें। दूसरे शब्दों में, अवश्य है कि परमेश्वर, हमारे चरित्र और विश्वास को मजबूत करने के लिए, कभी-कभी हमें अनुशासित करे। परन्तु जो डालियां नहीं फलती, उन्हें तने से काट दिया जाता है, मात्र इसलिए नहीं कि वे निकम्मी होती हैं, परन्तु इसलिए कि वे प्राय: बाकी पेड़ में भी रोग फैला देती हैं। वे लोग जो परमेश्वर के लिए फल नहीं लाते, या जो परमेश्वर के अनुयायियों के प्रयासों में रुकावट बनते हैं, वे परमेश्वर के जीवनदायक सामर्थ्य से काट दिए जाएंगे।" *लाइफ एप्लिकेशन बाइबल, एनआइव्ही*, पृष्ठ 1913

   काटता है (15:2) का संकेत न्याय की ओर है (जैसे कि 15:6 में)। छांटना का संबंध फलदायकता बढ़ाने से होता है। नया नियम में, अच्छे फलों का प्रतीक, ईश्वरीय जीवन के उत्पादन (मत्ती 3:8; 7:16-20), या चरित्र के सद्गुणों का प्रतिनिधित्व करता है (तुलना कीजिए: गलातियों 5:22-23; इफिसियों 5:9; फिलिप्पियों 1:11)। *आग में झोंक देते हैं; और वे जल जाती हैं* (15:6) इस

में कुछ लोग परमेश्वर के उस न्याय की झलक देखते हैं जो अविश्वासियों पर और मसीह में विश्वास करने से हट जानेवालों पर आएगा। कुछ लोग विश्वास करते हैं कि 6:39; 10:27-28 जैसे वचनों के प्रकाश में, ये डालियां संभवत: सच्चे विश्वासियों का प्रतीक नहीं हैं। वे तर्क देते हैं कि सच्चा उद्धार फलदायक जीवन द्वारा प्रमाणित होता है, क्योंकि मसीह के संबंध से बाहर रहनेवाली डाली जीवनरहित होती है (15:2, 4)।

--0--

पाठ १९	# यीशु की विदाई

टिप्पणी: इस पाठ में 'बुनियाद पर बनाना' यह भाग कुछ लम्बा है।

यूहन्ना 16

यीशु ने, अपनी मृत्यु से एक रात पहले, उस समय तक अपने शिष्यों के साथ ऊपरी कक्ष में ही रहते हुए, उन्हें अपने जाने के लिए तैयार करना जारी रखा। उसने उन्हें सताव के विषय में पहले ही सावधान कर दिया था, परन्तु आगे यह भी समझाया कि उनके विश्वास के कारण उन्हें आराधनालय से निकाल दिया जाएगा।[1] कुछ लोग तो यीशु के शिष्यों को मार डालना परमेश्वर के प्रति भक्ति समझनेवाले थे। यीशु ने इन चेतावनियों को दिया ताकि ऐसी घटनाएं उसके अनुयायियों को आश्चर्य में डालनेवाली नहीं होंगी, परन्तु प्रमाणित होगा कि यीशु को सब बातों का ज्ञान था।

स्वाभाविक था कि यीशु के उन्हें छोड़कर जानेवाले शब्दों ने शिष्यों के मनों को दु:ख से भर दिया था। यीशु ने उनसे कहा, "परन्तु मैं तुमसे सच कहता हूं, कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा।" यीशु ने प्रतिज्ञा की कि यीशु की दृश्य उपस्थिति का स्थान सहायक[2] अर्थात् पवित्र आत्मा ले लेगा। पवित्र आत्मा उनके लिए वैसा ही होगा जैसे यीशु रहा था, और उन्हें आनेवाले सताव और नयी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करेगा।[3]

यीशु ने यह भी स्पष्ट किया कि उसके समान ही पवित्र आत्मा की भी अविश्वासी संसार के प्रति सेवकाई होगी। यीशु संसार में अपने शिष्यों के लिए रक्षा-कवच बना हुआ था, परन्तु उसकी उपस्थिति और गवाही उसके सत्य को अस्वीकार करनेवालों पर दोष लगानेवाली ठहरी थी। शीघ्र ही पवित्र आत्मा अविश्वासी संसार के लिए यीशु का स्थान लेनेवाला था। वह पाप को उजागर करेगा, परमेश्वर की धार्मिकता जो मसीह में है उसके मापदण्ड को प्रगट करेगा, और शैतान का न्याय करेगा – अर्थात् "इस संसार के सरदार" का जो उन लोगों के पीछे खड़ा था जो **उसका** विरोध करते थे **जिसे** परमेश्वर ने भेजा था। पवित्र आत्मा की संसार में उपस्थिति मात्र ही यह दिखानेवाली थी कि यीशु ने उस दुष्ट के विरुद्ध युद्ध को जीत लिया है।

पवित्र आत्मा, यीशु के शिष्यों के लिए उनमें वास करनेवाला सहायक और शिक्षक भी ठहरनेवाला था, परमेश्वर और उसके पुत्र के विषय की सच्चाइयों को विश्वासियों की आनेवाली हर पीढ़ी पर प्रगट करना जारी रखनेवाला था। यूहन्ना-रचित सुसमाचार और पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखा गया नया नियम का सम्पूर्ण धर्मशास्त्र (2 पतरस 1:21) इस भविष्यवाणी की पूर्णता का उदाहरण माना जानेवाला था।

शिष्य अभी भी नहीं समझे थे कि यीशु ने जब "थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे" कहा तब उसका अर्थ क्या था। उनकी निराशा को जानते हुए यीशु ने उन्हें और समझाने के लिए एक बालक के जन्म के उदाहरण का उपयोग किया। उसका जाना (मृत्यु), जो शीघ्र ही होनेवाला था, अत्यधिक दु:ख दिलानेवाला था, परन्तु उसका लौटना (पुनरुत्थान) उनमें अवर्णनीय आनंद को उत्पन्न करनेवाला था। तत्पश्चात्, पिता उनकी प्रार्थना-विनतियों को अपने पुत्र के नाम में ग्रहण करेगा। यीशु ने कहा, "अब तक तुमने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा; मांगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।"[4]

मात्र इतना ही नहीं, परन्तु शीघ्र ही उसकी शिक्षाएं दृष्टांत रूप में और उलझन में डालनेवाली नहीं रहेंगी। पवित्र आत्मा उन्हें उन शब्दों में सिखाएगा जो वे सरलता से समझ पाएंगे। और उन्हें आश्वासन मिल सकेगा कि पिता से "यीशु के नाम में"[5] प्रार्थना करने के कारण परमेश्वर न मात्र उन्हें उत्तर देगा, परन्तु *उनका* पिता भी होगा। वह उनसे प्रेम करेगा, और उन्हें ग्रहण करेगा, क्योंकि उन्होंने उसके पुत्र से प्रेम किया था, और उसे ग्रहण किया था।

अंत में, यीशु ने पुन: उस बात को दोहराया जो शिष्यों के लिए अभी भी कष्टदायक और विस्मयकारी घोषणा थी, उसने कहा, "मैं पिता से निकल कर जगत में आया हूं, फिर जगत को छोड़कर पिता के पास जाता हूं।"

अपनी उलझन के बावजूद, शिष्यों ने अपने विश्वास की घोषणा की। उन्होंने विश्वास किया कि यीशु परमेश्वर के पास से आया था और सब बातें जानता था। परन्तु यीशु जानता था कि आनेवाले घंटों में, इसलिए कि वे तितर-बितर हो जाएंगे, और उसे छोड़ देने के लिए विवश किए जाएंगे, वे उन बातों को समझ नहीं पाएंगे। उस क्लेश के मध्य जिसका सामना उन्हें करना होगा, यीशु ने अपने विश्वासयोग्य और अत्यंत प्रिय अनुयायियों को प्रोत्साहित किया कि वे *यीशु में* शान्ति पाए। उसने कहा, "संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो, मैंने संसार को जीत लिया है।"

पढ़िए यूहन्ना 16:1-15

1. **क.** यीशु ने, शिष्यों को आनेवाले सताव के विषय में क्यों सावधान किया (16:1, 4क)?

   ख. यह सताव क्यों होनेवाला था (16:3)?

2. यीशु ने अपने शिष्यों में उसके जाने के विषय में किन भावनाओं को पहचाना (16:5-6)?

3. यीशु ने क्यों कहा कि उसके जाने से शिष्यों को लाभ होगा (16:7)?

   टिप्पणी: सहायक का अनुवाद "शान्ति देनेवाला, सहायक, वकील, मध्यस्थ, सामर्थ्य देनेवाला, साथ खड़ा रहनेवाला" हो सकता है। *दि एम्पलिफाइड बाइबल*

4. पवित्र आत्मा, यीशु की अविश्वासी संसार के प्रति सेवकाई का उत्तरदायित्व लेते हुए क्या करनेवाला था (16:8)?

   संदर्भ: टिप्पणी 6, *तीन महत्त्वपूर्ण काम,* पृष्ठ 170

5. **क.** पवित्र आत्मा यीशु के शिष्यों के लिए क्या करनेवाला था (16:12-13)?

   ख. पवित्र आत्मा की सेवकाई का उद्देश्य क्या होनेवाला था (16:14-15)?

   टिप्पणी: *आनेवाली बातें* (16:13) "संभवत: इसका अर्थ सम्पूर्ण मसीही मार्ग

या प्रकटीकरण है, (जैसा प्रेरितों के लेखन में प्रस्तुत किया गया और सुरक्षित रखा गया), जो यीशु के बोलने के समय भविष्य ही था।" द *एनआइव्ही स्टडी बाइबल,* पृष्ठ 1628

पढ़िए यूहन्ना 16:16-33

6. **क.** यीशु की भविष्यवाणी के प्रति शिष्यों ने क्या प्रतिक्रिया दिखाई (16:16-18)?

   ख. उनके असमंजस को प्रत्युत्तर देते हुए यीशु ने क्या प्रतिज्ञा की (16:19-22)?

7. यीशु ने किस बात की प्रतिज्ञा की जो उसके शिष्यों का आनंद पूरा करनेवाली थी (16:23-27)?

   संदर्भः टिप्पणी 4, *मांगो तो पाओगे,* पृष्ठ 170

8. यीशु ने, अपने विदाई भाषणों को समाप्त करते हुए क्या स्पष्ट कथन दिया (16:28)?

9. शिष्य परमेश्वर की योजना को नहीं समझे थे, परन्तु उन्होंने विश्वास किया कि यीशु सबकुछ जानता था। यीशु ने, आनेवाली घड़ी के विषय में कौनसी अंतिम घोषणा की (16:32)?

10. **क.** यीशु ने अपनी मृत्यु की एक रात पहले जो कुछ शिष्यों से कहा था, वह क्यों कहा था (16:33क)?

    ख. अपने अत्यंत प्रिय अनुयायियों के लिए यीशु की अंतिम प्रतिज्ञा क्या थी (16:33ख)?

बुनियाद पर बनाना
प्रार्थना से तृप्ति

यीशु जब अपने शिष्यों को, उसके जाने के बाद उन पर आनेवाली चुनौतियों के लिए तैयार कर रहा था, उसने उनसे कहा कि उसकी सामर्थ्य को उपयोग में लाए बिना वे उसके लिए जी नहीं सकते थे। ज्यों-हि वे पवित्र आत्मा को अपने जीवनों पर नियंत्रण करने देंगे, वे परमेश्वर की उपस्थिति को अनुभव करेंगे और अविश्वसनीय आश्चर्यकर्मों को होते देखेंगे। इस संदर्भ में, यीशु ने इस बात पर जोर दिया कि प्रभावकारी प्रार्थना के जीवन द्वारा उनका "आनन्द पूरा" होगा (16:24)। जिस किसी ने पुत्र पर विश्वास किया, और उसे ग्रहण किया, वह प्रेमी स्वर्गीय पिता के खुले संपर्क में आएगा, जिससे वह पूर्ण ईमानदारी और निर्भयता के साथ बात कर सकेगा/सकेगी। प्रार्थना के जिस आनन्द का उल्लेख यीशु ने किया, वह मात्र प्रार्थना की विनतियों के उत्तर मिलने में नहीं, परन्तु उससे भी बढ़कर प्रेमी स्वर्गीय पिता के साथ सीधे पारस्परिक संबंध का विशेषाधिकार प्राप्त होने में होता है। उसके साथ की पारस्परिक बातचीत, हृदय की आराधना करने की लालसा के अतिरिक्त, "ऐसा मित्र . . .जो भाई से भी अधिक मिला रहता है" की आवश्यकता को भी पूर्ण करती है (नीतिवचन 18:24)। यह **एक** जो हमारी हर एक विनती को सुनता है, वह सर्वबुद्धिमान, सर्वशक्तिमान और असीमित रीति से प्रेम करनेवाला है। वह हमें पूरी रीति से जानता है, और पूरी रीति से ग्रहण करता है, और किसी भी स्थान, किसी भी समय और किसी भी परिस्थिति में उपलब्ध होता है। उसकी उपस्थिति में उसके प्रेम से हमारी भेंट होती है, और हम उसके स्वरूप में बदलते जाते हैं (2 कुरिन्थियों 3:18)। प्रार्थना के इन पहलुओं में बड़े खजाने और तृप्ति के लिए कुंजियां मिलती हैं।

प्रार्थना मानव की नैसर्गिक प्रवृत्ति है, और जीवन में तृप्ति के लिए प्रभावकारी प्रार्थना-जीवन *अनिवार्य* है। इस पाठ में हम बाइबल के उन सिद्धान्तों को देखेंगे जो हमें निर्देश देते हैं कि प्रार्थना के आनंद को कैसे अनुभव किया जाए।

1. **क.** यीशु ने बताया कि अवश्य है कि हम उसे अपने जीवन में ग्रहण करें (यूहन्ना 16:26-27), और उसी के नाम में प्रार्थना करें, ताकि परमेश्वर हमारी सुने। यह इसलिए कि पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश पाने के लिए अवश्य है कि हम परमेश्वर के द्वारा पवित्र ठहराए जाएं। हम परमेश्वर द्वारा पवित्र (धर्मी, पापों से शुद्ध) कैसे ठहराए जाते हैं?
   रोमियों 3:22-25क

2 कुरिन्थियों 5:21

ख. इन बातों के प्रकाश में, यीशु ने परमेश्वर तक पहुँचने के विषय में क्या बताया?
यूहन्ना 14:6

टिप्पणी: मसीह के द्वारा प्राप्त होनेवाली पापक्षमा सीमित या कुछ ही लोगों के लिए नहीं है, परन्तु सब देशों के सब लोगों के लिए उपलब्ध है (मत्ती 28:19-20; 1 तीमुथियुस 2:4-6क)।

2. यीशु ने हमें निर्देश दिया है कि हम पिता से उसके पुत्र के नाम में प्रार्थना करें। प्रार्थना में हमारी सहायता कौन करता है?
रोमियों 8:26

यहूदा 20

टिप्पणी: *'पवित्र आत्मा में'* का अर्थ 'पवित्र आत्मा के प्रोत्साहन के अनुसार और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में' है। द *एनआइव्ही स्टडी बाइबल,* पृष्ठ 1921

3. एक सरल अंग्रेजी चित्राक्षरी ने बहुतों को प्रार्थना के विभिन्न पहलुओं को स्मरण रखने में सहायता की है। वह इस प्रकार है:

<u>A</u>doration - स्तुति/प्रशंसा

<u>C</u>onfession - पापस्वीकार

<u>T</u>hanksgiving - धन्यवाद

<u>S</u>upplication - विनती

***A* doration** - स्तुति/प्रशंसा

जब हम प्रार्थना का आरंभ स्तुति से करते हैं तब परमेश्वर का आदर किया जाता है। कुछ बातें बताइए जिनके लिए हम परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं।
भजन संहिता 145:3-7

भजन संहिता 145:8-9, 13-19

***C* onfession** - पापस्वीकार - पापों का अंगीकार

क. प्रार्थना के इस महत्त्वपूर्ण पहलु के विषय में निम्नलिखित वचन क्या प्रगट करते हैं?
भजन संहिता 66:18

1 यूहन्ना 1:9

ख. जब हम परमेश्वर से पापों की क्षमा मांगते हैं, यीशु हमें क्या करने का आदेश देता है?

मरकुस 11:25

***T* hanksgiving** - धन्यवाद

परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता के विषय में इन वचनों में क्या शिक्षा मिलती है?
भजन संहिता 100:4

इफिसियों 5:20

***S* upplication** - निवेदन या प्रार्थना विनती

क. हम अपने लिए कौन-कौनसी बातों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं?
फिलिप्पियों 4:6

मत्ती 6:11, 13

याकूब 1:5

भजन संहिता 51:10

ख. हम औरों के लिए कौन-कौनसी बातों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं?
इफिसियों 1:15-19क

इफिसियों 3:16-19

याकूब 5:14-16

ग. *ऐच्छिक:* जब परमेश्वर किन्हीं विशिष्ठ विनतियों का उत्तर, हम जिस समय या जिस प्रकार चाहते हैं वैसे नहीं देता, तब हमें क्या स्मरण रखना चाहिए?
रोमियों 8:32

भजन संहिता 25:10क

भजन संहिता 27:14

यशायाह 55:8-9

अय्यूब 42:2-3

4. जिस तृप्ति की बात यीशु ने की उसे अनुभव करने के लिए प्रार्थना अनिवार्य है। हमें प्रार्थना के द्वारा क्यों उस तक जाना चाहिए?
1 पतरस 5:6-7

फिलिप्पियों 4:7

यिर्मयाह 33:3

सारांश

5. अंग्रेजी चित्राक्षरी $ACTS$ प्रार्थना के किन घटकों का प्रतिनिधित्व करती है? तृप्ति के लिए प्रार्थना के इन पहलुओं में से हर एक क्यों महत्त्वपूर्ण है?

6. इस पाठ से प्रार्थना से संबंधित कौनसे सिद्धान्त आपके लिए सर्वाधिक सहायक हैं?

7. क्या आपका प्रतिदिन का कोई नियुक्त समय है, जब आप बाइबल पढ़ते हैं और प्रार्थना करते हैं? क्या आपने कभी प्रार्थना-सूची रखी है, ताकि परमेश्वर के उत्तरों को अधिक स्पष्टता से देख सकें? ये कुछ आदतें हो सकती हैं, जिन्हें आप आरंभ करना या नयी करना चाहेंगे, ताकि प्रार्थना से प्राप्त होनेवाली तृप्ति का अनुभव करें।

परमेश्वर से अपने मन की सारी बातें कह दीजिए, जैसे कि कोई अपने किसी प्रिय मित्र के सामने मन का बोझ, उसके आनंद और उसके दु:ख हल्का कर देता है। उसे अपनी परेशानियां बताइए, ताकि वह आपको शान्ति दे सके; उसे अपनी खुशियां बताइए, ताकि वह उन्हें सन्तुलित कर सके; उसे अपनी लालसाएं बताइए, ताकि वह उन्हें शुद्ध कर सके; उसे आपको पसंद न आनेवाली बातें बताइए, ताकि उन पर जय पाने के लिए वह

आपकी सहायता कर सके; उससे अपनी परीक्षाओं की चर्चा कीजिए, ताकि वह उनसे आपका बचाव कर सके; उसे अपने हृदय के घाव दिखाइए, कि वह उन्हें चंगा कर सके; उसके सामने अपनी भलाई के प्रति उदासीनता, बुराई के प्रति आपकी भ्रष्ट रुचि, आपकी अस्थिरता खुल कर बताइए। उसे बताइए कि आपका स्वयं के प्रति प्रेम कैसे आपको दूसरों के प्रति अन्यायी बनाता है, व्यर्थता कैसे आपको कपटी बनने का प्रलोभन देती है, घमंड कैसे आपको स्वयं से और दूसरों से छिपाता है।

यदि आप इस प्रकार अपनी सारी दुर्बलताएं, आवश्यकताएं, परेशानियां उंडेल देते हैं, तो कहने के लिए विषयों की कुछ कमी न होगी। आपका विषय कभी समाप्त नही होगा। वह निरंतर नया होता जाता है। जो लोग एक दूसरे से कुछ छिपाते नहीं, उन्हें आपस में बात करने के लिए कभी विषयों की कमी नहीं होती। वे अपने शब्दों को तौलते नहीं, क्योंकि कुछ रोक कर रखना नहीं होता; न ही उन्हें कहने के लिए शब्द तलाशने पड़ते हैं। वे अपने हृदय की बहुतायत में से बोलते हैं, बिना कुछ ध्यान दिए वे जो सोचते हैं, बोल देते हैं। धन्य हैं वे जो परमेश्वर के साथ ऐसे घनिष्ठ, निस्संकोच आपसी बातचीत को प्राप्त कर लेते हैं।

17 वीं शताब्दी के आर्चबिशप फ्रैन्कोइस डी ला मोथे फेनेलॉन

पाठ १९ टिप्पणियाँ

1. *आराधनालय से निकाल दिया गया* । "जिस समय यह सुसमाचार लिखा गया, उस समय इन शब्दों को विशेष प्रासंगिकता प्राप्त थी, क्योंकि उन्हें आराधनालय की प्रार्थनाओं में नासरियों (मसीहियों) पर दिए जानेवाले श्राप के रूप में सम्मिलित किया गया था, जिसका उद्देश्य यह निश्चित करना था कि यीशु के अनुयायी आराधना में सहभागी न हो सके।" एफ. एफ. ब्रुस, द *गॉस्पल ऑफ जॉन*, पृष्ठ 317

2. **संदर्भः** *सहायक*, ग्रीक *पैराक्लेटॉस*, देखिए - पृष्ठ 144 पर प्रश्न क्रमांक 6 के अंतर्गत दी गई टिप्पणी।

3. *मैं उसे* (पवित्र आत्मा को) *तुम्हारे पास भेज दूंगा* (16:7)। यह भविष्यवाणी पेन्तेकुस्त के दिन पूरी हुई (तुलना कीजिए: प्रेरितों के काम 2:1 और आगे के कुछ वचन)।

4. *मांगो तो तुम पाओगे* । यूहन्ना 16:23-27 में, "यीशु, विश्वासी और परमेश्वर के

बीच के एक नये संबंध के विषय में बता रहा है। पहले, लोग याजकों के द्वारा परमेश्वर तक पहुँचते थे। यीशु के पुनरुत्थान के बाद से कोई भी विश्वासी सीधे परमेश्वर के पास पहुँच सकता है। एक नया दिन उदय हुआ है, और अब सब विश्वासी याजक हैं, परमेश्वर से व्यक्तिगत और प्रत्यक्ष बात करते हैं (देखिए: इब्रानियों 10:19-23)। हम परमेश्वर तक हमारी अपनी योग्यता के कारण नहीं पहुँचते, परन्तु यीशु, हमारे महायाजक, ने हमें परमेश्वर के लिए ग्रहणयोग्य बनाया है।" *लाइफ एप्लिकेशन बाइबल, एनआइव्ही*, पृष्ठ 1915

5. **संदर्भ:** *यीशु के नाम में*। देखिए : टिप्पणी 4, *तुम जो कुछ मेरे नाम से मांगोगे,* पृष्ठ 149 (पाठ 17)।

6. "पवित्र आत्मा के *तीन महत्त्वपूर्ण काम* ये हैं:
(1) संसार को पाप के प्रति कायल करना और उसे पश्चात्ताप का बुलावा देना,
(2) जो कोई विश्वास करता है उस पर परमेश्वर की धार्मिकता के आदर्श को प्रगट करना, क्योंकि मसीह आगे शारीरिक रीति से पृथ्वी पर उपस्थित नहीं होगा, और
(3) शैतान पर मसीह का न्याय प्रदर्शित करना।"
लाइफ एप्लिकेशन बाइबल, एनआइव्ही, पृष्ठ 1914

--0--

पाठ २०

यीशु अपनों के लिए प्रार्थना करता है

टिप्पणी: *इस पाठ में 'बुनियाद पर बनाना' यह भाग कुछ लम्बा है।*

यूहन्ना 17

संभवत: अभी भी ऊपरी कक्ष में ही रहते हुए, यीशु ने गतसमनी के बाग में जाने के पहले, अपनी आंखे स्वर्ग की ओर उठाते हुए शिष्यों के सामने प्रार्थना की। इस प्रार्थना में, जिसे उसकी महायाजकीय प्रार्थना के नाम से जाना जाता है, यीशु ने सर्वप्रथम स्वयं के लिए, तत्पश्चात् अपने शिष्यों के लिए, और अंत में उन सब के लिए प्रार्थना की जो इन पहले शिष्यों की गवाही सुन कर विश्वास करनेवाले थे।

उसने प्रार्थना आरंभ की, "हे पिता, वह घड़ी आ पहुँची, अपने पुत्र की महिमा कर कि पुत्र भी तेरी महिमा करे।" वह क्रूस का समय था, जिसके विषय में यीशु सारे समय जानता था कि वह उसकी पृथ्वी पर की सेवकाई का चरम बिन्दु होगा। जिस महिमा के साथ वह क्रूस को, मानवजाति के उद्धार के लिए परमेश्वर के साधन[1] को, सहनेवाला था वह यीशु मसीह के चरित्र और परमेश्वर के मानव के लिए असीमित प्रेम दोनों को प्रगट करनेवाली थी।

सब से बढ़कर, क्रूस के कारण उन सब के लिए जो परमेश्वर की संतान बनेंगे, अनंत जीवन संभव होनेवाला था। अपनी प्रार्थना में, यीशु ने अनंत जीवन को परमेश्वर के साथ का घनिष्ठ संबंध बताया। "और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने" (17:3)। यीशु ने स्पष्ट किया कि क्रूस उसके उस कार्य को पूरा करनेवाला था जिसे पृथ्वी पर करने के लिए पिता ने उसे दिया था, और वह पुत्र के लिए अपने पिता की उपस्थिति में पहुँचने का आज्ञाकारी मार्ग था। वहां, यीशु अपनी महिमा के उस अनंत स्थान को वापस पानेवाला था, जहां वह सबकुछ जो पिता का था -- प्रभुता, बुद्धि और सामर्थ्य -- उसका भी था (17:5,10)।

अपने स्वय के लिए, अपने सामने रखे क्रूस के संबंध में प्रार्थना करने के पश्चात्, यीशु ने अपने शिष्यों के लिए प्रार्थना की, जिनका वर्णन करते हुए उसने कहा, "जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दिया" (17:6)[2]। परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा के द्वारा, यीशु के शिष्यों ने निश्चित रूप से यह विश्वास कर लिया था कि यीशु परमेश्वर के पास

से आया था, और उसने परमेश्वर की बातें कही थीं। यीशु ने यह प्रार्थना नहीं की कि परमेश्वर उन स्त्री-पुरुषों को संसार से उठा ले, क्योंकि वे सारे संसार में पहुँचने के लिए उसके राजदूत ठहरनेवाले थे (17:21, 23; 2 कुरिन्थि 5:18-20)। इसके बजाय उसने प्रार्थना की कि जब वे विरोधी संसार[4] में उसकी गवाही देने का काम करते रहेंगे, तब परमेश्वर उन्हें दुष्ट[3] से बचाए रखे, और उन्हें पवित्र करे (उन्हें अलग रखे, और उनमें अपने चरित्र का निर्माण करे)। यीशु ने स्वयं को अपने शिष्यों को पवित्र करने के लिए समर्पित किया (17:19)।

इसके बाद, यीशु ने उन सब के लिए प्रार्थना की, जो इन आरम्भिक शिष्यों की गवाही के द्वारा उस में विश्वास करनेवाले थे। अनुयायियों के इस छोटे झुण्ड के द्वारा सारे जगत में पहुँचने की परमेश्वर की क्षमता में पूर्ण भरोसा रखते हुए, यीशु ने आगे दृष्टि करते हुए करोड़ों को देखा जो इन शिष्यों की विश्वासयोग्य गवाही के कारण उद्धार पानेवाले थे। उन सब विश्वास करनेवालों के लिए यीशु की प्रार्थना का सार उनकी एकता या एकत्व[5] था। यह परमेश्वर के साथ एक होने से संभव हो सकनेवाला था। "जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों" (17:21)। यीशु ने प्रार्थना की कि जिस प्रेम ने उसे उसके पिता से जोड़ा था, वही प्रेम उसकी कलीसिया में व्याप्त रहे, और संसार के सामने मसीह की सच्चाई और परमेश्वर के उद्धार-करनेवाले प्रेम को प्रदर्शित करे।

अंत में, यीशु ने प्रार्थना की कि जिन्होंने उस पर विश्वास किया वे सर्वदा उसके साथ रहें, उसकी अनंत महिमा को देखें और उसमें सहभागी हों। यीशु ने प्रतिज्ञा की कि उसके स्वर्ग चले जाने के बाद भी वह विश्वासियों पर पिता को प्रगट करता रहेगा, ताकि वे पिता के प्रेम और मसीह की चिरस्थायी उपस्थिति को अनुभव करते रहें।

पढ़िए यूहन्ना 17:1-5

1. **क.** यीशु ने 17:1 में किस बात की ओर संकेत किया जब उसने कहा, "हे पिता वह घड़ी आ पहुँची" (तुलना कीजिए: 2:4; 7:30; 8:20; 12:23, 27; 13:1)?

   संदर्भ: टिप्पणी 2, *परमेश्वर का मेमना,* पृष्ठ 21

   ख. यीशु ने पिता से पुत्र की महिमा किस उद्देश्य से करने कहा (17:1)?

टिप्पणी: *महिमा कर* का अर्थ प्रगट करना या आदर करना होता है।

ग. क्रूस, पिता और पुत्र के विषय में क्या प्रगट करनेवाला था (रोमियो 5:8; 8:31-34)?

2. यीशु ने अनंत जीवन का वर्णन कैसे किया (17:3)?

3. क. यीशु ने पृथ्वी पर क्या करने का लक्ष्य रखा था (17:4)?

ख. वह क्रूस से आगे किस बात की ओर देख रहा था (17:5)?

पढ़िए यूहन्ना 17:6-19

4. यीशु के अनुसार, जिन्होंने उसके द्वारा परमेश्वर के सत्य को मान लिया था उनके विषय में क्या सच था (17:6,8)?

संदर्भ: टिप्पणी 2, *जिन्हें तूने मुझे दिया,* पृष्ठ 178

5. यीशु ने शिष्यों को विरोधी संसार में सुसमाचार प्रचार करने के लिए छोड़ते समय, उनके लिए क्या प्रार्थना की (17:11-12, 14-16)?

टिप्पणी: यहूदा "विनाश का पुत्र" था, जो इसलिए नाश हुआ क्योंकि उसने यीशु को धोखे से पकड़वा देने का चुनाव किया था (देखिए: भजन संहिता 41:9)।

संदर्भ: टिप्पणी 3, दुष्ट, पृष्ठ 178 टिप्पणी 4, *संसार*, पृष्ठ 179 टिप्पणी 6, *अपने नाम की सामर्थ्य से,* पृष्ठ 179

6. यीशु की बातें आगे शिष्यों के जीवन में क्या उत्पन्न करनेवाली थीं (17:13)?

7. **क.** यीशु मसीह के अनुयायी, अपनी संसार में की जानेवाली सेवकाई के दौरान, कैसे पवित्र (सेवा के लिए अलग और धार्मिक चरित्र में विकसित) किए जानेवाले थे (17:17-18)?

ख. यीशु ने स्वय अपने आप को भी किस काम के लिए समर्पित किया (17:19)?

पढ़िए यूहन्ना 17:20-26

8. **क.** यीशु ने अपनी प्रार्थनाओं में किसे सम्मिलित किया (17:20)?

ख. यीशु की सारे विश्वासियों के लिए प्राथमिक (मुख्य) इच्छा क्या और क्यों थी (17:21-23)?

संदर्भः टिप्पणी 5, *एकता,* या *एकत्व,* पृष्ठ 179

9. **क.** यीशु ने उन सब के लिए जो उस पर विश्वास करनेवाले थे क्या इच्छा प्रगट की (17:24)?

ख. यीशु ने अपनी प्रार्थना को समाप्त करते समय क्या करने की प्रतिज्ञा की, और क्यों (17:26)?

बुनियाद पर बनाना

प्रेम के बन्धन

तृप्ति की तलाश में हमारी सब से गम्भीर आवश्यकता है पहचान - एक स्थान जहां से हम है, उन लोगों के बीच जो हमें निःशर्त प्रेम करते हैं। यीशु ने अपनी मृत्यु के एक रात पहले, अपनी महायाजकीय प्रार्थना में इसी आवश्यकता को संबोधित किया। इस प्रार्थना में, उसने परमेश्वर की इच्छा को प्रगट किया कि हम सर्वप्रथम उसके साथ प्रेम के बन्धन का, और उसके अनंत परिवार में स्थान पाने का अनुभव करें।

परमेश्वर के साथ का यह एकत्व, और उसके वचन के द्वारा पवित्र किया जाना, दूसरे विश्वासियों के साथ एकता और प्रेमपूर्ण संबंध उत्पन्न करता है। तब विश्वासियों के बीच का प्रेम और एकता अविश्वासी संसार के सामने मसीह के सत्य की गवाही देते हैं, और बहुतेरे परमेश्वर के प्रेम के प्रकाश की ओर खींचे जाते हैं (17:23)।

परन्तु, विश्वासियों को व्यक्तिगत रीति से परिपूर्ण करनेवाले, और मसीह की देह का निर्माण करनेवाले इस प्रेम के बन्धन और एकता को नष्ट करने के काम में बलवन्त शक्तियां लगी रहती हैं। यीशु ने अपने निवेदन में, उस पर विश्वास करनेवालों के हित में, इन शक्तियों के विरुद्ध प्रार्थना की। प्रथम, उसने उस दुष्ट से उनकी सुरक्षा होने के लिए प्रार्थना की (17:15), जो विश्वास एवं स्वस्थ संबंध के सारे विनाश के पीछे होता है (इफिसियों 6:11-12)। स्वार्थ एवं घमण्ड भी विश्वासियों के बीच की एकता को नष्ट कर सकते हैं, अत: यीशु ने प्रार्थना की कि उसके लोग पिता के प्रेम से भरे जाएं, और यीशु की भीतरी उपस्थिति के द्वारा एक हो जाएं।

परमेश्वर के परिवार की एकता, जिसके लिए यीशु ने प्रार्थना की, प्रेम के सब से पवित्र बन्धन को उत्पन्न कर सकती है, क्योंकि वह एक-एक विश्वासियों में पाए जानेवाले परमेश्वर के प्रेम के द्वारा संभली रहती है। यह प्रेम निस्वार्थ और सर्वदा मन में दूसरों के सर्वोच्च भलाई की कामना लिए हुए विश्वासी के द्वारा उस पहचान की अनुभूति तथा उस नि:शर्त प्रेम का अदान-प्रदान होने देता है जिससे मानवीय लालसा की तृप्ति होती है। आइए जब हम अपने *तृप्ति की तलाश* के अध्ययन को आगे बढ़ाते हैं, प्रेम के उन बन्धनों को देखें जिन्हें परमेश्वर ने अपने परिवार के संतानों की तृप्ति के लिए ठहराए हैं।

1. मसीह में एक विश्वासी होने के नाते हमारी पहचान, या वह स्थान जहां से हम हैं, कहां है?
   यूहन्ना 1:12

   इफिसियों 2:19-22

   1 तीमुथियुस 3:15

2. **क.** परमेश्वर के परिवार को पृथ्वी पर मसीह की "देह" भी कहा गया है, जिसका सिर मसीह है, और विश्वासी उसके अलग-अलग अंग हैं (तुलना कीजिए: इफिसियों 4:4-6, 15-16; 5:30)। स्वार्थी चुनाव देह में फूट डाल सकते हैं और आवश्यकताओं की तृप्ति को रोक सकते हैं। किन

विनाशक मनोवृत्तियों और क्रियाओं से दूर रहना अवश्य है?
1 कुरिन्थियों 3:3

भजन संहिता 101:5 (याकूब 3:14)

नीतिवचन 20:19

ख. वे कौनसी अन्य शक्तियां हैं जो मसीह की देह की उस एकता को नष्ट कर सकती हैं जिसके लिए यीशु ने प्रार्थना की थी?
मत्ती 7:1, 3

फिलिप्पियों 2:21

1 तीमुथियुस 6:10

तीतुस 1:16

ग. मसीह की देह में यदि ऐसा व्यवहार हो तो वह अविश्वासी संसार में क्या प्रभाव उत्पन्न करता है?
रोमियो 2:23-24 (2 पतरस 2:2)

घ. जब हम स्वयं को दूसरे विश्वासियों के साथ परस्पर विरोध में पाते हैं, तब हमें क्या स्मरण रखना अवश्य है?
इफिसियों 6:12

3. क. ऐसी मनोवृत्तियों और व्यवहारों की सूची बनाइए जिनका चुनाव हम कर सकते है कि वे मसीह की देह का निर्माण करेगी और उसमें हमें तृप्ति प्राप्त होने देगी।
रोमियो 12:9-19

कुलुस्सियों 3:16-17

इफिसियों 4:1-3

इफिसियों 4:15-16

ख. परमेश्वर का आत्मा हमारे भीतर वह कौनसी बात उत्पन्न करता है जो मसीह के देह का निमार्ण करती है, और हमें उसमें तृप्ति प्राप्त होने देती है?
1 कुरिन्थियों 13:4-8क

गलातियों 5:22-23

सारांश

4. यीशु ने अपनी प्रार्थना में प्रार्थना की कि हमें संसार के सारे स्थानों के सारे विश्वासियों के लिए प्रेम का अनुभव हो। इसके लिए क्या आवश्यक है?

5. मसीह की देह अर्थात् कलीसिया में एकता का निर्माण करने के लिए आप किन प्रवृत्तियों से बचना चाहते हैं?

6. आप, आज कलीसिया में किसे सब से बड़ी विनाशक शक्तियां मानते हैं? इन से बचने के लिए आप अपने जीवन में क्या कर सकते हैं?

7. आपने मसीह की देह में किस तृप्ति का अनुभव किया है? आप दूसरों को क्या देना चाहते हैं?

8. **क.** यीशु मसीह किस बात को कलीसिया की पृथ्वी पर की श्रेष्ठ विशेषता के रूप में चाहता है?

ख. उसके परिणाम-स्वरूप आप क्या अनुभव करेंगे?

ग. परमेश्वर, कलीसिया की संसार के समक्ष संयुक्त गवाही के द्वारा क्या चाहता है?

पाठ २० टिप्पणियाँ

1. *परमेश्वर का उद्धार का साधन* । देखिए: टिप्पणी 2, *परमेश्वर का मेमना,* पृष्ठ 21

2. *जिन्हें तूने ... मुझे दिया* (17:6, 9, 24)। अधिकांश टीकाकार सहमत होते हैं कि यह वाक्य पूर्वनियति की बात नहीं कहता है। बारक्ले ने लिखा, "इस का अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर ने कुछ लोगों को पहले से निश्चित कर रखा है कि वे शिष्य बनें, और कुछ ऐसे हों जो शिष्यत्व का इंकार करें। उसे इस प्रकार सोचिए - एक पिता अपने पुत्र के लिए बड़े सपने देखता है; वह उसके भविष्य की एक योजना बनाता है, परन्तु वह पुत्र उस भविष्य का इनकार कर सकता है, और अपना मार्ग ले सकता है। यदि हम किसी से प्रेम करते हैं, तो हम सर्वदा उसके भविष्य का सपना देखते रहते हैं और बड़ी योजना बनाते रहते हैं; परन्तु उस सपने और योजना को विफल किया जा सकता है। परमेश्वर के पास हर एक मनुष्य के लिए अपनी योजना, अपना सपना, अपना भविष्य है; और हमारी बहुत बड़ी जिम्मेवारी यह है कि हम उसे स्वीकार या अस्वीकार कर सकते हैं। परमेश्वर के द्वारा यीशु को दिए जाने का अर्थ यह है कि परमेश्वर का आत्मा हमारे हृदय को प्रेरणा देता है कि हम यीशु के आग्रह को उत्तर दें।" विलियम बारक्ले, द *गॉस्पल ऑफ जॉन,* वोल्युम 2, पृष्ठ 212-213.

3. दुष्ट (17:15) या शैतान । "सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा हुआ है जो उस पर एक हड़पनेवाले की नाईं प्रभुता करता है (1 यूहन्ना 5:19; तुलना कीजिए: 1 यूहन्ना 2:13 और आगे; 3:12; 5:18); यीशु प्रार्थना करता है कि वे उससे बचाए जाएं, ठीक वैसे ही जैसे पहले उसने उन्हें इस प्रकार के बचाव के लिए प्रार्थना करना सिखाया था (मत्ती 6:13)।" एफ. एफ. ब्रुस, द *गॉस्पल ऑफ जॉन,* पृष्ठ 333.

   "यह अनुभव करना एक ढाढ़स दिलानेवाली बात है कि परमेश्वर एक पहरेदार है, जो हमारे जीवन की रखवाली करता है, ताकि दुष्ट के हमलों से हमारी रक्षा करे। हम इतना बार-बार गिरते हैं, इस सच्चाई का कारण यह है कि हम जीवन का सामना अपनी सामर्थ्य में करने का प्रयास करते हैं, और सहायता लेना और

अपने रक्षा करनेवाले परमेश्वर की उपस्थिति का स्मरण रखना भूल जाते हैं।" विलियम बारक्ले, द *गॉस्पल ऑफ जॉन,* वोल्युम 2, पृष्ठ 216

टिप्पणी 5 *शैतान* भी देखिए, पृष्ठ 68

4. *संसार* (17:9, 14-17, 18, 21)। यूहन्ना "संसार" शब्द का प्रयोग उस मानवीय समाज के लिए करता है जो स्वयं का संघटन परमेश्वर के बिना करता है। यीशु ने प्रार्थना की कि उसके शिष्य समर्थ बनाये जाएं, ताकि संसार में जाकर परमेश्वर को प्रगट करें, और संसार को उसके लिए वापस जीत लें। (17:21, 23)।

5. *एकता या एकत्व* (17:21-23)। "यीशु की अपने शिष्यों के लिए बड़ी इच्छा यह थी कि वे एक हो जाएं। वह चाहता था कि वे एक हो जाएं ताकि परमेश्वर के प्रेम की सच्चाई के प्रभावी गवाह ठहर सकें। क्या आप मसीह की देह अर्थात् कलीसिया को एक बनाने में सहायता कर रहे हैं? आप दूसरे मसीहियों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं, गपशप से दूर रह सकते हैं, दूसरों की उन्नति कर सकते हैं, नम्रता से एकसाथ काम कर सकते हैं, अपना समय और पैसा दे सकते हैं, मसीह को ऊंचा कर सकते हैं, विभाजन करनेवाले मुद्दों पर बहस करके बहक जाने से इंकार कर सकते हैं।" *लाइफ एप्लिकेशन बाइबल, एनआइव्ही,* पृष्ठ 1917.

6. *अपने नाम की सामर्थ्य से* (17:11)। "पुराना नियम में परमेश्वर का नाम न मात्र उसके चरित्र को (जैसे कि वचन 17:6 में), परन्तु उसकी सामर्थ्य को भी दर्शाता है (तुलना कीजिए: भजन संहिता 20:1; भजन संहिता 54:1; नीतिवचन 18:10)। यीशु ने स्वयं उनकी रक्षा, पिता के द्वारा उसे दी गई सामर्थ्य के द्वारा, उसे सौंपे गए एक खजाने के रूप में की थी।" एफ. एफ. ब्रुस, द *गॉस्पल ऑफ जॉन,* पृष्ठ 332.

--0--

पाठ २१ पकड़ा जाना, मुक़द्दमा, और क्रूसीकरण

यूहन्ना 18-19

यूहन्ना 17 की यीशु की प्रार्थना के बाद, उसने और उसके शिष्यों ने उस घर को छोड़ दिया जहां उन्होंने फसह का पर्व मनाया था। वे नगर के बाहर उस स्थान पर गए जहां वे जैतून पर्वत पर गतसमनी बाग में प्राय: मिला करते थे। इसलिए कि वह स्थान जाना-पहचाना था, यहूदा रोमी पलटन और यहूदी अधिकारियों को सीधे यीशु को पकड़ने के लिए ले आया। वे मशालें और हथियार लेकर आए, कदाचित् उन्होंने अपेक्षा की थी कि यीशु की खोज पेड़ों और गुफाओं में करनी होगी। ऐसा न होकर, यीशु ने स्वयं उनके सामने आकर कहा, "किसे ढूंढ़ते हो?" जब उन्होंने उसको उत्तर दिया, "यीशु नासरी को," तब यीशु ने उनसे कहा, "मैं ही हूँ।" उसके ऐसा कहते ही वह सारा समूह पीछे हट गया और भूमि पर गिर पड़ा।[1] निश्चय ही यहूदा, जो उनकी अगुवाई कर रहा था, शिष्यों को दिखाई दिया, जो सबकुछ देखकर स्तब्ध थे।

यीशु ने, यह दोहराते हुए कि वह वही था जिसे वे खोज रहे थे, उनसे विनती की कि वे उसे ले जाएं और शिष्यों को जाने दें। परन्तु पतरस ने अपनी तलवार निकाली और वार किया, और महायाजक के दास का कान काट दिया। यीशु ने उस मनुष्य के कान को छुआ और उसे चंगा किया (लूका 22:51) और पतरस को आज्ञा दी कि अपनी तलवार वापस रखे। यीशु ने यह कहते हुए कि "जो कटोरा पिता ने मुझे दिया है, क्या मैं उसे न पीऊं?," उग्र परिस्थिति को शान्त किया।

तब महायाजक के अधिकारियों ने यीशु को बान्धा और उसे हन्ना[2] के पास ले गए। वह भूतपूर्व महायाजक था, और वर्तमान महायाजक काइफा का ससुर था। हन्ना ने, यीशु पर ईश-निन्दा का दोष लगाने के लिए प्रमाण प्राप्त करने के प्रयास में, यीशु से प्रश्न किए। यहूदी व्यवस्था की मांग थी कि अपराधी को दोषी ठहराने के लिए गवाह उसके विरुद्ध प्रमाण प्रस्तुत करें, अत: यीशु ने हन्ना से प्रश्न किया कि उसने यीशु के बजाय उन गवाहों से क्यों नहीं पूछा जिन्होंने उसे उन बातों को कहते सुना था। इस उत्तर के लिए, महायाजक के एक अधिकारी ने यीशु को डांटा और उसके मुंह पर थप्पड मारा। हन्ना ने यीशु को काइफा के पास भेजा, जिसने पहले ही निश्चय कर लिया था कि यीशु को मरना चाहिए (18:14)।

इसी बीच, पतरस और दूसरा शिष्य, संभवत: यूहन्ना,[3] यीशु के पीछे-पीछे वहां तक

पहुँच गए थे। वह दूसरा शिष्य महायाजक के घर पर जाना-पहचाना था, और उसे भीतर जाने दिया गया, उसने पतरस के भी प्रवेश को संभव बनाया। वहां, पतरस को यीशु का साथी होने के विषय में पहले एक दासी और द्वारपाल के द्वारा, फिर आग के पास खड़े लोगों के द्वारा, और अंत में महायाजक के एक सेवक के द्वारा पूछा गया, जो उस व्यक्ति का संबंधी था जिसका कान पतरस ने बाग में काटा था। पतरस ने, प्रत्येक प्रश्न पर बल देकर यीशु को जानने से इंकार किया। तब मुर्ग नें बांग दी, और यीशु ने पतरस के इंकार के विषय में की भविष्यवाणी पूरी हुई (13:37-38)।

रात में यहूदी सभाओं की कार्यवाहियों के समय, (तुलना कीजिए: लूका 22:63-71), यह निश्चय कर लिया गया था कि यीशु को ईश-निन्दा के कारण प्राणदण्ड मिलना चाहिए। परन्तु रोमी अधिकारियों के सामने, यहूदी अगुवे यीशु पर देशद्रोह का दोष लगानेवाले थे, ताकि उसके लिए मृत्युदण्ड प्राप्त करें। रोमी सत्ता के अन्तर्गत, यहूदियों को मृत्युदण्ड देने का कोई अधिकार नहीं था; अन्यथा वे पत्थरवाह करके यीशु को मार डाले होते। यूहन्ना लिखता है कि यीशु ने भविष्यवाणी की थी कि उसकी मृत्यु क्रूस पर चढ़ाए जाने के द्वारा होगी (तुलना कीजिए: 18:32; मत्ती 20:18-19)।

यहूदी अगुवे, अपनी जांच को भोर के पहले घंटों में ही समाप्त करके, यीशु को रोमी गर्वनर पिलातुस के पास उसके किले में ले गए। जब वे पिलातुस के पास पहुँचे तब उनके पास यीशु के विरुद्ध कुछ लिखित दोषपत्र भी नहीं था। संभवत: वे सोचते थे कि पिलातुस उनके शब्दों पर भरोसा करेगा। इसलिए कि वह मामला इतने अनिश्चित ढंग से प्रस्तुत किया गया था, आरंभ में पीलातुस यह भी निर्धारित नहीं कर पाया था कि उसे सुनने में उसका समय देना महत्त्वपूर्ण था भी या नहीं (18:31)। परन्तु जब उन्होंने यीशु पर उस राष्ट्र का राजा होने का दावा करने का आरोप लगाया, (तुलना कीजिए: लूका 23:2-3), जिससे विद्रोही उद्देश्य का संकेत मिलता था, पिलातुस यीशु से प्रश्न करने के लिए उसे अलग ले गया।

पिलातुस ने उससे पूछा, "क्या *तू* यहूदियों का राजा है?" उसका "तू" पर बल देना यही सूचित कर रहा था कि पिलातुस की दृष्टि में एक कैदी कुछ भी हो सकता था परन्तु राजा नहीं। यीशु ने उत्तर दिया, "मेरा राज्य इस जगत का नहीं, यदि मेरा राज्य इस जगत का होता, तो मेरे सेवक लड़ते कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता। परन्तु अब मेरा राज्य यहां का नहीं।"

यीशु ने स्वयं राजा होने की बात को स्वीकार कर लिया था, तौभी पिलातुस ने उस मनुष्य को हानिकारक नहीं पाया, क्योंकि उसके पास कोई राजनीतिक कार्यक्रम नहीं था। वह यहूदियों के पास लौटकर गया, और उसने यीशु को निर्दोष घोषित किया। और यह सुझाव दिया कि उस वार्षिक प्रथा के अनुसार, जिसमें फसह के पर्व पर

किसी एक कैदी को छोड़ दिया जाता था, वह यीशु को छोड़ता है। परन्तु इसके उत्तर में, यहूदियों ने यीशु के नहीं परन्तु बरअब्बा[4] नामक अपराधी के छुटकारे की मांग की।

यहूदियों के क्रोध को शान्त करने के लिए, पिलातुस ने यीशु को कोड़े लगवाए[5] उसके बाद सिपाहियों ने यीशु की ठट्ठा करते हुए उसे कांटों का मुकुट और बैंजनी वस्त्र पहनाया, और उसके मुंह पर बार-बार थप्पड़ भी मारे। इस बर्बर व्यवहार के बाद, पिलातुस ने यीशु को यहूदियों के सामने लाया और उसे निर्दोष घोषित किया। तुरन्त महायाजक और उनके अधिकारी चिल्लाने लगे "उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर!" उन्होंने आग्रह किया कि इसलिए कि यीशु ने स्वयं परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया था, पिलातुस को उन्हें उनकी व्यवस्था के अनुसार उस ईश-निन्दा के लिए यीशु को क्रूस पर चढ़ाने की अनुमति दे देनी चाहिए।

इस नयी जानकारी के साथ, पिलातुस अंधविश्वास से परेशान हो गया, इस विचार से कि इस मामले में परमेश्वर भी सम्मिलित था। वह यीशु को किले के भीतर ले गया और पूछने लगा, "तू कहां का है?" जब यीशु ने कोई उत्तर नहीं दिया, पिलातुस ने यीशु को स्मरण दिलाया कि उसे छोड़ने का या क्रूस पर चढ़ाने का अधिकार उसके पास है। यीशु ने उत्तर दिया, "यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता।" उसने पिलातुस से कहा कि जिन्होंने उसे गर्वनर के पास पहुँचाया, वे अधिक दोषी थे।

पिलातुस, संभवत:, इस भय से प्रेरित होकर कि उसके सामने कोई विलक्षण व्यक्ति खड़ा था, और इसके साथ ही इस दृढ़ धारणा के कारण कि यीशु निर्दोष था, यीशु को छोड़ देने के नये प्रयास करने लगा। परन्तु यहूदी चिल्लाते ही रहे, और पिलातुस पर आरोप लगाया कि यदि वह यीशु को छोड़ देता है तो कैसर के प्रति राजद्रोही ठहरेगा। अंतत:, पिलातुस निर्णय लेने के लिए न्यायासन पर बैठ गया और उसने पूछा, "क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊं?" महायाजकों ने, जो यीशु को मरता देखने के लिए व्याकुल थे, ऐसा विस्मयकारी उत्तर दिया जो एक यहूदी के लिए ईश-निन्दा था: "कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं।"

अत: पिलातुस मृत्युदण्ड के लिए मान गया, क्रूस पर लगाने के लिए एक सूचनापट्ट देते हुए जिस पर अरामी, लतीनी और यूनानी भाषा में लिखा था: **"यीशु नासरी यहूदियों का राजा।"** महायाजकों ने उसका विरोध किया, परन्तु पिलातुस ने उत्तर दिया, "मैंने जो लिख दिया, वह लिख दिया।"

सिपाही, यीशु को नगर के बाहर गुलगुता नामक स्थान पर ले गए, जहां वह दो और मनुष्यों के बीच, सुबह 9 बजे, क्रूस पर चढ़ाया गया (मरकुस 15:25)। तीन घंटे

बाद, दोपहर को, जब यरूशलेम में फसह के बलिदान तैयार किए जा रहे थे, परमेश्वर का मेमना[7] तब भी क्रूस पर लटका हुआ था। कुछ दर्शक, जैसे कि सिपाही और धार्मिक अगुवे, उपहास कर रहे थे, (तुलना कीजिए: मत्ती 27:41-44; लूका 23:35-37) जबकि अन्य, जैसे कि उसकी माता, मौसी, कुछ और स्त्रियां, और प्रेरित यूहन्ना, शोक से भरे हुए क्रूस के पास खड़े थे। उन पर दृष्टि करते हुए, यीशु ने अपनी माता और यूहन्ना को एक-दूसरे की देखभाल करने को कहा, और मरियम उस समय के बाद से यूहन्ना के घर में रही।

दोपहर और तीन बजे के बीच, सारे देश में अंधेरा छाया रहा (मत्ती 27:45; मरकुस 15:33; लूका 23:44-45)। तब चार से छः घंटों तक क्रूस पर रहने के बाद, यीशु ने जान लिया कि उसकी मृत्यु का समय आ गया था। उसने पानी मांगा, और सिपाहियों से सिरका पाया। तत्पश्चात्, "पूरा हुआ" इन शब्दों के साथ यीशु ने सिर झुकाया, और अपने प्राण त्याग दिए।

यहूदी अगुवों ने आग्रह किया था कि विशेष फसह का पर्व आरंभ होने से पहले शवों को नीचे उतारा जाए, इसलिए सिपाहियों ने अन्य दो मनुष्यों की टांगे तोड़ दीं, ताकि उनकी मृत्यु शीघ्र हो जाए। परन्तु जब वे यीशु के पास आए, और पाया कि वह पहले ही मर चुका था, तब उन्होंने उसकी पसली में भाला मारकर निश्चित कर लिया कि उसकी मृत्यु हो चुकी थी।

उसके बाद, अरमतियाह के यूसुफ और निकुदेमुस[8] ने पिलातुस से यीशु की देह को मांग लिया, और उसे पास की एक कब्र में दफना दिया।

पढ़िए यूहन्ना 18:1-11

1. **क.** यीशु को पकड़ने के लिए यहूदा के साथ कौन-कौन गए थे (18:3)?

   ख. यह बात क्यों असामान्य थी?

2. **क.** यीशु ने किस प्रकार अपने पकड़वाए जाने पर नियंत्रण बनाए रखा (18:4-11)?

ख. यीशु ने जैसे ही, "मै ही हूँ" कहा, उसके पकड़नेवालों की प्रतिक्रिया क्या थी (18:6)?

संदर्भः टिप्पणी 1, *भूमि पर गिर गए,* पृष्ठ 188

पढ़िए यूहन्ना 18:12-27

3. यीशु की जांच को फसह के सब्त के पहले समाप्त करने के लिए यहूदी अगुवों को रात भर काम करना और भोर को ही पिलातुस के पास जाना पड़ा था। उनकी यहूदी व्यवस्था के संबंध में *पवित्र* बने रहने की धुन अत्यधिक व्यंगपूर्ण क्यों है?

4. क. पकड़नेवालों ने यीशु के साथ सर्वप्रथम क्या किया (18:12-13, 19)?
संदर्भः टिप्पणी 2, *हन्ना,* पृष्ठ 188

ख. यहूदी व्यवस्था की मांग थी कि अपराधी को दोषी ठहराने के लिए गवाह उसके विरुद्ध प्रमाण प्रस्तुत करें। इसे देखते हुए, यीशु का हन्ना के प्रश्न को, और जिसने उसे थप्पड़ मारा था उस अधिकारी को दिया गया उत्तर कैसा था (18:20-23)?

ग. हन्ना ने यीशु के साथ क्या किया (18:24)?

5. जबकि, पतरस के पास साहस था कि बाग में यीशु का बचाव करे, और उसके बन्दी बनाए जाने के बाद उसके पीछे-पीछे जाए, उसने महायाजक के आंगन में प्रवेश करने पर क्या किया (देखिएः 18:17-18, 25-27; मरकुस 14:71-72)?

संदर्भः टिप्पणी 3, *यूहन्ना पीछे-पीछे गया,* पृष्ठ 189

पढ़िए यूहन्ना 18:28-40

6. यहूदी पिलातुस के किले के भीतर क्यों नहीं गए (18:28)?

7. इस में संदेह नहीं कि पिलातुस क्रुद्ध हुआ होगा, कि इतनी भोर को उसे एक ऐसे मामले का न्याय करने के लिए जगाया गया था जिसका कोई लिखित दोषपत्र भी नहीं था। वह क्या कारण था कि पिलातुस ने उस मामले को सुना (18:29-33; लूका 23:20)?

8. पिलातुस से यह पूछने के बाद की उसका प्रश्न रोमी दृष्टिकोण से था या यहूदी, यीशु ने उसके प्रश्न का उत्तर कैसे दिया (18:36-37)?

टिप्पणी: *क्या तू यह बात अपनी ओर से कहता है . . .?* (18:34)। यदि पिलातुस का प्रश्न (वचन 33) रोमी दृष्टिकोण से था, तो उसका अर्थ था: "क्या तू विद्रोही है?" यदि वह प्रश्न यहूदियों से आया था, तो उसका अर्थ था: "क्या तू मसीह-संबंधित राजा होने का दावा कर रहा है?"

9. **क.** पिलातुस ने कैसे उत्तर दिया (18:38)?

ख. जब पिलातुस ने कहा कि फसह के पर्व पर दी जानेवाली राजक्षमा की परम्परा के अन्तर्गत वह यीशु को छोड़ देगा, यहूदियों ने कैसे प्रत्युत्तर दिया (18:39-40)?

संदर्भ: टिप्पणी 4, बरअब्बा, पृष्ठ 189

पढ़िए यूहन्ना 19:1-16

10. **क.** पिलातुस ने यहूदियों के क्रोध को शांत करने का प्रयास कैसे किया (19:1-5)?

संदर्भः टिप्पणी 5, *कोड़े मारना,* पृष्ठ 189

ख. पिलातुस का यहूदियों के साथ किस बात पर मतभेद था (19:6)?

11. क. किस कारण से पिलातुस ने यीशु से फिर प्रश्न किया (19:7-9)?

ख. यीशु ने, पिलातुस के तर्क के उत्तर में क्या बता दिया (19:10-11)?

12. क. जब पिलातुस ने यीशु को छुड़ाने का प्रयास किया, यहूदियों ने मृत्युदण्ड देने के लिए उस पर कैसे दबाव डाला (19:12-15क)?

संदर्भः टिप्पणी 6, *छठवां घंटा,* पृष्ठ 190

ख. पिलातुस के अंतिम प्रश्न, "क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊं?," के उत्तर में महायाजक ने कौनसी विस्मयकारी बात कह दी (19:15ख)?

पढ़िए यूहन्ना 19:17-27

13. परमेश्वर ने, पिलातुस के माध्यम से, सब के लिए यीशु का सही-सही वर्णन कैसे कर दिया (19:19-22)?

14. भजन संहिता 22:18 की भविष्यवाणी क्रूस पर कैसे पूरी हुई (19:23-24)?

15. यीशु ने, उसका जेष्ठ पुत्र होने के नाते क्रूस पर से अपनी माता की चिंता कैसे की (19:25-27)?

पढ़िए यूहन्ना 19:28-42

16. यीशु ने, क्रूस पर कई घंटे रहने के बाद, उद्धार के अपने कार्य को कैसे पूर्ण किया (19:28-30)?

17. क. यहूदी क्यों चाहते थे कि अंधेरा होने के पहले शवों को क्रूस पर से उतार लिया जाए (19:31)?

ख. सिपाहियों ने कैसे सुनिश्चित कर लिया कि यीशु मर चुका था (19:32-34)?

टिप्पणी: हृदयावरण (हृदय के बाहर चारों ओर की झिल्ली) एवं हृदय को भाले से छेदा जाने पर लहू और पानी निकलेगा। द *एनआइव्ही स्टडि बाइबल,* पृष्ठ 1635.

ग. लेखक, यीशु की मृत्यु के विषय में क्या बताने के लिए रुक गया (19:35-37)?

टिप्पणी: *जिस ने यह देखा* वह या तो लेखक स्वयं था, जैसे की बहुतेरे मानते हैं, या कोई ऐसा जिसे वह पूर्णत: विश्वसनीय मानता था। *पवित्रशास्त्र की यह बात पूरी हो* (19:36-37)। परमेश्वर ने, मसीह की मृत्यु में, भजन संहिता 34:20 और जकर्याह 12:10 की भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए, अपने प्रभुत्व का उपयोग किया।

18. किसने निर्भीकता के साथ पिलातुस से यीशु के शव को मांग लिया, और उन्होंने क्या किया (19:38-42; मत्ती 27:59-60)?

संदर्भ: टिप्पणी 8, *अरमतियाह का यूसुफ और निकुदेमुस,* पृष्ठ 190

सारांश

19. क. ये अध्याय, मनुष्य के स्वभाव के विषय में आपको क्या सिखाते हैं?

ख. वे, धार्मिक पाखण्ड के विषय में क्या प्रगट करते हैं?

20. ये अध्याय, पापी मनुष्य के होते हुए परमेश्वर के चरित्र के विषय में क्या प्रगट करते हैं?

21. क. ये वचन, क्रूस के और आपके विषय में क्या प्रगट करते हैं?
यूहन्ना 3:16

रोमियों 5:8

यशायाह 53:3-12

ख. परमेश्वर के द्वारा आपके लिए दिए गए बलिदान के प्रति आपका प्रत्युत्तर क्या है?

पाठ २१ टिप्पणियाँ

1. *भूमि पर गिर पर गए* (18:6)। "वे, एक दीन देहाती मनुष्य को पकड़ने आए थे और उसके स्थान पर उनकी भेंट, धुँधली रोशनी में, एक तेजस्वी पुरुष से हुई।" द *एनआइव्ही स्टडी बाइबल*, पृष्ठ 1631

"वे लोग, यीशु के प्रश्न के साहस से चौंक गए होंगे, या फिर "मैं ही हूँ" इन शब्दों के कारण, जो उसके ईश्वरत्व की घोषणा थी (निर्गमन 3:14)। या कदाचित् वे उसके स्पष्ट सामर्थ्य और प्रभुता के कारण पराजित हो गए थे।" *लाइफ एप्लिकेशन बाइबल*, पृष्ठ 1918

"*मैं ही* हूँ," (ग्रीक में *ego eimi*) (18:5, 6) इस घोषणा को सुननेवाले यहूदी इसे सामर्थ्य और ईश्वरत्व की घोषणा समझ सकते थे, क्योंकि वह इस्राएल के परमेश्वर ने निर्गमन 3:14 में दी अपनी-पहचान "मैं हूँ" के बराबर थी। एफ. एफ. ब्रुस, द *गॉस्पल ऑफ जॉन,* पृष्ठ 341

2. क. *हन्ना* (18:13-24)। *हन्ना* इसवी सन् 6 से 15 तक महायाजक रहा था। उसके चार पुत्र भी महायाजक के पद पर रह चुके थे, और काइफा उसका दामाद था। महायाजक का पद जीवन भर के लिए होता था, परन्तु पलस्तीन देश में रोमी गर्वनरों के आने के साथ ही, राजनीतिक छल-कपट और रोमी गर्वनरों के साथ के घनिष्ठ सहयोग का लाभ उठाते हुए महायाजक का पद बहुधा बदलता ही गया था। हन्ना का परिवार अत्यधिक

धनी था, और उन्होंने षड्यन्त्र करके, और घूस देकर, उस पद को पा लिया था। इस सबके पीछे हन्ना की ही सामर्थ्य काम कर रही थी। यह माना जाता है कि उसके परिवार का धन मन्दिर में की जानेवाली लूट-खसोट से आता था, क्योंकि मन्दिर की दुकानें जिनमें बलिदान के पक्षी और पशु बेचे जाते थे 'हन्ना का बाजार' कहलाते थे, जिनका यीशु ने, यूहन्ना के दूसरे अध्याय में, विरोध किया था।

2 **ख.** इस *लूट-खसोट* की रक्षा करने के लिए इस सच्चाई का सहारा लिया जाता था कि बलि चढ़ाए जानेवाले सारे बलिपशु निर्दोष होने चाहिए थे। वे वैसे हैं या नहीं इसका निर्णय मन्दिर के निरीक्षक करते थे, और मन्दिर के बाहर से खरीदे गए बलिपशुओं में हमेशा दोष निकाला जाता था। लोग, अस्वीकार होकर लज्जित होने से बचने के लिए, मन्दिर में ही अपने बलिपशु खरीदते थे, जहां कबूतर की जोड़ी का मूल्य 75 पैसे होता था जो बाहर 4 पैसे था। *विलियम बारक्ले, द गॉस्पल ऑफ जॉन,* पृष्ठ 226

3. *यूहन्ना पीछे-पीछे गया* । यूहन्ना ने लिखा, कि पतरस और "एक और चेला," (18:15-16) यीशु के पीछे-पीछे आंगन में गए। जबकि यह अनिश्चित रह जाता है कि वह अज्ञात शिष्य यूहन्ना या यरूशलेम में रहनेवाला कोई अन्य शिष्य था, बहुतेरे विश्वास करते हैं कि वह यूहन्ना ही था। यह इसलिए, क्योंकि यूहन्ना ने इस सुसमाचार में अपने विषय में कुछ भी कहते समय कभी अपने नाम का उल्लेख नहीं किया (उदा. 13:23)। इससे इस बात का भी स्पष्टीकरण मिलता है कि यूहन्ना क्यों महायाजक के आंगन में होनेवाली कार्यवाही का इतना विस्तृत वर्णन करता है।

4. *बरअब्बा* । "बरअब्बा, रोम के विरुद्ध एक विद्रोही था, और यद्यपि उसने हत्या की थी, वह संभवत: यहूदियों के बीच एक नायक माना जाता था। यहूदियों को रोमियों द्वारा शासित होने और तुच्छ सरकार को कर देने से घृणा थी। बरअब्बा, जिसने विद्रोह का नेतृत्व किया था और विफल हुआ था, उस यीशु के स्थान पर छोड़ा गया जो एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो इस्राएल की सच्ची सहायता कर सकता था।" *लाइफ एप्लिकेशन बाइबल,* पृष्ठ 1921

5. "*कोड़े मारना* ऐसा होता था जिससे यीशु की मृत्यु हो सकती थी। सामान्य प्रथा यह थी कि तीहरे कांटेदार कोड़े से मारने के पहले, अपराधी के शरीर का ऊपरी भाग नग्न कर दिया जाता था, और उसके हाथ खंभे से बांध दिए जाते थे। अपराध की गंभीरता के अनुसार कोड़ों की सख्या ठहराई जाती थी। यहूदी व्यवस्था के अन्तर्गत 40 कोड़े मारने की अनुमति थी (व्यवस्थाविवरण 25:3)।

यीशु ने, कोड़े खाने के बाद और दूसरी यातनाओं को भी सहा, जिसका वर्णन यहां और दूसरे सुसमाचारों में भी मिलता है (मत्ती 27; मरकुस 15; लूका 23)।" *लाइफ एप्लिकेशन बाइबल,* पृष्ठ 1922

रोमी कानून के अनुसार अपराध के लिए दण्ड सुनाने के पहले कोड़े मारना गैर-कानूनी था, और पिलातुस ने यीशु को निर्दोष ठहराया था (18:38)।

6. *छठवां घंटा* (19:14)। यूहन्ना में लिखा गया पिलातुस का फैसला, यहूदी समयानुसार, लगभग दोपहर के समय हो गया होगा। तथापि, दूसरे सुसमाचारों में लिखा है कि यीशु को तीसरे पहर, या यहूदी समयानुसार सुबह 9 बजे, क्रूस पर चढ़ाया गया था। इस भिन्नता के लिए एकमात्र संभावित स्पष्टीकरण यही है कि यूहन्ना रोमी समय बता रहा था। इस परिस्थिति में यीशु को पिलातुस के समक्ष प्रस्तुत किए जाने का समय प्रातः 6 बजे रहा होगा, और क्रूसीकरण सुबह 9 बजे हुआ होगा। समय के अन्य हवालों के लिए देखिए: मत्ती 27:45-46, मरकुस 15:33-34; लूका 23:44। द *एनआइव्ही स्टडी बाइबल,* पृष्ठ 1634

7. **संदर्भ:** टिप्पणी 2, *परमेश्वर का मेमना,* पृष्ठ 21

8. *अरमतियाह का यूसुफ और निकुदेमुस* "यीशु के गुप्त अनुयायी थे। वे, यहूदी समाज में उनके पदों के कारण अपनी इस भक्ति को प्रगट करने से डरते थे। यूसुफ एक अगुवा और यहूदी महासभा का आदरणीय सदस्य था। निकुदेमुस भी महासभा का सदस्य था, जो एक रात यीशु से मिलने आया था (3:1), और बाद में उसने अन्य धार्मिक अगुवों के सामने यीशु का बचाव करने का प्रयास किया था (7:50-52)। फिर भी, उन्होंने यीशु के दफनाने की व्यवस्था करने के लिए अपनी प्रतिष्ठा को दांव पर लगा दिया।" *लाइफ एप्लिकेशन बाइबल,* पृष्ठ 1925

--0--

पाठ २२

पुनरुत्थान

यूहन्ना 20

मरियम मगदलीनी, यीशु के लिए अपने प्रेम के कारण, अपने प्रभु की कब्र पर जाने के लिए सब्त के समाप्त होने की प्रतीक्षा बड़ी मुश्किल से कर पाई थी। सप्ताह के पहले दिन वह भोर के पहले ही जाग उठी। वह अंधेरे ही में कब्र पर पहुँची। परन्तु मरियम के लिए भयभीत होने की बात थी, उसने कब्र को खुला और खाली पाया। वह दौड़कर पतरस और यूहन्ना को बताने गई। वे तुरन्त छानबीन करने लौटे। उन्होंने कब्र को खाली पाया, जिसमें शववस्त्र ऐसे पड़े थे जैसे कि शव उनमें से निकल गया था। यह कब्रचोरों का काम नहीं था। यीशु को जी उठना था, जैसी उसने प्रतिज्ञा की थी। परन्तु शिष्य अभी तक पवित्रशास्त्र का वह भाग नहीं समझते थे जिसमें पुनरुत्थान की प्रतिज्ञा की गई थी (तुलना कीजिए: भजन संहिता 16:10, भजन संहिता 110:1, 4; यशायाह 53:11; लूका 18:33)।

पतरस और यूहन्ना वापस लौट जाने के बाद, मरियम कब्र के बाहर रोती हुई रुकी रही। जब उसने पुन: भीतर झांककर देखा, उसे वहां दो स्वर्गदूत बैठे देखाई दिए जहां यीशु का शव रखा गया था। उन्होंने उसके रोने का कारण पूछा। अपने शोक में मरियम ने उत्तर दिया, "वे मेरे प्रभु को उठा ले गए और मैं नहीं जानती कि उसे कहां रखा है।" उसने पीछे फिरकर किसी को वहां खड़े देखा, तौभी उसने उसे तब तक न पहचाना कि वह पुरुष यीशु था जब तक उसने उससे न कहा, "मरियम!" मरियम ने चिल्लाकर कहा, "रब्बूनी!" (अर्थात् हे गुरु)। यीशु ने उससे कहा, "मुझे पकड़े मत रह! परन्तु मेरे भाइयों के पास जाकर उनसे कह दे, कि तूने मुझे देखा है, और मैं शीघ्र अपने पिता के पास वापस जाता हूं।" मरियम शिष्यों को बताने दौड़ पड़ी।

उस संध्या, जब शिष्य बन्द दरवाजों के पीछे मिल रहे थे, क्योंकि वे यहूदियों से डरते थे, यीशु अचानक उनके बीच आ उपस्थित हुआ। उसने कहा, "तुम्हें शांति मिले!" और उसने उन्हें अपने घायल हाथ और पंजर दिखाए। यीशु ने शिष्यों से कहा, "जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं।" तब उसने उन्हें उन सब पर जो उस पर विश्वास करनेवाले थे उसके नाम में क्षमा घोषित करने का अधिकार दिया।

परन्तु थोमा, उन बारह में से एक, उस समय वहां नहीं था जब यीशु प्रगट हुआ। जब

शिष्यों ने उसे प्रभु के दर्शन के विषय में बताया, थोमा ने इस बात पर जोर दिया कि विश्वास करने के पहले वह प्रभु के हाथ और पसली के घावों को देखना और छूना चाहेगा। यीशु ने, जब आठ दिन के बाद शिष्यों को पुनः दर्शन दिए, उसकी इस विनती को स्वीकार किया। तब थोमा ने पुकारा, "हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!"

पढ़िए यूहन्ना 20:1-9

1. **क.** रविवार की इस सुबह की घटनाओं का, और उससे संबंधित सारी बातों का, जो आपको विशेष जान पड़ती हैं, वर्णन कीजिए।

   टिप्पणी: यहूदी समयानुसार, दिन का कोई भी हिस्सा एक दिन बनता है। यीशु शुक्रवार की सुबह क्रूस पर चढ़ाया गया, शुक्रवार की दोपहर कब्र में रखा गया, और रविवार की सुबह मृत्यु में से जी उठा। यीशु ने भविष्यवाणी की थी कि वह तीसरे दिन जी उठेगा (लूका 18:33; मरकुस 8:31; मत्ती 27:63)।

   ख. खाली शववस्त्र देखने पर यूहन्ना ने क्या किया (20:8)?

   टिप्पणी: *देखा और विश्वास किया* (20:8)। यूहन्ना के सुसमाचार में, "विश्वास करना" शब्द का जो उपयोग किया गया है उसके अनुसार माना जाता है कि वह पुनरुत्थान में विश्वास करने की ओर संकेत कर रहा था (तुलना कीजिए: 20:29)।

   ग. इस बात की भारी संभावना होने पर भी कि उन्होंने यीशु के जी उठने पर विश्वास किया था, तब भी उस समय तक वे क्या समझ नहीं पाए थे (20:9)?

   टिप्पणी: पुनरुत्थान से संबंधित भविष्यवाणियों में भजन संहिता 16:10; 110:1, 4; यशायाह 53:11; होशे 6:2 सम्मिलित हैं।

पढ़िए यूहन्ना 20:10-18

2. इस समय मरियम की मनःस्थिति कैसी रही होगी (20:10-14)?

टिप्पणी: टिप्पणी 1, *मगदाला की मरियम,* पृष्ठ 198

3. उसका विस्मयकारी अनुभव क्या था (20:15-16)?

4. यीशु ने उसे क्या करने का आदेश दिया (20:17)?

संदर्भ: टिप्पणी 2, *मैं अब तक अपने पिता के पास नहीं लौटा हूं,* पृष्ठ 198

पढिए यूहन्ना 20:19-23

5. उसी दिन, कुछ समय बाद, यीशु की शिष्यों के साथ हुई भेंट का वर्णन कीजिए। उनके बीच का वातावरण कैसे बदल गया था (20:19-20)?

6. यीशु ने शिष्यों को क्या करने का आदेश दिया और वह काम करने के लिए उसने उन्हें कैसे तैयार किया (20:21-23)?

संदर्भ: टिप्पणी 3, *उन पर फूंका,* और टिप्पणी 4, *यदि तुम क्षमा करो,* पृष्ठ 198

पढ़िए यूहन्ना 20:24-31

7. क. यीशु ने थोमा की प्रमाण की आवश्यकता को कैसे पूरा किया (20:24-27)?

ख. थोमा के उत्तर ने (20:28) उन दूसरों के प्रत्युत्तर में क्या जोड़ दिया जिन्होंने अपने पुन:रुत्थित प्रभु को देखा था (20:16, 20)?

8. यीशु ने थोमा के विश्वास को उत्तर देते हुए किस आशीष की घोषणा की (20:29)?

संदर्भः टिप्पणी 5, *इसलिए कि तुम ने मुझे देखा है,* पृष्ठ 199

9. यूहन्ना ने कहा कि अपना सुसमाचार लिखने में उसने उन्होंने देखे हुए अनेक आश्चर्यकारक चिन्हों में से कुछ ही चुने थे। इस प्रेरित का उन आश्चर्यकर्मों को चुनने का उद्देश्य क्या था जो उसने अपने सुसमाचार में प्रस्तुत किए हैं (20:31, इसे यूहन्ना की पुस्तक का मुख्य वचन माना जाता है)?

संदर्भः टिप्पणी 6, *पुनरुत्थान के बाद दिए गए यीशु के दर्शन,* पृष्ठ 199, और टिप्पणी 1, *यीशु के आश्चर्यकर्म,* पृष्ठ 76

बुनियाद पर बनाना

निश्चित आश्वासन

चालीस दिनों के समय में पुनरुत्थान की सच्चाई निश्चित हो गई थी, यीशु ने देह के रूप में, 500 से भी अधिक लोगों[7] को दर्शन दिए थे -- यह संख्या इतनी बड़ी है कि संदेहवादियों के दृष्टिभ्रम (या मतिभ्रम) के सिद्धान्त का समर्थन किया नहीं जा सकता। इसके बाद, यीशु स्वर्ग पर चढ़ गया, (प्रेरितों के काम 1:9), परन्तु कुछ समय बाद स्तिफनुस को (प्रेरितों के काम 7:55-60), उसके बाद पौलुस को (प्रेरितों के काम 9:3-8; 18:9-10; 22:17-21; 23:11), और फिर से प्रेरित यूहन्ना को दिखाई दिया (प्रकाशितवाक्य 1:10-19)।

शिष्यों ने, अपने पुनरुत्थित प्रभु से मिलने पर, जिन अद्‌भुत अनुभूतियों का अनुभव किया होगा उसकी कल्पना भी करना कठिन है। उनके लिए तो इतना ही देखना पर्याप्त था कि यीशु ने पानी का दाखरस बनाया, झील पर आंधी को शान्त किया, बीमारों, अन्धों और लंगड़ो को चंगा किया, वस्तुतः कुछ नहीं से भी हजारों को भोजन खिलाया, दुष्टात्माओं को निकाला, पानी पर चला और मृतकों को जिलाया। परन्तु अब, उसकी अपने ही पुनरुत्थान की भविष्यवाणी पूरी हुई थी; वह उनके सामने देह रूप में खड़ा था। अचानक यह स्पष्ट हो गया कि यीशु उन सब लोगों से *बहुत अधिक* सामर्थी था जिन्होंने उसकी मृत्यु की आज्ञा दी थी। उसने क्रूस की घटना को *घटने दिया* था। इसका अर्थ क्या था? पुनरुत्थित प्रभु को देखना उनकी आत्मिक यात्रा का आरंभ मात्र था, जैसे कि हमारे लिए भी है।

जबकि उनकी समझ समय के साथ-साथ खुलती जानेवाली थी, यीशु मसीह का

पुनरुत्थान तुरन्त ही आरंभिक विश्वासियों के विश्वास की नींव बन गया। पौलुस ने कुरिन्थुस के विश्वासियों को लिखा, "यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमारा प्रचार करना भी व्यर्थ है, और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है" (1 कुरिन्थियों 15:14)। क्यों? क्योंकि बाइबल-आधारित मसीहत, *जीवित* प्रभु यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत संबंध से ही जन्म लेती है और संभली रहती है।

इस प्रकार, आरंभिक विश्वासियों ने, अपनी परमेश्वर के अनुग्रह में की गई यात्रा, अपनी दृष्टि अपने पुनरुत्थित उद्धारकर्त्ता पर दृढ़ रखते हुए की थी। जब वे संसार के सामने यीशु को परमेश्वर की क्षमा और अनंत तृप्ति प्राप्त करने का मार्ग बताते थे, तब उनके लिए पुनरुत्थान ही सबकुछ अर्थ रखता था।

आज भी पुनरुत्थान हमारे विश्वास की नींव बना हुआ है। जो तृप्ति मसीह हमें दे सकता है वह इसी लिए संभव हो सकी है क्योंकि वह जीवित उद्धारकर्त्ता और प्रभु है। जबकि हम अपने इस अध्ययन की समाप्ति के निकट हैं, हम उस निश्चित आश्वासन पर विचार करेंगे जो इतिहास की यह सब से श्रेष्ठ सच्चाई हमारे विश्वास और तृप्ति के लिए उपलब्ध कराती है।

1. **क.** यीशु मसीह के पुनरुत्थान ने उसके ईश्वरत्व को प्रमाणित किया, और उसकी सारी प्रतिज्ञाओं की पुष्टि की। उन दावों में से कुछ बताइए जो यीशु ने तृप्ति के संबंध में किए हैं? (*लघु कोष्ठक में दिए गए हवाले ऐच्छिक* हैं।)
   यूहन्ना 10:10ख

   यूहन्ना 4:14 (6:35; 7:38; 12:46) *आत्मिक भूख-प्यास से संबंधित:*

   यूहन्ना 14:16-17 (16:13)

   यूहन्ना 16:33 (14:27)

   ख. मत्ती 28:20ख इसमें क्या जोड़ता है?

2. **क.** पुनरुत्थान ने प्रमाणित कर दिया कि परमेश्वर के राज्य में यीशु मसीह राज्य करता है। इस राज्य में क्या सम्मिलित है?
   यूहन्ना 1:3-4

कुलुस्सियों 1:15-17

ख. निम्नलिखित वचन भविष्य के लिए क्या प्रतिज्ञा करते हैं?
फिलिप्पियों 2:10-11

ग. *ऐच्छिक:* प्रेरितों के काम 17:31 तथा यूहन्ना 5:22 में कौनसी आत्मिक सच्चाइयां बताई गई हैं? रोमियों 4:25 और रोमियों 3:23-24 के अनुसार यीशु का पुनरुत्थान उन्हें, अर्थात् जिन्होंने उसे ग्रहण किया है, क्या आश्वासन देता है?

3. क. पुनरुत्थान ने यीशु की मृत्यु पर की सामर्थ्य को प्रदर्शित किया, और उसके द्वारा हमें उसने प्रतिज्ञा किए अनंत जीवन का सम्पूर्ण आश्वासन दिया। यीशु ने अनंत जीवन के विषय में कौनसी प्रतिज्ञाएं कीं?
यूहन्ना 5:24

यूहन्ना 11:25-26

यूहन्ना 14:2-3

ख. 2 तीमुथियुस 1:10 का कौनसा वाक्यांश स्पष्ट रूप से उस बात को बताता है जिसे मसीह ने विश्वासी के लिए क्रूस पर पूरा किया है?

4. क. हमारी पुनरुत्थित देह कैसी होगी यह समझने में यूहन्ना 20:19-20 और लूका 24:39 में यीशु की पुनरुत्थित देह के विषय में दिए गए कौनसे कथन हमारी सहायता करते हैं?

ख. हमारे लिए स्वर्ग में प्रतिज्ञा की गयी देह कैसी होगी, इसके विषय में निम्नलिखित वचन हमें क्या बताते हैं?
1 कुरिन्थियों 15:42-44

फिलिप्पियों 3:21

प्रकाशितवाक्य 21:4

5. यीशु मसीह का पुनरुत्थान हमारे लिए आत्मिक मृत्यु (परमेश्वर से दूर रहने का अस्तित्व) से आत्मिक जीवन (परमेश्वर की प्रेमपूर्ण उपस्थिति में रहनेवाला अस्तित्व) में "जिलाया जाना" संभव करता है। निम्नलिखित वचन इस सच्चाई का वर्णन कैसे करते हैं?
रोमियों 6:3-4

टिप्पणी: *बपतिस्मा* का अर्थ *की समानता में जुट जाना* है।

रोमियों 8:11 (गलातियों 2:20)

सारांश

6. बाइबल-आधारित मसीहत क्यों यीशु मसीह के पुनरुत्थान पर निर्भर है?

संदर्भ: पृष्ठ 194, **बुनियाद पर बनाना** का 3 रा परिच्छेद

7. आपकी *तृप्ति की तलाश* के प्रकाश में यीशु मसीह का पुनरुत्थान आपके लिए क्या अर्थ रखता है?

8. यीशु की प्रतिज्ञाओं में से, जिनकी पुष्टि उसके पुनरुत्थान से हुई है, आपके लिए सर्वाधिक अर्थपूर्ण कौनसी हैं?

9. पुनरुत्थान कब आपके लिए इतिहास की एक सच्चाई के रूप में वास्तविक ठहरा? पुनरुत्थान की निश्चितता आपकी मसीह के लिए दी जानेवाली गवाही के लिए क्यों अनिवार्य है?

संदर्भ: *नो व्हाय यू बिलीव* पुस्तिका, और टिप्पणी 7, *यीशु वास्तव में मृत्यु में से जी उठा इसके छः प्रमाण* पृष्ठ 201

पाठ २२ टिप्पणियाँ

1. *मगदाला की मरियम*, यीशु को उसके पुनरुत्थान के बाद देखनेवाली पहली व्यक्ति थी। यीशु ने, इससे पहले, मरियम में से सात दुष्टात्माओं को निकाला था (लूका 8:2-3)। वह उन स्त्रियों में से एक थी जो यीशु और शिष्यों की, उनकी गलील में की जानेवाली सेवकाई के समय, सेवा-टहल करती थीं, अपने धन से उनकी आवश्यकताओं को पूरा करती थीं (तुलना कीजिए: मरकुस 15:41)। मत्ती और मरकुस दोनों इस बात पर सहमत हैं कि मरियम पुनरुत्थान की गवाह थी, और लूका भी यही सूचित करता है (तुलना कीजिए: लूका 23:49, 55; 24:10)। यूहन्ना का सुसमाचार, मगदाला की मरियम को बैतनिय्याह की मरियम समझे जाने की उलझन को दूर करता है, जबकि वे दोनों भी यीशु की भक्ति में अत्यधिक समर्पित थीं।

2. *मैं अब तक अपने पिता के पास नहीं लौटा हूं* (20:17)। "इससे यह अर्थ निकलता लगता है कि स्वर्गारोहण अभी कुछ समय दूर था। मरियम को यीशु को देखने के और भी सुअवसर मिलनेवाले थे, अत: उसे यीशु को पकड़े रहने की आवश्यकता नहीं थी। दूसरी ओर, यीशु मरियम को स्मरण दिला रहा होगा कि उसके क्रूसीकरण के बाद से वह उसे अपने साथ पवित्र आत्मा के माध्यम के बिना नहीं पा सकती थी (देखिए 16:5-16)।" द *एनआइव्ही स्टडी बाइबल,* पृष्ठ 1636.

3. *उन पर फूंका* (20:22)। यह क्रिया उस जीवन की ओर संकेत करती है जो परमेश्वर ने सृष्टि की रचना के समय मनुष्य में फूंका था (उत्पत्ति 2:7)। यहां प्रभु यीशु ने शिष्यों पर इसलिए फूंका ताकि वे उस पवित्र आत्मा के द्वारा आत्मिक जीवन को प्राप्त करें जो 50 दिन पश्चात्, यीशु की महिमा में पहुँचने के बाद, पेन्तेकुस्त के दिन उनमें वास करनेवाला था (यूहन्ना 7:39; प्रेरितों के काम 2)।

4. *यदि तुम क्षमा करोगे . . .* (20:23)। यीशु शिष्यों को पाप क्षमा करने का वह अधिकार नहीं दे रहा था जो मात्र परमेश्वर के पास है (मरकुस 2:7)। जबकि कुछ टीकाकार मानते हैं कि यीशु कलीसियाई या प्रेरितीय अधिकार की ओर संकेत कर रहा था, अन्य मानते हैं कि वह पवित्र आत्मा द्वारा दी जानेवाली दूरदृष्टि के विषय में कह रह था। कुछ अन्य लोग विश्वास करते हैं कि वह सारे विश्वासियों को यह प्रचार करने का अधिकार दे रहा था कि परमेश्वर उन सबके पापों को क्षमा करेगा जो यीशु मसीह में विश्वास करेंगे,

और इसका अगला परिणाम यह होगा कि जो उसमें विश्वास करने से इनकार करेंगे उनके पाप क्षमा नहीं करेगा।

5. *इसलिए कि तुम ने मुझे देखा है* (20:29)। "कुछ लोग सोचते हैं कि यदि वे कोई विशिष्ठ चिन्ह या आश्चर्यकर्म देख सकेंगे तो ही यीशु में विश्वास करेंगे। परन्तु यीशु कहता है कि यदि हम बिना देखे विश्वास कर सकते हैं, तो हम धन्य हैं। हमें जो आवश्यक है वह सम्पूर्ण प्रमाण हम सब के पास बाइबल के शब्दों में और विश्वासियों की गवाही में उपलब्ध है। कोई शारीरिक दर्शन यीशु को हमारे लिए जो अब वह है उससे कुछ अधिक वास्तविक नहीं बना देगा।" *लाइफ एप्लिकेशन बाइबल*, पृष्ठ 1928

6. *पुनरुत्थान के बाद दिए गए यीशु के दर्शन,* (वाल्वूर्ड एण्ड झक, द *बाइबल नॉलेज कमेन्टरी ऑन द न्यू टेस्टामेन्ट*, पृष्ठ 91)।

चालिस दिन -- पुनरुत्थान से स्वर्गारोहण तक

रविवार की सुबह

1. एक स्वर्गदूत ने, सूर्योदय से पहले यीशु की कब्र से पत्थर हटाया (मत्ती 28:2-4)।
2. जो स्त्रियां यीशु के पीछे-पीछे चलती थीं वे यीशु की कब्र पर आयीं, और उन्होंने उसे वहां नहीं पाया (मत्ती 28:1; मरकुस 16:1-4; लूका 24:1-3; यूहन्ना 20:1)।
3. मरियम मगदलीनी, पतरस और यूहन्ना को समाचार देने गई (यूहन्ना 20:1-2)।
4. अन्य स्त्रियों ने, जो कब्र पर रुकी रहीं, दो स्वर्गदूतों को देखा, जिन्होंने उन्हें पुनरुत्थान के विषय में बताया (मत्ती 28:5-7; मरकुस 16:5-7; लूका 24:4-8)।
5. पतरस और यूहन्ना यीशु की कब्र पर आए (लूका 24:12; यूहन्ना 20:3-10)।
6. मरियम मगदलीनी कब्र पर लौटी, और यीशु ने उसे बाग में दर्शन दिए जब वह अकेली थी (मरकुस 16:9-11; यूहन्ना 20:11-18): *उसका प्रथम दर्शन।*

7. यीशु अन्य स्त्रियों को दिखाई दिया (मरियम, याकूब की माता, सलोमी और योअन्ना) (मत्ती 28:8-10): *उसका द्वितिय दर्शन।*

8. यीशु की कब्र की रखवाली करनेवाले पहरेदारों ने धार्मिक अगुवों को सूचना दी कि स्वर्गदूत ने पत्थर को कैसे हटाया। तब उन्हें घूस दी गई (मत्ती 28:11-25)।

9. यीशु पतरस को दिखाई दिया (1 कुरिन्थियों 15:5): *उसका तीसरा दर्शन।*

रविवार की दोपहर

10. यीशु इम्माऊस के मार्ग पर दो मनुष्यों को दिखाई दिया (मरकुस 16:12-13; लूका 24:13-32): *उसका चौथा दर्शन।*

रविवार की संध्या

11. इम्माऊस के मार्ग से लौटे दो शिष्यों ने औरों को बताया कि उन्होंने यीशु को देखा (लूका 24:33-35)

12. यीशु 10 शिष्यों को, जिनमें थोमा उपस्थित नहीं था, ऊपरी कक्ष में दिखाई दिया (लूका 24:36-43; यूहन्ना 20:19-25): *उसका पांचवां दर्शन।*

अगला रविवार

13. यीशु 11 प्रेरितों को, जिनमें थोमा भी उपस्थित था, दिखाई दिया और थोमा ने विश्वास किया (यूहन्ना 20:26-28): *उसका छठवां दर्शन।*

अगले 32 दिन

14. यीशु गलील की झील के पास सात शिष्यों को दिखाई दिया और उसने मछलियों के आश्चर्यकर्म को किया (यूहन्ना 21:1-14): *उसका सातवां दर्शन।*

15. यीशु गलील में पहाड़ पर 500 लोगों को दिखाई दिया (इनमें 11 शिष्य भी थे), (मत्ती 28:16-20; मरकुस 16:15-18; 1 कुरिन्थियों 15:6): *उसका आठवां दर्शन।*

16. यीशु ने अपने भाई याकूब को दर्शन दिया (1 कुरिन्थियों 15:7): *उसका नौवां दर्शन।*

17. यीशु ने यरूशलेम में अपने शिष्यों को पुनः दर्शन दिया (लूका 24:44-49; प्रेरितों के काम 1:3-8): *उसका दसवां दर्शन।*

18. यीशु, जैतून पहाड़ से, शिष्यों के देखते स्वर्ग पर चढ़ गया (मरकुस 16:19-20; लूका 24:50-53; प्रेरितों के काम 1:9-12)।

7. यीशु वास्तव में मृत्यु में से जी उठा इसके छः प्रमाण

1. पुनरुत्थान की भविष्यवाणी स्वयं परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के द्वारा की गई थी।
2. पुनरुत्थान ही उसकी खाली कब्र का एकमात्र तर्कपूर्ण स्पष्टीकरण है।
3. पुनरुत्थान ही यीशु मसीह ने अपने शिष्यों को दिए दर्शनों का एकमात्र तर्कपूर्ण स्पष्टीकरण है।
4. पुनरुत्थान ही मसीही कलीसिया के आरंभ का एकमात्र तर्कपूर्ण स्पष्टीकरण है।
5. पुनरुत्थान ही शिष्यों में आए परिवर्तन का एकमात्र तर्कपूर्ण स्पष्टीकरण है।
6. प्रेरित पौलुस की गवाही और उसके जीवन के परिवर्तन को मात्र पुनरुत्थान के द्वारा ही तर्कपूर्ण रीति से स्पष्ट किया जा सकता है। (*मसीही परिपक्वता की ओर दस बुनियादी कदम, शिक्षक पुस्तिका,* हियर्स् लाइफ पब्लिशर्स, पृष्ठ 58-64)

--0--

पाठ २३

"मेरी भेड़ों को चरा"

उपसंहार

यूहन्ना 21

यूहन्ना, अपनी पुस्तक की समाप्ति में, यीशु के द्वारा अपने शिष्यों के समूह को दिए गए तीसरे दर्शन का वर्णन करता है। यह एक दिन प्रात:काल की बात है जब गलील की झील पर, शिष्यों में से सात जन, रात भर जाल डालने के बाद भी कुछ न पकड़ पाए थे। यीशु ने, जिसे वे पहले पहचान नहीं पाए थे, किनारे पर खड़े होकर शिष्यों को पुकार कर कहा कि वे मछली पाने के लिए नाव की दाहिनी ओर अपने जाल डालें। जब शिष्यों ने उसके निर्देश का पालन किया, उनका जाल इतनी अधिक मछलियों से भर गया कि वे उसे नाव में खींच भी न सके। यूहन्ना ने पतरस की ओर मुड़कर कहा, "यह तो प्रभु है!" पतरस तुरन्त नाव से कुदा और तैरकर किनारे पर पहुँचा। अन्य शिष्य नाव में, आश्चर्यजनक रीति से न फटे हुए जाल में 153 बड़ी मछलियों को खींचते हुए, पीछे-पीछे आए। जब वे सब किनारे पर पहुँचे तब यीशु ने कोयले की आग जलाकर उनके लिए भोजन तैयार कर रखा था।

जब उन्होंने भोजन कर लिया तब यीशु ने पतरस के साथ महत्त्वपूर्ण वार्तालाप आरंभ कर दिया। जब वे दोनों एकसाथ चल रहे थे, यीशु ने पतरस से तीन बार पूछा, "क्या तू मुझसे प्रेम रखता है?" पतरस ने बार-बार उत्तर दिया, "हां प्रभु, तू तो जानता हैं कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूं।" हर बार यीशु ने कहा, "मेरी भेड़ों को चरा।" उसके बाद, यीशु ने पतरस को बताया कि उसकी सेवा के जीवन का अंत शहीद होकर परमेश्वर की महिमा करने से होगा। फिर भी, यीशु की इस विश्वासयोग्य शिष्य से आज्ञा थी, "मेरे पीछे हो ले।" तब पतरस ने, उनके पीछे आ रहे यूहन्ना की ओर मुड़कर उसे देखा और कहा, "हे प्रभु इसका क्या हाल होगा?" यीशु ने यूं उत्तर दिया कि वह बात पतरस की चिंता का विषय नहीं थी। "तू मेरे पीछे हो ले।"

यूहन्ना ने अपने सुसमाचार को इस प्रतिज्ञा के साथ समाप्त किया कि उसका वृत्तान्त पूर्ण इमानदारी के साथ लिखा गया था।

उस वयोवृद्ध प्रेरित ने लिखा, "और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए; यदि वे एक-एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूं, कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे जगत में भी न समातीं।"

पढ़िए यूहन्ना 21:1-14

1. **क.** इस दृश्य का वर्णन समय, स्थान, परिस्थिति, उपस्थित लोग और कार्य को ध्यान में रखते हुए कीजिए (21:1-4)।

   ख. यीशु की इस भेंट के दौरान कौनसी अद्‌भुत घटनाएं घटीं (21:5-6, 11-14)?

2. यूहन्ना के शब्द और पतरस की प्रतिक्रिया, उन दोनों के विषय में क्या दर्शाते हैं (तुलना कीजिए: 21:7)?

3. **क.** यीशु के द्वारा कौनसे चार वक्तव्य कहे गए (21:5, 6, 10, 12)?

   ख. यहां यीशु की कौनसी बात आपको प्रभावित करती है?

पढ़िए यूहन्ना 21:15-25

4. यीशु पतरस से, भोजन के बाद के उनके वार्तालाप में, कौनसे बार-बार पूछे जानेवाले प्रश्न पर गंभीरता से विचार करवाना चाह रहा था (21:15-17)?

   टिप्पणी: *इनसे बढ़कर* (21:15) का संभावित अर्थ यूं हो सकता है: "क्या तू मुझसे उससे बढ़कर प्रेम करता है जितना प्रेम ये लोग मुझसे करते हैं?" क्योंकि पतरस ने औरों से अधिक निष्ठा का दावा किया था (तुलना कीजिए: 13:37; मत्ती 26:33; मरकुस 14:29)।

5. पतरस ने कैसे उत्तर दिया, और उसके उत्तरों ने क्या प्रदर्शित किया?

6. यीशु ने पतरस से, उसे यीशु से जो प्रेम था उसके कारण, क्या करने कहा (21:15-17)?

7. **क.** यीशु ने पतरस को, उसके लिए यीशु के पीछे चलने का अर्थ क्या होगा इस विषय में क्या चेतावनी दी (चेतावनी 21:18-19क)?

ख. तौभी, प्रभु की पतरस को अंतिम आज्ञा क्या थी (21:19ख)?

8. यीशु ने पतरस को अपने जीवन की तुलना यूहन्ना के जीवन से करने से कैसे निरुत्साहित किया (21:20-22)?

9. यूहन्ना ने किस अफ़वाह का खण्डन किया (21:20-23)?

10. यूहन्ना ने अपने पाठकों को किस बात का विश्वास दिलाया (21:24)?

11. **क.** अंतिम सिंहावलोकन में, यूहन्ना ने यीशु के जीवन के विषय में क्या कहा (21:25)?

ख. जो उसका सुसमाचार पढ़ेंगे उनके लिए यूहन्ना क्या आशा करता है (20:31)?

बुनियाद पर बनाना
निरंतर की तृप्ति

यीशु के द्वारा गलील की झील के पास दिए गए दर्शन का यूहन्ना के द्वारा किया गया वृत्तान्त इस बात की ओर ध्यान आकर्षित करता है कि यीशु मसीह अपने पुनरुत्थान के बाद अपने शिष्यों के जीवन में कैसे अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति समर्पित और क्रियाशील रहा। उस दिन के उसके काम हम पर परमेश्वर के स्वभाव के अनुग्रहकारी और प्रेमी पहलुओं की, जो उसके पुत्र में साकार हुए थे, छाप छोड़ते हैं। पकड़ी गई मछलियों की आश्चर्यजनक बड़ी संख्या के द्वारा यीशु ने, मानवीय निराशा और अपर्याप्तता के सामने, अपने बहुतायत के प्रबन्ध को प्रदर्शित किया। जिस प्रकार उसने अपने शिष्यों के लिए भोजन पकाया और परोसा, उसके द्वारा यीशु ने पूर्ण-रूप-की नम्रता और दूसरों की आवश्यकताओं में उनकी सेवा करने से मिलनेवाले आनंद के उस प्रकार को प्रदर्शित किया जो परमेश्वर के हृदय का विशेष गुण है। यीशु ने पतरस की भक्ति को मात्र अपने ही लिए न रखकर उसे "मेरी भेड़ों को चरा" में प्रवाहित किया। ऐसा चुनाव करते हुए उसने हमें दिखाया कि परमेश्वर यह इच्छा रखता है कि हम अपने प्रेम को, जो हम उससे करते हैं, औरों की आवश्यकताओं की देखभाल करनेवाले कामों में बदल दें।

क्रूस, यीशु मसीह के हम से किए जानेवाले प्रेम और सेवा का अंत नहीं था। उसने प्रतिज्ञा की, "इसलिए कि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे" (14:19)। अत: यीशु, जैसे उस समय गलील की झील के किनारे था, आज भी जीवित है, और उससे प्रेम करनेवाले हर एक की अगुवाई करने, पूर्ति करने और देखभाल करने के लिए तैयार है। जब हम उसके पीछे चलने का चुनाव करते हैं, वह प्रतिज्ञा करता है कि हमारी निरंतर की तृप्ति का ध्यान रखेगा। हम अपने अध्ययन की समाप्ति इन महत्त्वपूर्ण सच्चाइयों को देखते हुए करेंगे।

1. **क.** यूहन्ना 21 में पकड़ी गई मछलियों की आश्चर्यजनक बड़ी संख्या, कठिन एवं असंभव परिस्थितियों में यीशु मसीह के विषय में क्या प्रदर्शित करती हैं?

   ख. हमारी मानवीय सीमा और आवश्यकता के समक्ष हमें क्या करने का निर्देश दिया गया है?
   मत्ती 6:25, 33

1 पतरस 5:7

ग. 2 कुरिन्थियों 9:8 में प्रभु की प्रतिज्ञा क्या है?

2. क. हम यीशु के अपने शिष्यों के लिए भोजन पकाने और परोसने में परमेश्वर के किस स्वभाव को देख सकते हैं?

ख. फिलिप्पियों 2:6-8, यीशु का वर्णन एक सेवक के रूप में कैसे करता है?

3. प्रभु की देखभाल के कौनसे पहलुओं का उल्लेख निम्नलिखित वचनों में किया गया है?
भजन संहिता 121:3, 7-8

यशायाह 41:10

रोमियो 8:31ख-32

फिलिप्पियों 4:19

4. क. यीशु ने, परमेश्वर की, लोगों की आवश्यकता की सेवा और चिंता करने की इच्छा को प्रगट किया। वह हमें, हमारे उसके प्रति प्रेम के प्रत्युत्तर में, क्या करने कहता है?
यूहन्ना 21:15ख, 16ख

ख. निम्नलिखित वचन, दूसरों की चिंता करने के किन पहलुओं को बताते हैं?
गलातियों 6:2

1 तीमुथियुस 6:18

1 पतरस 4:8-11

5. **क.** जब हम मसीह के साथ मिलकर औरों की चिंता करते हैं, हमारा क्या विशेषाधिकार होता है?
2 कुरिन्थियों 5:18-20

ख. यदि हम यीशु के साथ आवश्यकताग्रस्त संसार की सेवा करते हैं, तो यीशु हमसे क्या प्रतिज्ञा करता है?
मत्ती 28:18, 20ख

6. मसीह के द्वारा परमेश्वर के प्रति विश्वास और आज्ञाकारिता के लिए स्वाभाविक प्रोत्साहन क्या है?
1 यूहन्ना 4:19 (रोमियों 5:8)

7. **क.** 85 वर्ष के प्रेरित यूहन्ना के अनुसार, जो 60 वर्षों से मसीह के पीछे चलता आया था, हम मसीह के प्रति समर्पण से क्या अपेक्षा कर सकते हैं?
यूहन्ना 1:16

ख. यीशु ने क्या प्रतिज्ञा की है?
यूहन्ना 10:10ख

सारांश

8. क. यीशु आपके लिए निरंतर क्या करना चाहता है, इसके विषय में आपने क्या सीखा?

ख. यूहन्ना 21 में पकड़ी गई मछलियों की आश्चर्यजनक बड़ी संख्या के द्वारा आपको क्या स्मरण दिलाया गया है? क्या यह आज आपके जीवन के किसी क्षेत्र में लागू होता है?

9. क. आपके प्रभु के साथ की चाल के कौनसे सामान्य पहलुओं की चर्चा यीशु ने पतरस के साथ यूहन्ना 21:16, 19ख में की है?

ख. जो तृप्ति मात्र मसीह दे सकता है, उसे अनुभव करने में ऐसे निर्णय क्या भूमिका निभाते हैं?

10. क. जब आप अपने यूहन्ना के अध्ययन पर विचार करते हैं, आपने यीशु मसीह और परमेश्वर के स्वभाव के विषय में क्या सीखा है?

ख. आपने तृप्ति के विषय में क्या सीखा?

ग. आप किस बात के लिए परमेश्वर के धन्यवादी हैं?

अंतिम टिप्पणी:

कदाचित् आपके *तृप्ति की तलाश* के इस अध्ययन से, आप पहली बार 'मसीह कौन है' की सही समझ प्राप्त कर पाए हैं, और इसकी भी कि वह न मात्र यह चाहता है कि आप जान लें कि वह *कौन* है, परन्तु यह भी कि आप उससे व्यक्तिगत संबंध

भी बना लें। प्रकाशितवाक्य 3:20 में, यीशु कहता है, "देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ।"

यदि आप, अभी इसी समय, अपने जीवन का द्वार यीशु मसीह के लिए खोलना पसंद करेंगे, तो निम्नलिखित प्रार्थना का सुझाव दिया जा रहा है:

"प्रभु यीशु, मुझे तेरी आवश्यकता है। मेरे पापों के लिए क्रूस पर अपना प्राण देने के लिए धन्यवाद। मैं तुझे निमंत्रण देता हूं कि मेरे जीवन में आ, और मुझे वैसा बना जैसा बनने के लिए तूने मेरी सृष्टि की है। आमीन।।"

यदि आप इस प्रार्थना को सच्चे मन से करते हैं, तो यीशु मसीह आपके जीवन में आएगा, जैसी प्रतिज्ञा उसने प्रकाशितवाक्य 3:20 में की है, और वह फिर कभी आपको नहीं छोड़ेगा (इब्रानियों 13:5ख)।

--0--

प्रमुख टिप्पणियों की सूची

पाठ	पृष्ठ	टिप्पणी और विषय
१	10	1. सुसमाचार
	11	2. यूहन्ना की लेखक के रूप में पहचान
	12	4. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला
२	21	1. मसीह
	21	2. परमेश्वर का मेमना (1:29,36)
	21	3. पवित्र आत्मा से बपतिस्मा (1:33)
	22	4. मनुष्य का पुत्र
३	29	1. फसह का पर्व, (फसह का भोज भी देखिए, पृष्ठ 141)
४	36	1. फरीसी
	37	2. पवित्र आत्मा
५	45	1. सामरी (टिप्पणी 3 भी, पृष्ठ 96)
६	53	2. "गुरुजनों की परम्परा"
	54	5. पवित्रशास्त्र की, मसीह-संबंधित प्रमुख भविष्यवाणियाँ जो यीशु में पूरी हुईं
८	68	5. शैतान, दुष्टात्माएं
९	76	1. यीशु के आश्चर्यकर्म
१०	86	1. यीशु के "मैं हूं" कथन
११	94	1. यहूदी (8:48)
	95	5. पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूं! (8:58)
१२	103	1. किसने पाप किया . . . ? (9:2)
	104	2. वह सब्त के दिन का पालन नहीं करता (9:16)
१४	120	1 . . . . जीवन मैं हूं (11:25)
	120	2. सन्हेद्रिन
	122	6. विश्वासियों के लिए मृत्यु
१६	140	1. फसह का भोज (देखिए: फसह का पर्व, पृष्ठ 29)
१७	148	1. मैं ...फिर आकर (14:3), दूसरा आगमन
	149	2. बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता (14:6)
	149	4. जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे
२२	199	6. पुनरुत्थान के बाद दिए गए यीशु के दर्शन,
	201	7. यीशु वास्तव में मृत्यु में से जी उठा इसके छ: प्रमाण

Bibliography

William Barclay, *The Gospel of John*, Volumes 1 & 2, The Westminster Press, Philadelphia, Pennsylvania, copyright 1975.

F. F. Bruce, *The Gospel of John*, William B. Eerdmans Publishing Company, Grand Rapids, Michigan, copyright 1983.

A. Eerdmans, *The Life and Times of Jesus the Messiah*, Hendrickson Publishers, Peabody, Massachusetts, Preface to First Edition, 1883.

Irving Jensen, *John*, Here's Life Publishers, San Bernardino, California, copyright 1983.

C. S. Lewis, *Mere Christianity*, MacMillian Publishing Company, New York, New York, copyright 1952.

Life Application Bible, New International Version, Tyndale House Publishers, Inc., Wheaton, Illionois, copyright 1991.

The NIV Study Bible, Zondervan Corporation, Grand Rapids, Michigan, copyright 1985.

Eugene H. Petersen, *The Message*, NavPress Publishers Group, Colorado Springs, Colorado, copyright 1993.

Teacher's Manual for the Ten Basic Steps Toward Christian Maturity, Here's Life Publishers, San Bernardino, California, copyright 1965.

W. E. Vine, *Vine's Expository Dictionary of Old and New Testament Words*, Fleming H. Revell, Grand Rapids, Michigan, copyright 1981.

John F. Walvoord, Roy B. Zuck, *The Bible Knowledge Commentary*, New Testament, Scripture Press Publications, Inc., copyright 1983.

Zondervan Pictorial bible Dictionary, Merrill C. Tenney, Zondervan Publishing House, Grand Rapids, Michigan, copyright 1967.